कथागुच्छ

॥ मूल रूसी से अनुवादक ॥

श्री रवि बकाया

॥ सम्पादक ॥

डा० महादेव साहा

॥ मुद्रक ॥

श्री श्यामल दे

हिन्द पेपर प्रिन्टर्स

७९/६ लोअर सरकुलर रोड, कलकत्ता—१४

॥ प्रकाशक ॥

ईस्टर्न ट्रेडिंग कम्पनी की ओर से

श्री देवीप्रसाद मुखोपाध्याय

६४ए धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता—१३

साईज़—१०×६.५ इंच, पृष्ठ १२४, पाईका टाइप। २१०० प्रतियाँ।
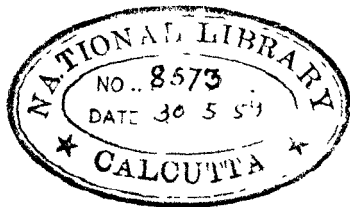
मूल्य—तीन रुपये।

भूमिका

पुश्किन का जन्म ६ जून १७९९ को मास्को के एक अभिजात साहित्यरसिक परिवार में हुआ था। उनके पिता सेर्गेइ लवविच फ्रांसीसी भाषा में कविता करते थे। पुश्किन के चाचा वैसिली लवविच की भी कविख्याति थी। उनके पिता के यहाँ साहित्य-गोष्ठी होती थी और तत्कालीन विशिष्ट रूसी साहित्यिक उसमें सम्मिलित होते थे। इस तरह पुश्किन का बचपन साहित्यिक वातावरण ही में बीता। पुश्किन कोई मेधावी विद्यार्थी नहीं थे। बहुत कम उम्र में ही उन्होंने फ्रांसीसी गृहशिक्षक से फ्रांसीसी भाषा सीखी और उस भाषा के साहित्य की श्रेष्ठ रचनाएँ पढ़ डालीं। बारह साल की अवस्था में पुश्किन अभिजात वर्ग के लिये स्थापित एक स्कूल में भर्ती हुये। इस स्कूल में उन्होंने छः वर्ष बिताये। पुश्किन के ज्ञान की परिधि बढ़ती गई, उनकी काव्य-प्रतिभा विशेष रूप से विकसित हुई। इसी समय से उनकी रचनायें पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। इसी काल में ज़ार के घोर अत्याचारी शासन के खिलाफ़ प्रतिवाद की आवाज़ उठने लगी। बहुत से छोटे-छोटे गुप्त क्रान्तिकारी गुट स्थापित होने लगे। पुश्किन के कितने ही सहपाठी इन क्रान्तिकारी गुटों के सदस्य थे। पुश्किन खुद किसी गुट के सदस्य नहीं थे, फिर भी उनसे एकात्म थे। उनकी कविता में क्रान्तिकारी विचार रूपायित होने लगे। १७ मई १८२० को वे चार साल के लिये निर्वासित कर दिये गये। निर्वासन की यह अवधि पुश्किन की कवि प्रतिभा के विकास का श्रेष्ठकाल है। १८२६ में पुश्किन पितर्सबुर्ग लौट आये। २९ फरवरी १८३१ को उन्होंने तत्कालीन पितर्सबुर्ग की श्रेष्ठ सुन्दरी नतालिया निकलायेव्ना गन्चारोवा से ब्याह किया। पुश्किन और उनकी स्त्री को राजसभा में स्थान देकर ज़ार ने उनकी क्रान्तिकारी चेतना को पंगु और नष्ट करना चाहा। लेकिन पुश्किन की चारित्रिक दृढ़ता से उसकी यह प्रचेष्टा व्यर्थ हुई। इसके बाद ज़ार की प्ररोचना से फ्रांसीसी नागरिक दान्तेस ने ७ फरवरी १८३७ को द्वन्द्व-युद्ध में पुश्किन को

अन्यायपूर्वक घायल किया। दो दिन बाद अर्थात् ९ फरवरी को उनकी मृत्यु हो गई।

वर्त्तमान 'कथागुच्छ' की चारों कहानियाँ पुश्किन की गद्य रचनाओं में विशेष महत्वपूर्ण समझी जाती हैं! पुश्किन की अधिकांश रचनायें वास्तव घटना को केन्द्र करके लिखी गई हैं। किसी ऐतिहासिक घटना का अवलम्बन करके ही पुश्किन की कल्पना विकसित होती थी और उनकी सृजनी प्रतिभा उसे अनिन्द्य शिल्पकर्म बना देती थी।

'सम्राट प्योत्र का हबशी' पुश्किन की पहली गद्य रचना है। कहानी का नायक इब्राहिम पुश्किन की माँ नादेज़दा ओसिपोव्ना का दादा है। 'पुश्किन और हैनिबलों का वंश-परिचय' नामक अपनी रचना में पुश्किन ने लिखा है: "मेरी माँ के दादा हबशी थे, एक सामन्त राजा के बेटे थे। कुस्तुनतुनिया के रूसी राजदूत न जाने कैसे सुलतान के प्रासाद से उन्हें ला दो और हबशी लड़कों के साथ महान प्योत्र के पास भेज दिया। पोलैंड की रानी, अगस्ट की स्त्री के साथ सम्राट ने १७०७ में विल्ना में उन्हें दीक्षा दी और इस परिवार का नाम हैनिबल पड़ा। दीक्षा के समय उनका नाम प्योत्र रखा गया; इस समय वे कितना फूट-फूटकर रोये थे! नये नाम से परिचित होने की उनको इच्छा नहीं थी। मृत्यु के पहिले तक वे 'अबराहम' नाम से ही परिचित थे। रुपये देकर उन्हें लौटा ले जाने के लिये उनके बड़े भाई पितर्सबुर्ग आये थे मगर प्योत्र ने उन्हें अपने पास ही रखा। १७१६ तक हैनिबल सम्राट के संग ही रहते थे, उन्हीं के कमरे में सोते थे, सभी प्रकार के अभियानों में उनके साथ रहते थे। इसके बाद पेरिस जाकर उन्होंने कुछ दिनों तक मिलिटरी स्कूल में अध्ययन किया, फ्रांस में नौकरी की। स्पेन का लड़ाई के वक्त सिर में चोट लगने पर वे पेरिस लौट आये। यहाँ उन्होंने अभिजात वर्ग के विलास में बहुत दिन बिता दिये। पहले प्योत्र ने बारबार उन्हें लौट आने को लिखा। लेकिन हैनिबल तरह-तरह के बहाने बनाकर लौटना नहीं चाहते थे...।"

इस ऐतिहासिक घटना के आधार पर ही 'सम्राट प्योत्र का हबशी' की रचना की गई है। ऐतिहासिक कहानी होने पर भी इसमें कल्पना की कमी नहीं है। जैसे, पेरिस में काउन्टेस से इब्राहिम का सम्बन्ध। १० अगस्त

१८२७ को पुश्किन ने इस कहानी को लिखना शुरु किया मगर समाप्त नहीं कर सके। कहानी का शीर्षक भी पुश्किन का दिया हुआ नहीं है। कहानी के अलिखित बादवाले अध्याय में क्या होता इसकी ओर संकेत करते हुये उन्होंने ने लिखा है कि वहाँ होगा "इस हबशी की स्त्री की विश्वासघातकता, गोरी-चिट्टी संतान का जन्म और इसलिये आश्रम में निर्वासन।" लेकिन पुश्किन की यह कहानी असमाप्त ही रह गई।

'पत्रोपन्यास' पुश्किन की दूसरी असमाप्त रचना है। १८२९ के अंत में उन्होंने इसे लिखना शुरू किया था। उन्होंने इसका भी नामकरण नहीं किया था।

पुश्किन के समग्र गद्य-साहित्य में 'इस्कापन की बीबी' सुन्दर रचना है। इसका रचनाकाल अक्तूबर-नवम्बर १८३३ है। कहा जाता है कि पुश्किन ने पहिले इसका नाम 'झूठी आवाज़' रखना चाहा था। उनके मित्र न. व. नाश्चोकिन ने लिखा है कि, पुश्किन ने मुझे यह कहानी पढ़ सुनाई और कहा, "कहानी बिलकुल कल्पना-प्रसूत नहीं है। वृद्धा काउन्टेस मास्को के गवर्नर-जेनरल दिमित्री व्लादिमिरोविच की माँ नतालिया पित्रोव्ना गलित्सिना हैं। पुश्किन ने जैसा लिखा है, वे ठीक उसी तरह पेरिस में रहती थीं।" यह कहानी बहुत जनप्रिय हुई थी। यह किसको लेकर लिखी गई है, इसे पाठक समझ गये थे। १८ अप्रैल १८३४ को पुश्किन ने अपने रोज़नामचे में लिखा है: "मेरी इस्कापन की बीबी ने लोगों को बहुत ज़्यादा मस्त कर दिया है। जुआड़ी तिग्गी, सत्ता और एक्के पर बाजी रख रहे हैं। राज-दरबार में सभी वृद्धा काउन्टेस न. प. गलित्सिना में सादृश्य देख रहे हैं। लेकिन क्रुद्ध हुये ऐसा नहीं लगता।"

"किर्जालि" सम्भवतः १८३४ के अन्त की रचना है। इस विषय पर पुश्किन ने कई छोटी कवितायें भी लिखीं। जनता में प्रचलित कहानी के आधार पर ही यह लिखी गयी है। आधुनिक ऐतिहासिक अनुसंधानों से इसकी कुछ बातें गलत सिद्ध हुई हैं। किर्जालि का सच्चा नाम है—गियार्गि। फरवरी १८२३ में वह गिरफ्तार किया गया मगर भाग निकला। बाद में वह फिर पकड़ा गया और ५ अक्तूबर १८२४ को यासी में उसे फाँसी दे दी गयी। कहानी के अन्त में लिखा गया है कि किर्जालि आज भी डाके डालता

फिर रहा है। लेकिन वह किर्जालि गियार्गि किर्जालि नहीं है। उसके दल का कोई और होगा।

ऊपर की चारों कहानियाँ मास्को से तीन खण्डों में प्रकाशित 'पुश्किन रचनावली' के तीसरे खंड से ली गई हैं और अनुवाद मूल रूसी से किया गया है। मूल रूसी से हिन्दी में अनुदित होकर पुस्तकाकार में प्रकाशित होनेवाली पुश्किन की शायद ये पहली रचनायें हैं।

अनुवादक श्री रवि बकाया की मातृभाषा हिन्दी नहीं है फिर भी उन्होंने बड़े परिश्रम से अपना काम किया है। अनुवाद को मूल से मिलाने में श्री सुनील भट्टाचार्य ने बड़ी सहायता की है। अनुवाद कैसा हुआ है, यह पाठकों के सामने है।

महादेव साहा

सम्राट
पियतर का
निग्रो

प्योत्र महान का हब्शी

प्योत्र के फौलादी संकल्प से
रूस का पुनर्निर्माण हुआ।
—न, याज़िकोव

एक

मैं पेरिस से आया हूँ, केवल दिन
काटना नहीं, जीना आरम्भ किया है।
—दिमित्रियेव

परिव्राजक की डायरी से

नवगठित राष्ट्र के लिये आवश्यक बातों की जानकारी हासिल करने के लिये प्योत्र महान ने जिन नवयुवकों को विदेशों में भेजा था सम्राट प्योत्र का धर्मपुत्र हब्शी इब्राहिम भी उनमें एक था। उसने अपना विद्यार्थी जीवन पेरिस के मिलिटरी स्कूल में बिताया था, वह वहाँ से तोपखाने का कप्तान बनकर निकला, स्पेन की लड़ाई में उसने बड़ा नाम पाया, इसके बाद बुरी तरह घायल होकर फिर पेरिस लौट आया। अपने दुनिया भर के कामों में व्यस्त रहने के बावजूद सम्राट प्योत्र ने अपने धर्मपुत्र इब्राहिम की ख़रखबर लेना बन्द नहीं किया था। और सदा उसकी सफलता और कार्यकलाप के बारे में मनगढ़ंत प्रशंसा का विवरण उन्हें सुनाया जाता था। प्योत्र उससे बहुत प्रसन्न थे और इब्राहिम से कई बार रूस वापस आने का प्रस्ताव किया, किन्तु इब्राहिम को किसी प्रकार की जल्दी नहीं थी। तरह-तरह के बहाने बना इस आह्वान का प्रत्याख्यान किया था--कभी घायल होने की बात कहता, कभी पढ़ाई पूरी करने की अभिलाषा की बात करके, कभी आर्थिक तंगी के नाम पर। प्योत्र इब्राहिम के सारे अनुरोधों को प्रश्रय देते थे, उसे अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखने को कहते, पढ़ाई में यह तल्लीनता देखकर उसे आशीर्वाद देते, और अपने खर्च के मामले में बहुत मितव्ययी होने पर भी उसके लिये खजाना खोल देने में किसी तरह की आनाकानी नहीं करते थे। किन्तु सोने की मुहरों के साथ वे पिता सुलभ उपदेश और चेतावनी भी देते थे।

उस समय के फ्राँसीसियों के बराबर अबाध चपलता, उद्दामता, और विलासिता किसी दूसरी जाति में न थी, इसकी साक्षी सभी ऐतिहासिक

रचनाए देती हैं। चौदहवें लुई के राज्य के अंतिम वर्ष जिस एकनिष्ठ धर्म-परायणता, गम्भीरता और शिष्ट व्यवहार के लिए प्रसिद्ध थे, उसका अब लेश-मात्र भी नहीं रह गया था। ओरलेयँ के ड्यूक के चरित्र में महान गुणों के साथ हरप्रकार के दोषों का समावेश हो गया था। किन्तु दुर्भाग्यवश कपट इन दोषों में नहीं था। राजमहल के गुप्त वामाचार की बात पेरिस में अब छिपी नहीं थी। राजमहल का उदाहरण संक्रामक सिद्ध हो रहा था। इसी समय ला * रंगमंच पर अवतीर्ण हुए। धनलोलुपता अब विलासप्रियता और चरित्रहीनता की संगिनी बन गई, जागीरें बर्बाद होने लगीं, नैतिकता दम तोड़ रही थी। फ्राँसीसी हँसी-मज़ाक और धन के लेखे-जोखे में मग्न थे। उधर व्यंगात्मक गीति नाटकों के सुर के साथ राजसत्ता का क्षय होने लगा।

इधर समाज बड़ा ही मनमोहक रूप धारण कर दिखाई पड़ा। विला-सिता की प्यास ने सभी वर्गों के लोगों को एक दूसरे के निकट ला दिया। धन, भद्रता, यश, प्रतिभा यहाँ तक कि लत तक, जो कुछ भी कौतूहल को मिटाती थीं, सभी को उन्होंने समान उत्सुकता के साथ ग्रहण किया। फैशन के प्रति आनुगत्य प्रकट करने के लिये साहित्य, विज्ञान, दर्शन अपने शान्त समाहित ध्यान की दुनिया को छोड़कर बृहत्तर जगत में दिखाई पड़े। नारियों का प्राधान्य शुरू हुआ, लेकिन अब वे श्रद्धा भक्ति नहीं उत्पन्न कर पाती थीं। गम्भीर श्रद्धा का स्थान अब दिखावटी भद्रता ने ले लिया। आधुनिक एथेन्स अल्सिबियादिस* ड्यूक रिशल्यू की शैतानी को इतिहास में स्थान मिला है। उनमें उस समय के रहन-सहन का अच्छा चित्रण मिलता है।

"ताँ फोरतुने मार्के पारला लिसूसँ,
उला फोलि आजिताँ सों ग्रलो,
दयँ पिये लेजे पार्कुर तुतूला फ्राँस,
उ नुल मोर्तेल नादेनेतर देभो,
उलौं फे तुते-क् सेप्ते पेनिताँस।

*जान ला (१६७१-१७२९) स्काटलैंड का अर्थनीतिशास्त्र का पण्डित जिसने फ्राँस के लिए कई योजनाएँ बनाईं थीं और जिनके परिणाम स्वरूप देश का दिवाला निकल गया था।—सम्पादक

*अलसिबियादिस (लगभग ई० पू० ४५०—४०४) यूनानी राजनीतिज्ञ थे।—सम्पादक।

[वह सौभाग्य का समय, जिसकी विशेषता है उच्छृङ्खलता,
जहाँ मूर्खता अपनी घन्टी बजाती हुई चंचल पगों से
सारे फ्राँस में दौड़ती है।
जहाँ कोई भी नश्वर की उपासना नहीं करता है,
जहाँ पश्चाताप के सिवा और सब कुछ सभी करने को तैयार हैं,
इन्द्रिय की उत्तेजना में भोग्य है वही सुख का समय ॥]

इब्राहिम का आगमन, उसका चेहरा, शिक्षा-दीक्षा और सहज बुद्धि ने पेरिस में सबका ध्यान आकर्षित किया। सभी भद्र महिलाएँ ['ज़ार के हब्शी'] लोन्यागर द ज़ार को अपने घर बुलाना चाहती थीं, रास्ते में पाने पर उसे गिरफ्तार करतीं। रिजेन्ट ने उसे एकाधिक बार अपनी शाम की रंगीली दावतों में निमन्त्रित किया था। आरुयेत के तारुण्य और शोले के बार्द्धक्य तथा मन्तेस्क और फन्तेनेल के वार्तालाप से उद्दीपित हर नैश भोज में वह उपस्थित रहता। कोई भी बॉल नाच की मजलिस, कोई उत्सव, किसी भी थियेटर के पहले अभिनय में वह अनुपस्थित नहीं रहता था। उम्र और स्वभाव के पूरे जोश के साथ वह सामूहिक उन्मादना के आवर्त्त में कूद पड़ा। इस उच्छृङ्खलता, उद्दाम और विलास-व्यसन की जगह एक दिन पितर्सबुर्ग के राजमहल का रूखा सरल जीवन आयेगा, इस बात को सोचकर वह कभी नहीं डरा। और भी मज़बूत बन्धनों ने उसे पेरिस से बाँध रखा। तरुण हब्शी प्रेमपाश में बँध चुका था।

काउन्टेस द···यौवन का उन्मेष काल पार कर गई हैं। फिर भी अब-तक उनके सौन्दर्य की ख्याति है। सत्रह साल की उम्र में कनवेन्ट छोड़कर चले आने के समय जिससे उनका ब्याह हुआ उससे वे प्रेम करने में सफल न हुईं। लेकिन ब्याह के बाद इसके बारे में उन्होंने कभी माथापच्ची नहीं की। अफ़वाह थी कि उनके बहुत से प्रेमिक हैं, लेकिन प्रश्रय का मनोभाव लेकर समाज इन बातों को देखता था; वे सुनाम की पात्री भी थीं। क्योंकि हास्यास्पद अथवा प्रलोभन उत्पन्न करनेवाले किसी प्रकार के एडवेन्चर का दोषारोपण उनपर करना सम्भव नहीं था। उनका मकान नवीनतम फैशन का था। पेरिस का सर्वश्रेष्ठ समाज उनके यहाँ इकट्ठा होता था। तरुण मेर-विल ने उनका इब्राहिम से परिचय करा दिया। मेरविल को लोग काउन्टेस

का नवीनतम प्रेमिक समझते थे और वह भी इस बात का भान करता था मानो यह सच ही है।

काउन्टेस ने शिष्टतापूर्वक इब्राहिम का स्वागत किया, लेकिन उस स्वागत में उनका कोई विशेष ध्यान नहीं दिखाई पड़ा। इसीसे इब्राहिम ललचाया। साधारणतया सभी इस तरुण हब्शी को किसी विचित्र चीज़ की तरह देखते थे। उसे सुभेच्छा की वाणी या प्रश्नों की झड़ी से परेशान कर देते थे। शिष्टाचार के आवरण से ढका होने पर भी इस कुतूहल से उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचती। हमारे सारे प्रयासों का अकसर एकमात्र लक्ष्य होता है नारी का मधुर ध्यान आकर्षित करना, लेकिन यह आकर्षण उसके हृदय को न केवल प्रसन्न ही कर सका बल्कि क्षोभ और कटुता से भर दिया था। वह समझ जाता था कि उनके लिए वह एक दुर्लभ जन्तु है। एक ऐसा अनदेखा प्राणी है जो अचानक संसार में आ पहुँचा है। और जिनसे उनकी कोई बात नहीं मिलती थी। आँखों की ओट में पड़े हुए साधारण लोगों तक से उसे ईर्ष्या होती थी, लगता था मानों इस नगण्यता के लिये ही वे भाग्यवान हैं।

प्रकृति ने उसे पारस्परिक प्रेम विनिमय के लिये सृजन नहीं किया था, इस विचार ने इब्राहिम को अहंकार और आत्मम्भरिता के हाथों से बचाया था। इसके फलस्वरूप स्त्रियों के प्रति उसके आचरण में दुर्लभ माधुर्य दिखाई देता था। उसकी बातें सरल मगर मर्यादा-व्यंजक थीं। काउन्टेस द···उसे अच्छी लगीं, फ्रांसीसी कुशाग्रबुद्धि को उस चिरन्तन हँसी मज़ाक और सूक्ष्म इशारों से वे ऊब उठी थीं। इब्राहिम अकसर उनके पास आता था। धीरे-धीरे वे इस तरुण हब्शी के चेहरे से अभ्यस्त हो गईं, यहाँ तक कि अपने ड्राइंगरूम में पाउडर चुपड़े बालों की टोपियों के बीच इब्राहिम के काले घुँघराले बालोंवाले सिर में उन्हें माधुर्य का पता चलने लगा। इब्राहिम के सिर में चोट लगी थी, इसलिऐ नकली बालों की टोपी की जगह वह पट्टी बाँधता था। इब्राहिम की आयु तब सत्ताईस की थी। देखने में वह लम्बा और छरहरा था। बहुत सी सुन्दरियाँ जिस दृष्टि से उसे देखती थीं वह दृष्टि केवल साधारण कौतूहल दृष्टि नहीं थी, उस दृष्टि में बाक़ायदा लुब्धता भी थी लेकिन इनके विरुद्ध उसके हृदय में पहिले ही से धारणाएँ बन गईं थीं।

इसलिए इब्राहिम या तो इन सब पर ध्यान ही नहीं देता था और नहीं तो इनमें केवल छलबल ही देखता था। किन्तु जब काउन्टेस से उसकी चार आँखें होतीं तो उसका सारा अविश्वास ग़ायब हो जाता। काउन्टेस की दोनों आँखों में ऐसी मधुर करुणा दिखाई देती और इब्राहिम से उनका व्यवहार ऐसा सहज और स्वाभाविक होता कि, उसमें छल या विद्रूप का लेशमात्र होने का सन्देह करना इब्राहिम के लिए असम्भव हो जाता।

प्रेम की बात अभी उसके मन में नहीं आई थी मगर रोज़ काउन्टेस से मिलना उसके लिए अनिवार्य हो गया था। सर्वत्र वह काउन्टेस का सग ढूँढ़ने लगा और काउन्टेस से जब जब उसकी मुलाकात होती हरबार वह इस मुलाकात को भगवान की अनहोनी कृपा समझता था। इब्राहिम की इस मानसिक अवस्था की बात खुद उसे मालूम होने के पहिले ही काउन्टेस समझ गईं। जो भी कहें, चित्त चुराने के सभी प्रकार के छलों से नारी के हृदय को वह प्रेम अधिक छूता है जिस प्रेम में कोई प्रत्याशा नहीं है, कोई माँग नहीं है। इब्राहिम के उपस्थित रहने पर काउन्टेस उसके प्रत्येक हावभाव पर नज़र रखती थीं, उसकी हरबात को कान खड़े करके सुनती थीं। इब्राहिम के उपस्थित न रहने पर वे चिन्तित हो जाती थीं और अपने स्वभावसिद्ध अन्यमनस्कता में डूब जाती थीं··· मेरविल ने ही पहिले इस पारस्परिक आकर्षण को देखकर इब्राहिम को बधाई दी। तीसरे व्यक्ति के उत्साहपूर्ण समर्थन के समान प्रेम की आग को इस तरह और कोई चीज़ नहीं भड़का सकती ···प्रेम अंधा होता है और आत्म-विश्वास के अभाव के कारण वह आसपास जो भी सहारा पाता है उसी को कस कर पकड़ता है।

मेरविल की बातों ने इब्राहिम को सजग बना दिया। दयिता रमणी को पाने की संभावना की बात इसके पहिले उसकी कल्पना में भी नहीं आई थी। अचानक आशा से उसका हृदय उद्दीप्त हो गया। प्रेम से वह पागल हो उठा। इब्राहिम के प्रेम की उद्दाम अभिव्यक्ति से डर कर काउन्टेस ने उसके प्रेम के विरुद्ध मित्रता की प्रतिश्रुति और अविवेचना का उपदेश देने की चेष्टा की, किन्तु उनकी यह चेष्टा व्यर्थ हुई क्योंकि, वह स्वयं दुर्बल हो गई थीं। असावधान क्षणों के पुरस्कार एक के बाद एक

द्रुतगति से वितरित होने लगे। और अन्त में जिस प्रेम को उन्होंने स्वयं जाग्रत किया था उसी के बहाव में बहकर और उसके आघात से शक्तिहीन होकर उन्होंने आनन्द से विह्वल होकर इब्राहिम के निकट आत्मसमर्पण किया।

पैनी दृष्टि वाले संसार की आँखों से कुछ भी छिपा नहीं रहता है। काउन्टेस के नये सम्बन्ध की बात थोड़े ही समय में सभी जान गए। कुछ भद्र महिलाओं को उनका चुनाव देखकर अचरज हुआ। लेकिन अधिकांश ने ही इसे स्वाभाविक समझा, कोई-कोई हँसी, दूसरी ओर किसी-किसी को इसमें काउन्टेस की अक्षम्य असतर्कता ही दिखाई पड़ी। प्रेम के पहिले नशे में इब्राहिम और काउन्टेस को कुछ भी नहीं दिखाई पड़ा। किन्तु कुछ दिनों के बाद पुरुषों के दोहरे अर्थ वाले व्यंग और स्त्रियों की डंक जैसी बातें उनके कानों में आने लगीं। इब्राहिम के मर्यादाव्यंजक और उदासीन आचरण ने इतने दिनों इस प्रकार के आक्रमणों से उसको बचा रखा था। इन आक्रमणों को वह अधीर होकर सहता गया, क्या करे यह उसकी समझ में नहीं आया। काउन्टेस अब तक सभा की श्रद्धा और सम्मान पाती आई थीं। इसलिए अपने विरुद्ध इस निन्दा और विद्रूप को शान्त भाव से नहीं ले सकीं। आँसू भरी आँखों से वह कभी इब्राहिम से शिकायत करतीं, कभी तीव्ररूप से उस पर दोषारोप करतीं, कभी वे अनुरोध करतीं उनका समर्थन न करने के लिए, क्योंकि तब वाहियात शोरगुल में उनका सत्यानाश हो जायगा।

नई परिस्थिति ने काउन्टेस की हालत और भी संगीन बना दी, असतर्क प्रेम का फल अब प्रकट हुआ। सान्त्वना, उपदेश, सुझाव कुछ भी बाकी न रहा, सब कुछ विफल हुआ। अवश्यम्भावी सत्यानाश काउन्टेस को आँखों के सामने दिखाई देने लगा, और चरम निराशा के साथ वे उसकी प्रतीक्षा करने लगीं।

जैसे ही काउन्टेस की हालत की बात लोग जान गए वैसे ही नये सिरे से फिर कानाफूसी होने लगी। भावुक महिलाएँ डर से अस्फुट आर्त्तनाद कर उठीं। काउन्टेस की सन्तान कैसी होगी गोरी या काली, इस बहस से शरीफ़ लोग बाजी लगाने लगे। उनके पति के बारे में व्यंग कविताएँ लिखी जाने लगीं। सारे पेरिस में वही एकमात्र व्यक्ति थीं जो

इस मामले में कुछ भी नहीं जानती थीं, किसी बात का संदेह भी नहीं किया था ।

चरम मुहूर्त निकट आने लगा । काउन्टेस की हालत भयङ्कर हो उठी। इब्राहिम रोज ही उनके यहाँ जाता था । उसने देखा कि काउन्टेस की मानसिक और शारीरिक शक्ति धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। उनके आँसू, उनका डर हर क्षण बढ़ता ही गया । अंत में उनको प्रथम पीड़ा हुई । शीघ्र ही सारा इन्तज़ाम किया गया । काउन्ट को दूर भेजने की तरकीब निकाली गई । डाक्टर आए । इसके दो दिन पहिले एक गरीब औरत से बातचीत हुई थी कि वह अपने नवजात लड़के को दूसरे के हाथों में सौंप देगी । उस बच्चे को लाने के लिए आदमी भेजे गए । अभागी काउन्टेस जिस कमरे में लेटी हुई थीं, इब्राहिम उसके ठीक बगलवाले पढ़ने के कमरे में ही रहा । साँस रोके वह उनकी दबी कराह,, महरियों का फुसफुसाना, डाक्टर की हिदायतें सुन रहा था । पीड़ा बहुत देर तक रही । काउन्टेस की हर कराह से इब्राहिम की छाती फटने लगी । हर मौन क्षण उसके दिल को थर्रा देता था।···अचानक शिशुकंठ का क्षीण क्रन्दन सुनाई पड़ा । उत्तेजना दबाने में असमर्थ हो वह दौड़कर काउन्टेस के कमरे में पहुँचा। काउन्टेस के पैरों के पास काले रंग का नवजात शिशु बिछौने पर पड़ा हुआ था । इब्राहिम उसके समीप आया । उसका कलेजा धड़क रहा था । काँपते हुए हाथों से उसने पुत्र को आशीर्वाद दिया । काउन्टेस ने फीकी मुस्कराहट के साथ अपना दुर्बल हाथ बढ़ा दिया ।···

लेकिन रोगिणी के लिए बड़ी उत्तेजना का कारण होगा यह समझकर डाक्टर ने इब्राहिम को ज़बर्दस्ती काउण्टेस के बिस्तर के किनारे में हटा दिया। नवजातक को एक ढकी टोकरी में सुला गुप्त सीढ़ी के रास्ते मकान के बाहर ले जाया गया। दूसरे शिशु को लाकर जच्चा के घर में पालना लटका कर सुला दिया गया। इब्राहिम निश्चिन्त हो चला गया। सभी काउन्ट के लौटने की बाट जोह रहे थे। वे बहुत देर से लौट गये और स्त्री का अच्छा समाचार पाकर बहुत खुश हुए। फलस्वरूप जो लोग कलंक की एक बड़ी कहानी के लिए बेचैन थे उन्हें निराश होना पड़ा। और घिनौनी निन्दा करके सांत्वना पाने के सिवा उनके लिए कोई चारा नहीं रहा।

सब कुछ भले-भले समाप्त हुआ। लेकिन इब्राहिम मन ही मन समझ गया कि उसका भाग्य बदलेगा ही, चाहे आज हो चाहे कल हो। काउन्टेस से उसके सम्बन्ध की बात काउन्ट द ··· के कानों में पड़ेगी ही। उस हालत में और कुछ भी क्यों न हो, काउन्टेस का सर्वनाश अनिवार्य है। इब्राहिम ने बड़ी गहराई से प्यार किया था और उसके प्यार के योग्य प्रतिदान भी मिला था। लेकिन काउन्टेस तरंगी और अस्थिर-मति थीं। यह उनका पहला प्रेम नहीं था। उनके हृदय की सब से मधुर और कोमल अनुभूति का स्थान विरक्ति और घृणा ले सकती हैं। इब्राहिम ने कल्पना में देखा कि काउन्टेस उसके प्रति उदासीन हो गई हैं। इतने दिनों तक ईर्षा किसे कहते हैं, वह नहीं जानता था, आज भय के साथ उसने मन में इसका अनुभव किया। उसने सोचा, विछोह की वेदना इससे अधिक दुखदाई नहीं होगी, तय कर लिया कि दुर्भाग्य से नाता तोड़ पेरिस छोड़ वह रूस चला जायेगा। बहुत दिनों से वहाँ प्योत्र उसे बुला रहे हैं। इसके अलावा, व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी की एक अस्पष्ट अनुभूति भी उसमें जाग उठी।

दो

"सुन्दरता अब उतनी विह्वलता नहीं लाती है,
आनंद भी अब उतनी तृप्ति नहीं देता है,
चिन्ता भी अब उतनी चंचल नहीं है,
मैं भी उतना सुखी नहीं हूँ···
यश की चाह से मैं पीड़ित हूँ,
उसने बुलाया, कानों में ख्याति का कलरव
आ रहा है!"

—देरझाविन

दिन पर दिन, महीने पर महीने बीतने लगे। लेकिन जिस नारी को उसने अपने प्रति निछावर कराया है, उसे छोड़ कर चला जाय या नहीं इसे

प्रेम में तन्मय इब्राहिम तय नहीं कर सका। हरक्षण वह अपने को अधिकाधिक उलझाता जा रहा था। दूर के एक जिले में उनका लड़का बड़ा हो रहा था। समाज का प्रगल्भता शांत हो चली थी, अतीत की उद्दामता की बात चुपचाप स्मरणकर और भविष्य की बात सोचने की चेष्टा न कर प्रेमिकद्वय ने हृदय से शांति का उपभोग करना शुरू किया।

एक दिन इब्राहिम आर्लियान्स के ड्यूक के दरवाज़े की बगल से जा रहा था। ड्यूक उसकी बगल से गुजरते समय रुककर फुर्सत के समय पढ़ने का अनुरोध कर के एक पत्र दे गये। यह प्रथम प्योत्र का पत्र था। इब्राहिम के रूस न लौटने के असल कारण का अनुमान लगाकर सम्राट ने ड्यूक को लिखा था कि, किसी भी कारण से वे इब्राहिम की स्वतंत्रता को क्षुण्य नहीं करना चाहते और रूस लौटना या न लौटना उन्होंने उसकी सदिच्छा पर ही छोड़ दिया और किसी भी कारण से वे अपने पहले के पालित पुत्र को नहीं छोड़ेंगे। इस पत्र ने इब्राहिम के हृदय के अन्तरतम भाग को स्पर्श किया। उसी क्षण उसके भाग्य का निर्णय हो गया। अगले ही दिन उसने फौरन रूस लौट जाने की इच्छा रीजेंट के सामने प्रकट की। ड्यूक ने उससे कहा, "जो कुछ कर रहे हैं उसे जरा सोच देखिये, रूस आपकी पितृभूमि नहीं है और अपनी धूप से जली मातृभूमि के देखने का मौका मिलेगा ऐसा नहीं लगता। इसके अलावा फ्रांस में आपके इस लम्बे प्रवास ने अर्ध-वर्बर रूस की जलवायु और जीवनयात्रा के लिये आपको अनभ्यस्त बना दिया है। आप प्योत्र की प्रजा के तौर पर पैदा नहीं हुए हैं। मेरी बातों पर विश्वास कीजिये : उनकी इस उदार अनुमति से फायदा उठाइये। इस फ्रांसीसी देश के लिए आपने अपना खून दिया है, आप इसी देश में ही रहिए। निश्चित जानिये कि आपके काम और प्रतिभा के लिए यथा योग्य पुरस्कृत करने में यहाँ कोई त्रुटि नहीं होगी।" इब्राहिम ने ड्यूक को आन्तरिक धन्यवाद दिया। लेकिन अपने निश्चय पर डटा रहा। रीजेंट ने उससे कहा, "हमें दुःख है सही में, मगर जो भी हो आपने ठीक ही किया है।" इब्राहिम को छुट्टी देने के वादे के बाद रीजेंट ने रूस के सम्राट को सारी बातें लिख कर सूचित कीं।

शीघ्र ही इब्राहिम ने जाने की तैयारी कर ली। विदा होने की

पहली शाम उसने यथारीति काउन्टेस द···के यहाँ बिताई। काउन्टेस कुछ भी नहीं जानती थीं। सारी बातों को उनके सामने खोलकर कहने की हिम्मत इब्राहिम में नहीं थी। उस दिन काउन्टेस शांत और प्रसन्न थीं। इब्राहिम को कई बार पास बुलाकर उन्होंने उसकी विचारमग्नता पर मज़ाक भी किया। रात का भोजन समाप्त होने पर सभी विदा हुए। ड्राइङ्ग-रूम में सिर्फ़ काउन्टेस, उनके पति और इब्राहिम रह गये। निराले में काउन्टेस के साथ कुछ देर रहने के बदले में अभागा इब्राहिम संसार का सब कुछ निछावर कर सकता था। लेकिन काउन्ट द...अङ्गाठो के पास इस तरह जमकर बैठ गया था कि लगता था कि उसके कमरे से टलने की कोई आशा नहीं है। तीनों मौन थे। "बोन् न्यूइ" [शुभ रात्रि] अन्त में काउन्टेस बोलीं। इब्राहिम के दिल में बड़ी पीड़ा हुई, अचानक उसके मन में वियोग का दारुण आतंक जाग उठा। वह खड़ा का खड़ा ही रह गया। "बोन् न्यूइ मसिये" [शुभ रात्रि सज्जनो]—काउन्टेस फिर बोलीं। फिर भी वह नहीं टला··· अन्त में उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया, उसका सिर चकराने लगा और बड़ी कठिनाई से वह कमरे से निकल आया। घर पहुँचकर उसने अपने अनजाने ही यह पत्र लिख डाला :

"मैं जा रहा हूँ लेओनौरा प्रियतमा, सदा के लिए तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ। तुम्हें इसलिये पत्र लिख रहा हूँ कि दूसरी तरह से तुमसे विदा होने की शक्ति मुझमें नहीं है।

"मेरा यह सुख अधिक स्थायी नहीं हो सका। भाग्य और प्रकृति की उपेक्षा करके ही मैंने इस सुख का उपभोग किया है। किसी दिन मेरे लिए तुम्हारा प्रेम नहीं रह जायगा, मोह भी समाप्त हो जायगा। जब तुम्हारे भाव विह्वल आत्मदान से, तुम्हारे सीमाहीन माधुर्य से पागल होकर मैंने तुम्हारे चरणों के पास बैठकर बिताया, जब लगा कि सब कुछ भूल गया हूँ तब भी सदा यही चिन्ता सताती रही। सिद्धान्त के क्षेत्र में वह जो कुछ मान लेता है, यथार्थ में उसपर बेरहम होकर चोट करना ही इस चपलमति संसार की रीति है। आज हो, चाहे दो दिन बाद हो, इसका निठुर परिहास तुम्हें सिर झुकाने के लिये वाध्य करेगा, तुम्हारे उद्दाम हृदय को शान्त करेगा, तब तुम किसी दिन अपनी इस उद्दाम वासना के

लिये लज्जित हो जाओगी। ···तब मेरा क्या होगा, क्या होगा ? नहीं, नहीं ! इस भीषण क्षण के आने के पहिले बल्कि मेरी मृत्यु भी अच्छी है, बल्कि मेरा तुम्हें छोड़ जाना अच्छा है···

"तुम्हारी शान्ति से कीमती मेरे लिये कुछ भी नहीं है : संसार की दृष्टि जब तक हमारे ऊपर उद्यत रहेगी, तब तक तुम इस शान्ति का जी भर कर उपभोग नहीं कर सकोगी। जरा सोच देखो तो, तुम्हें कैसा अपमान, कैसा भय और पीड़न सहना पड़ा ! हमारी सन्तान की उस भयंकर जन्म की बात को जरा स्मरण करो । जरा सोचो : क्या मैं फिर तुम्हें उस उत्तेजना उस विपत्ति के सामने ठेल दूँगा ? इतने सुकुमार, इतने सुन्दर सृजन के भाग्य को मनुष्य के नाम के अयोग्य और करुणा के पात्र, एक हब्शी के असहनीय भाग्य से जोड़ देने की चेष्टा मैं क्यों करूँगा ?

"क्षमा करो लेओनोरा, क्षमा करो, मेरी एक मात्र मित्र ! तुम्हें छोड़ कर चला जा रहा हूँ, अपने जीवन के प्रथम और अन्तिम सुख को छोड़ कर चला जा रहा हूँ । मेरा न अपना कोई देश है और न कोई सगा-सम्बन्धी । मैं विषाद से ढके रूस देश को लौट रहा हूँ, वहाँ घोर एका-कीपन ही मेरी एक मात्र सान्त्वना होगी । आज से जिस कठोर कर्त्तव्य को अपना जीवन सौंप रहा हूँ अगर वह उस परम सुख और उल्लास की स्मृति को मिटा न भी सके फिर भी उसे ढक रखेगी···क्षमा करो लियोनरा— तुम्हारे आलिंगन से अपने को अलग करने की तरह ही इस पत्र को अलग कर रहा हूँ । क्षमा करो, सुखी होओ । और कभी-कभी इस अभागे हब्शी की बात अपने विश्वासी इब्राहिम की बात याद कर लिया करना।"

उसी रात को वह रूस के लिए रवाना हो गया।

उसने जैसी आशंका की थी यह यात्रा उतनी भयंकर न हुई । उसकी कल्पना यथार्थ पर विजयी हुई । पेरिस से वह जितनी ही दूर बढ़ता गया, छोड़ आये जीवन की स्मृति उसकी कल्पना में उतनी ही जीवित और घनिष्ठ होने लगी ।

इस तरह कब वह रूसी सीमा पर आ पहुँचा, इसका उसे पता भी न चला । इसी बीच वर्षा शुरू हो गई थी । लेकिन रास्ता खराब होने के बावजूद कोचवान उसे हवा की गति से उड़ाये लिये जा रहा था । और

इस तरह सोलह दिन चलने के बाद सबेरे वह 'क्रासनोये सेलो' आ पहुँचा। उन दिनों बड़ी सड़क इसी गाँव से होकर गई थी।

पितर्सबुर्ग पहुँचने में अब केवल अट्ठाइस वेर्स्त* रह गये थे। घोड़ों के सुस्ताने के मौके पर इब्राहिम कोचवानों के छोटे झोपड़े में जा घुसा। एक कोने में नीला काफतान पहने, मुँह में मिट्टी का पाइप दबाये एक लम्बे चौड़े सज्जन मेज़ पर केहुनियों को टिकाये हम्बुर्ग का अखबार पढ़ रहे थे। किसी के घुसने की आहट पाकर सिर उठा कर देखा—"अरे इब्राहिम!"—बेंच से उछल कर वे बोले, "अच्छे हो न?" इब्राहिम प्योत्र को पहचान पा खुशी से उन पर टूट पड़ना चाहता था, लेकिन सम्भ्रम से अपने को सम्भाल लिया। सम्राट ने उसकी ओर बढ़ कर उसे छाती से लगा कर चुम्बन किया—"मुझे तुम्हारे आने की खबर पहले ही मिल गई है,"—प्योत्र बोले,—"इसीलिए सीधे तुम्हारे यहाँ चला आया हूँ। कल से यहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए इब्राहिम को शब्द नहीं मिले। सम्राट बोले, "अपनी गाड़ी मेरी गाड़ी के पीछे-पीछे लाने को कहो, और तुम आकर मेरे साथ बैठो और मेरे ही संग चलो।" सम्राट की गाड़ी तैयार हुई। वे इब्राहिम को साथ ले गाड़ी पर चढ़े, गाड़ी चल दी। डेढ़ घंटे के बाद वे पितर्सबुर्ग आ पहुँचे। सम्राट के आदेश से दलदल ज़मीन पर बनी नई राजधानी को इब्राहिम आश्चर्य से देखने लगा। नंगे बाँध, कच्चे किनारेवाली नहरें, लकड़ी के पुल सब कुछ चारों ओर की प्राकृतिक बाधा के विरुद्ध मनुष्य की इच्छाशक्ति की हाल की विजयों की गवाही दे रही थी। मकानों को देखने से लगता था मानो वे जल्दी में बनाये गए हैं। सारे शहर में नेवा नदी जैसा सुन्दर कुछ भी न था—यद्यपि ग्रेनाइट पत्थरों से उसे अभी तक सजाया नहीं गया था, फिर भी वह जंगी और व्यापारी जहाजों से ढक गई थी। सम्राट की गाड़ी 'त्सारित्सिन साद' [ज़ारीना-बाग़] नाम से परिचित राजमहल के सामने आकर खड़ी हुई। पेरिस के नवीनतम फ़ैशन के कपड़े पहने हुए पैंतीस साल की एक सुन्दरी भद्रमहिला

* एक वेर्स्त दो-तिहाई मील के बराबर होता है।—संपादक।

से द्वारमंडप पर मुलाक़ात हुई। प्योत्र ने उसके होंठों को चूम इब्राहिम का हाथ पकड़ कर कहा, "कातेन्का, मेरे धर्मपुत्र इब्राहिम को पहचान रही हो? मेरा अनुरोध है, कि पहले ही की तरह इसे प्यार और स्नेह करना।" एकातेरीना ने अपनी पैनी काली आँखें उसकी ओर उठाईं फिर कृपापूर्वक अपना छोटा सा हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। उसके पीछे दो युवती सुन्दरियाँ—लम्बी छरहरी गठनवाली और गुलाब के फूलों जैसी ताज़गी लिए हुए—खड़ी थीं। वे आदरपूर्वक प्योत्र की ओर बढ़ आईं। उनमें से एक से वे बोले, "लीज़ा, 'ओरानियन बौम' मेरे पास से तुम्हारे लिए जो सेब चुरा ले जाता था उस छोटे हबशी की बात तुम्हें याद है? यह वही है। उसे तुम्हारे सामने पेश कर रहा हूँ।" बड़ी राजकुमारी मारे लाज के लाल होकर हँस पड़ी। सब खाने के कमरे में घुसे। सम्राट की प्रतीक्षा में मेज़ पर पहले ही से खाना सजाया गया था। इब्राहिम को निमंत्रित कर प्योत्र घर के सभी लोगों के साथ भोजन करने बैठे। भोजन करते समय सम्राट विभिन्न विषयों पर उससे बातें करते रहे, स्पेन की लड़ाई की बातें, फ्रान्स की अन्दरूनी हालत पर, फिर जिसे प्यार करते हैं मगर उसकी बहुत सी बातों को वे पसन्द नहीं करते उस रीजेन्ट की बात उससे जानना चाहा। प्रश्नों के उत्तर में इब्राहिम की अनिन्द्य और सूक्ष्म पर्यवेक्षणशक्ति का पता चला। प्योत्र उसके उत्तर से बहुत सन्तुष्ट हुए। प्योत्र ने विनोदपूर्ण ढंग से इब्राहिम के बचपन की बातें सुनाईं कि उन्हें सुन कर संदेह भी नहीं होता था कि यह स्नेहशील और अतिथि-वत्सल व्यक्ति पोलतावा का विजेता और रूस का महान सुधारक है जिसके नाम से लोग काँपते हैं।

रूसी प्रथा के अनुसार भोजन करने के बाद सम्राट आराम करने चले गये। इब्राहिम सम्राज्ञी और राजकुमारियों के साथ रहा। उनके कुतूहल को तृप्त करने की चेष्टा करने लगा, पेरिस के जीवन, वहाँ के पर्व-त्योहार, विचित्र फैशन का वर्णन किया। इसी बीच सम्राट के घनिष्ठ कई व्यक्ति राजमहल में आ जमा हुए। इब्राहिम आडम्बरप्रिय प्रिन्स मेंशिकोव को पहचान सका, वे हबशी को एकातेरिना से बातें करते देख भौंहें तरेर घमण्ड से उसकी ओर देखते रहे। प्योत्र के कठोर प्रकृति के

सलाहकार प्रिन्स याकोव दलगीरूकी, लोगों में रूसी 'फाउस्ट' के नाम से परिचित पंडित ब्रूस, अपने किसी ज़माने के मित्र तरुण रागूज़िन्सकी और रिपोर्ट पेश करने तथा आदेश लेने के लिए सम्राट के पास आये ऐसे बहुत से लोगों को वह पहचान सका।

दो घंटे के बाद सम्राट बाहर आये। उन्होंने इब्राहिम से कहा, "देखूँ, तुम अपना पुराना काम भूल गये हो कि नहीं। पट्टी लेकर मेरे साथ आओ।" प्योत्र मंत्रणाकक्ष का द्वार बन्द करके राजकाज में लग गए। एक-एक करके उन्होंने ब्रूस, प्रिन्स दोलगोरूकी, प्रधान पुलिस अफसर देवियेर से मुलाक़ात की, इब्राहिम को कुछ हुक्मनामें और फैसले लिख लेने के लिए बोलते गए। उनकी विचार शक्ति की द्रुतता मगर दृढ़ता, उनके ध्यान की प्रचण्डता और स्वच्छन्द विस्तार और उनके कार्य की बहुमुखिता को देखकर इब्राहिम के अचरज की सीमा नहीं रही। काम समाप्त कर उस दिन के सारे निर्धारित काम समाप्त हुए हैं या नहीं देखने के लिए प्योत्र ने जेब से छोटी नोटबुक निकाल कर देखा। इसके बाद मन्त्रणाकक्ष से निकल कर इब्राहिम से बोले, "बहुत देर हो गई। लगता है तुम थक गये हो। पहले की तरह रात को यहीं रहना, कल मैं तुम्हें जगा दूँगा।"

अकेला होने पर इब्राहिम के विचार न जाने किस तरह उलझने लगे। वह पितर्सबुर्ग आया है, फिर उस महान व्यक्ति से मुलाक़ात हुई है, उनके निकट उसने किशोरावस्था के दिन बिताए हैं जिनका मूल्य उसने तब भी नहीं समझा था। घोर निराशा के साथ उसने पहली बार अनुभव किया कि, काउन्टेस द ··· बिछुड़ने के बाद यही पहली बार उसकी चिन्ता की एकमात्र वस्तु नहीं बनी रही। उसने देखा कि, उसी के लिए प्रतीक्षारत नवीन जीवन, काम और निरन्तर व्यस्तता, उद्दाम आवेग, आनन्दोत्सव और गोपन वेदना से परिश्रान्त उसके हृदय को नये सिरे से जगा सकता है। इस महान मानव का सहकर्मी बनकर उनके साथ एक संग इस महान जाति के भविष्य के लिए काम करने की चिन्ता ने यही पहली बार उसके हृदय में आत्म-मर्यादा की एक महान अनुभूति जाग्रत की। इस मानसिक अवस्था में वह अपने लिए बनाए गए एक कैम्प-खाट पर लेट गया, तब उसका प्रतिदिन का स्वप्न उसे पेरिस ले आया प्रियतमा काउन्टेस के आलिंगन में।

तीन

"नभ के बादलों की भाँति
भाव बदल देते हैं। हमारे मन के चेहरे को,
अगर आज प्यार करता हूँ तो कल
करता हूँ घृणा।"

—बी० कुखेलबेकर।

वादे के अनुसार अगले दिन प्योत्र ने इब्राहिम को नींद से जगाया और प्रेयब्राज़ेन्स्की रेजिमेंट के तोपखाने के लेफ्टनैंट कप्तान का ओहदा मिलने पर उसे बधाई दी। वे खुद इस रेजिमेंट के कप्तान थे। राजमहल के कर्मचारियों ने इब्राहिम को घेर लिया और सभी अपने अपने तरीके से नये प्रियपात्र के प्रति आदर प्रकट करने की चेष्टा करने लगे। गर्वीले प्रिन्स मेन्शिकोव ने मित्रभाव से उससे हाथ मिलाया। शेरमेतेव ने अपने पेरिस के परिचितों के बारे में पूछताछ की, गलोविन ने उसे खाने का निमंत्रण दिया। कई दूसरों ने इस अंतिम उदाहरण को अपनाया। फलस्वरूप इब्राहिम को करीब पूरे महीने का निमंत्रण मिल गया।

इब्राहिम के दिन एक ही तरह से बीत रहे थे, लेकिन उसके दिन कार्यरत थे, इसीलिए उसे नीरसता की कटुता नहीं मालूम हुई। वह दिन ब दिन सम्राट अनुरक्त होने लगा; उनके जैसे महान व्यक्ति के हृदय का स्पर्श और भी अच्छी तरह पाने लगा। विचारों का अध्ययन करना एक बड़ा ही चित्ताकर्षक विज्ञान है। इब्राहिम देखता वे कभी सेनेट में बुतुरलिन और दलगोरूको कानून बनाने की आवश्यक समस्या पर बातें कर रहे हैं, कभी देखता सेनापतियों के समावेश में रूस के जहाजी बेड़े की उन्नति को सिद्ध करने के लिए भाषण दे रहे हैं, कभी देखता आराम करते समय फियफान, गाब्रिला, बुज़िन्स्की और कापियेविच के संग विदेशी लेखकों के अनुवाद पर बातें कर रहे हैं अथवा उद्योगपतियों के कारखाने, घरेलू उद्योग-

धंधों की कार्यशाला या वैज्ञानिक के अध्ययन-कक्ष का निरीक्षण कर रहे हैं। इब्राहिम के सामने रूस एक विशाल कारखाने का रूप लेकर जाग उठा, जहाँ केवल मशीनें चल रही है, हरेक मज़दूर कारखाने के नियमों के अनुसार अपने काम में व्यस्त है। उस लगा कि वह भी अपनी मशीन के सामने खड़ा काम करने के लिए अंगीकारबद्ध है। पेरिस के जीवन के भोग-विलास के लिए दुःख को जहाँ तक संभव है कम करने की चेष्टा करने लगा। उसके लिए एक दूसरी मधुर स्मृति को दूर कर देना और भी कष्टप्रद था, काउन्टेस द······की बात उसे अकसर याद आती, वह कल्पना में उनका क्रोध देख पाता, वह क्रोध बिलकुल अकारण नहीं था, उनके आँसू, उनकी विषाद वेदना······लेकिन बीच-बीच में एक भयावनी चिन्ता उसके हृदय को मसोस देती, अभिजात समाज का भोग-विलास, नया सम्बन्ध, एक दूसरा सुखी व्यक्ति उसके शरीर में सिहरन पैदा करते। ईर्षा से उसका हबशी ख़ून खौल उठता, गरम आँसू उसके काले मुखमंडल से टपकने का उपक्रम करता।

एक दिन सबेरे वह अपने पढ़ने के कमरे में बैठा हुआ था, चारों ओर ज़रूरी क़ागज़ात बिखरे हुये थे। इसी समय न जाने किसने ऊँची आवाज़ में फ्रांसीसी में उसे अभिवादन किया। इब्राहिम ने पीछे मुड़कर देखा और नवयुवक कोरसाकोव ने—जिसे वह पेरिस के समाज के उद्दाम जीवन की भँवर में छोड़ आया था उसीने आनन्द से चिल्लाकर उसे आलिंगनाबद्ध कर लिया —

"मैं अभी अभी पहुँचा हूँ, सीधे तुम्हारे पास दौड़ा आ रहा हू। पेरिस के हमारे सभी परिचितों ने तुम्हें शुभकामना भेजी है, तुम्हारी अनुपस्थिति के लिए दुःख प्रकट किया है। हाँ काउन्टेस द— ने तुमसे मुलाक़ात करने को कहा है, यह लो तुम्हारे नाम उनका पत्र।"

इब्राहिम ने थर थर काँपते हुए पत्र को लेकर हस्ताक्षर की परिचित लिखावट की ओर देखा—अपनी आँखों पर उसे विश्वास नहीं हुआ।

कोरसाकोव कहता गया—"मुझे इस बात की खुशी है कि इस वर्वर पितर्सबुर्ग की असहनीय एकरसता ने तुम्हें निगल नहीं लिया है। यहाँ क्या

पु—इ

हो रहा है, कौन क्या कर रहा है? तुम्हारा दरजी कौन है? तुम्हारे यहाँ क्या कम से कम एक भी आपेरा बना है?"

इब्राहिम ने बेसुधी की हालत में उत्तर दिया कि सम्राट इस वक्त जहाज़ घाट पर काम में व्यस्त हैं।

कोरसाकोव हँस पड़ा, "समझा, तुम्हारा मन इस समय मुझसे बातें करने लायक नहीं है, फिर कभी दिल खोलकर बातें होंगी। सम्राट से मिलने जाऊँ।"—यह कह कर वह एक पैर पर घूमकर कमरे से निकल गया।

अपने को एकान्त में पाकर इब्राहिम ने जल्दी से पत्र खोल डाला। प्रतारण और विश्वास भंग के लिए झिड़कते हुए काउन्टेस ने कोमल मधुर भंगिमा में उसे उलाहना देते हुए लिखा है—"तुम कहते हो कि मेरी शान्ति तुम्हारे लिए सबसे मूल्यवान वस्तु है। इब्राहिम, यह बात अगर सच होती तो तुम्हारे चले जाने की अनहोनी ख़बर ने मुझे जिस हालत में पहुँचा दिया था क्या तुम मुझे उसके हाथों में सौंप सकते थे? तुम्हें डर था कि मैं तुम्हें लम्बे अरसे तक बाँधे रख सकती हूँ। लेकिन जान लो: तुमसे मुहब्बत करने पर भी तुम्हारे मंगल के लिए और जिसे तुम अपना कर्त्तव्य समझते हो उसके चरणों पर अपने प्रेम तक को निछावर कर सकती हूँ।" भाव-विह्वल भाषा में प्रेम का वचन देते हुए और यद्यपि उनमें फिर मुलाक़ात की कोई आशा नहीं है फिर भी कम से कम बीच-बीच में पत्र लिखने का अनुरोध करते हुए उन्होंने पत्र को समाप्त किया था।

इब्राहिम ने उत्तेजित होकर पत्र की अमूल्य पंक्तियों को बारम्बार चूमते हुए बीस बार पढ़ डाला। काउन्टेस के बारे में कुछ सुनने के लिए उतावली अधीरता से उसका हृदय पीड़ित हो रहा था। कोरसाकोव से फिर मुलाक़ात होने की आशा में जलसेना विभाग के दफ्तर में जाने के लिए उठ खड़ा हुआ, लेकिन दरवाज़ा खुला और कोरसाकोव ने फिर प्रवेश किया। इसी बीच उससे सम्राट की मुलाक़ात हो चुकी थी और उसे देखने से लगता था कि वह अपने आप से बहुत संतुष्ट है। वह इब्राहिम से बोला "आँत्रर न्यू [तुमसे कह रहा हूँ], सम्राट एक विचित्र आदमी हैं। ज़रा सोचो तो, एक नये जहाज़ के मस्तूल पर एक मोटा कुर्ता पहिने सम्राट दिखाई पड़े।

मुझे एक सीढ़ी पर खड़ा होना पड़ा, वहाँ इतनी जगह नहीं थी कि सम्मान-पूर्वक झुक कर प्रणाम कर सकूँ। मैं बिलकुल भौचक्का रह गया, मेरी ज़िन्दगी में ऐसी बात कभी नहीं हुई। ख़ैर, सम्राट ने क़ागज़ात पढ़कर मुझे सिर से पैर तक देखा, शायद वेशभूषा की रुचि और फ़ैशन देखकर वह विस्मित और प्रसन्न हुए थे। जो भी हो, उन्होंने हँस कर आज की सभा में आने को कहा। लेकिन पितर्सबुर्ग में मैं बिलकुल परदेशी हूँ; छ साल विदेशों में रह कर यहाँ के रीति-रिवाज मैं बिलकुल भूल गया हूँ। कृपा करके मुझे अपने साथ ले चलो और यहाँ के लोगों से मेरा परिचय करा दो।"

इब्राहिम राज़ी हुआ और जिसकी आशा में उसका हृदय बेचैन हो रहा था उसी विषय की ओर वार्तालाप को मोड़ने की उसने चेष्टा की।

—"अच्छा, काउन्टेस द··· का क्या समाचार है ?"

—"काउन्टेस ? तुम्हारे चले आने से पहिले बहुत दुखी हुई थीं। इसके बाद समझ ही रहे हो, धीरे धीरे अपने को सम्भाल कर नया प्रेमी ठीक कर लिया है। किसे जानते हो ? लम्बे तगड़े मारक्विस 'र'···को। तुम अपनी हबशी आँखों से मेरी ओर घूर क्यों रहे हो ? या यह सब तुम्हें अजीब लगता है ? सचमुच ही क्या तुम नहीं जानते कि वेदना के बोझ को अधिक दिनों तक ढोना मानव स्वभाव, विशेषकरके नारी स्वभाव का विरोधी है ? इस बात को तुम ज़रा अच्छी तरह से सोच देखो, मैं चलूँ थोड़ासा आराम करूँ। लेकिन मेरे साथ घूमना न भूलना।"

इब्राहिम का हृदय किन अनुभूतियों से भर उठा ? द्वेष ? क्रोध ? निराशा ? नहीं। गहरे विषाद की परतों ने उसके हृदय को आच्छन्न कर लिया। वह मन ही मन बोला, "इसे मैंने पहिले ही सोचा था, यह तो होता ही।" काउन्टेस के पत्र को खोलकर उसने फिर पढ़ा, सिर झुक गया, कटु वेदना से वह रोने लगा। वह बहुत देर तक रोया। आँसुओं ने उसके हृदय के बोझ को कुछ हल्का किया। घड़ी की ओर नज़र डाल कर उसने देखा कि, निकलने का वक्त हो गया है। आज अगर वह अकेला रह पाता ! लेकिन उस दिन सभा का बहुत ज़रूरी काम था और सम्राट ने अपने सभी आदमियों को आज उपस्थित रहने के लिये

खासतौर से कह दिया था। वह कपड़े पहन कर कोरसाकोव की तलाश में निकल पड़ा।

कोरसाकोव ड्रेसिंग-गाउन पहने बैठा एक फ्रांसीसी किताब पढ़ रहा था। इब्राहिम को देख कर बोला, "इतनी जल्दी ?"

इब्राहिम बोला, "देखो, साढ़े पाँच बज गए हैं। हमें देर हो जायगी। जल्दी से कपड़े पहन लो, फिर निकल पड़ें।"

कोरसाकोव ने हंगामा मचा दिया, जी-जान से घंटी बजाने लगा। नौकर दौड़ते हुए आ पहुँचे। वह जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा। फ्रांसीसी नौकर ने उसके लाल एड़ीवाले जूते, नीले मखमल का पैन्ट, चटकीले छापवाली गुलाबी शर्ट ला दी। बग़लवाले कमरे में बालों की टोपी में पाउडर लगाया जा रहा था। वह लाई गई। कोरसाकोव ने अपने घुटे हुए सिर को उसमें घुसा दिया। तलवार और दस्ताने माँग आईने के सामने दशेक बार इधर उधर घुमा फिरा इब्राहिम से बोला कि वह तैयार है। नौकरों ने उसे भालू के चमड़े का पोस्तीन पहना दिया। वे 'ज़िम्नि द्वरेत्स' [शीत प्रासाद] की ओर चल पड़े।

कोरसाकोव ने प्रश्नों की झड़ी लगाकर इब्राहिम को परेशान कर दिया— पितर्सबुर्ग में सब से बढ़कर सुन्दरी कौन है ? श्रेष्ठ नर्तकी के तौर पर कौन मशहूर है ? आजकल किस नाच का सब से अधिक चलन है ? बड़ी अनिच्छा से इब्राहिम ने उसके कौतूहल को मिटाया। इसी बीच वे राजमहल के पास पहुँच गये थे। लान पर बहुत सी लम्बी-लम्बी स्लेज गाड़ियाँ, पुराने ढँग की 'कलिमागा' और सुनहले रंग की 'कारेता' गाड़ियाँ खड़ी हुई थीं। पोर्च में वर्दी पहने बड़ी-बड़ी मूछोंवाले कोचवान भीड़ किए हुये थे, पिन से लगाये डैनोंवाली भड़कीली पोशाक-वाले गाड़ी के खवास, हसर, बालक नौकर और कुरूप नौकरों का दल था। वे अपने मालिकों के ओवरकोट और मफ़लर का बोझ ढोते फिर रहे थे। उन दिनों के अभिजात सामंतों के मतानुसार वेश-भूषा बड़ी ज़रूरी चीज़ थी। इब्राहिम को देखकर उनमें कानाफूसी शुरू हो गई—

"हबशी, हबशी सम्राट का हबशी !"

वह जल्दी से कोरसाकोव को रास्ता दिखाकर इस अद्भूत और विचित्र नौकरों की भीड़ के बीच से ले गया। दरवान ने उनके लिए दरवाज़ा पूरी तरह खोल दिया। वे हाल में आ घुसे। कोरसाकोव अचरज से अवाक रह गया...एक

विशाल कमरा था. मोम बत्तियाँ जल रही थीं, लेकिन तम्बाकू के धुयें से बत्तियों की रोशनी धीमी होती जा रही थी। कंधे पर नीला फ़ीता लगाये 'वेल्भोज़ार्जे' झुण्ड, राजदूत, विदेशी व्यापारी, हरी वर्दीवाले सेना के अफसर, डोरीदार पैंट और जाकिट पहने जहाज़ के होशियार कारीगर निरंतर बाजे के ताल के साथ हाल में झुण्ड बनाकर कभी आगे बढ़ रहे थे तो कभी पीछे हट रहे थे। दीवाल के किनारे भद्रमहिलायें बैठी हुई थीं। उनकी पोशाक का सोना-चाँदी चमक रहा था। बड़े घेरेवाले घाघरों के बीच उनकी क्षीण कटि मृणाल की भाँति लग रही थी। उनके कानों, अलकों और गले में हीरे चमक रहे थे, सुवेश सुन्दर तरुणों की प्रतीक्षा में आनंद से चंचल भंगिमा में वे कभी दाहिने तो कभी बायें घूम रही थीं। नाच शुरू हो गया था। अधेड़ स्त्रियाँ पुरानी और हाल की पोशाक को होशियारी से मिला लेने की कोशिश कर रही थीं। ज़ारिना नतालिया किरिनोव्ना सेवल-फर की टोपी जैसा मुकुट, खरद और मान्तिलिया को देख कर न जाने क्यों सराफान और दुशेग्रेइका की बात याद आ जाती थी। लगता था, वे मानो खुशी से कहीं अधिक विस्मित होकर ही इस नये खेल में सम्मिलित हुई थीं। वे झुँझला कर तिरछी निगाहों से हालैण्ड के मल्लाहों की स्त्रियों और लड़कियों की ओर देख रही थीं। मानो घर ही पर हैं इस तरह वे बारीक डोरिया कपड़े का घाघरा और लाल ब्लाउज़ पहने हँसी मज़ाक करते हुए मोज़ा बुनती जा रही थीं। कोरसाकोव बिलकुल भौचक्का रह गया। नये मेहमानों को देख कर नौकर ट्रे में गिलास और शराब ले आया।

"क दियाब्लैस्का तू स्ला" [यह सब मामला क्या है ?]—धीमी आवाज़ में कोरसाकोव ने इब्राहिम से पूछा।

इब्राहिम से हँसे बिना नहीं रहा गया। सौन्दर्य और वेश-भूषा से चकाचौंध करती हुई सम्राज्ञी और राजकुमारियाँ मेहमानों की बग़ल से गुज़र रही थीं और अभिनन्दन व्यक्त करने की भंगिमा में उनसे बातें कर रही थीं। सम्राट उनसे बातें कर रहे थे। उनसे मुलाक़ात करने के लिए निरन्तर चक्कर काटती हुई भीड़ को ठेलकर वह ज़बर्दस्ती वहाँ जा पहुँचा। वहाँ जो लोग बैठे हुए थे उनमें अधिकांश विदेशी थे। वे गंभीरता के साथ मिट्टी के पाइप और मिट्टी के पानपात्र को खाली करते जा रहे थे। टेबुल पर पानी और शराब की बोतलें, तम्बाकू भरे चमड़े के थैले, पञ्च भरे गिलास और शतरंज की बिसातें बिखरी हुई थीं। इसी में से एक टेबिल के किनारे

बैठे एक वृषस्कन्ध अँग्रेज जहाजी के साथ प्योत्र चौसर खेल रहे थे। तम्बाकू का धुवाँ छोड़ते हुए वे परस्पर का अभिवादन कर रहे थे। प्रतिद्वन्दी के एक अनहोनी चाल देने पर प्योत्र ऐसी चिन्ता में डूब गये थे कि कोरसाकोव उनके इर्द-गिर्द कितना भी चक्कर क्यों न काटे, वे उसे देख ही नहीं पाये। इसी समय सीने पर बाकायदा फूलों का एक गुलदस्ता लगाये एक भारी-भरकम सज्जन ने कमरे में प्रवेश कर ऊँची आवाज़ में घोषणा की कि नाच शुरू हो गया है। घोषणा कर के ही वे निकल गये। उनके पीछे बहुत से मेहमान गये, कोरसाकोव भी उनके साथ गया।

एक विचित्र दृश्य देखकर वह हैरान रह गया। एक करुण बाजे के साथ-साथ सारे नाच घर में भद्रमहिलायें और सुवेश सज्जन दो पाँतों में आमने-सामने खड़े हो गये। सज्जनों ने झुक कर सिर नवाया, महिलाओं ने और भी झुक पहले घुटने मोड़ कमर नवाई, फिर दाहिनी ओर घूम फिर बाईं ओर घूम फिर दाहिनो ओर फिर बाईं ओर घूम इस तरह किया। इस विचित्र ढंग से समय काटते देख कोरसाकोव होठों को काट आँख फाड़े देखता रहा। घुटने मोड़कर कमर और सिर नवाना करीब आध-घंटे तक चलता रहा। अन्त में नाच रुका, फूलों के गुलदस्ते वाले मोटे सज्जन ने घोषणा की कि औपचारिक नाच यहीं समाप्त हुआ और बाजेवालों को 'मेनुएत' बजाने का हुक्म दिया। कोरसाकोव आनन्दित होकर नाचने के लिए तैयार हुआ। कमसिन मेहमानों में एक लड़की उसे खास तौर से अच्छी लगी थी। उम्र करीब सोलह की होगी, काफी भड़कीली पोशाक पहने हुए थी, लेकिन उसमें रुचि की छाप थी। देखने में कठोर गम्भीर बूढ़े सज्जन की बग़ल में वह बैठी हुई थी। कोरसाकोव फुर्ती से लड़की के पास जाकर उससे अपने संग नाचने के लिए सम्भ्रम के साथ अनुरोध किया। तरुणी सुन्दरी ने कुछ घबराकर उसकी ओर देखा, लगा की क्या उत्तर देना चाहिये इसे वह नहीं जानती है। उसकी बग़लवाले सज्जन ने भौंहें तरेरी। कोरसाकोव तरुणी के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन फूलों के गुच्छेवाले सज्जन ने उसके पास आ उसे नाच घर के बीच में ले जाकर गम्भीरता के साथ कहा "सज्जन, आपने अपराध किया है। पहला अपराध किया है उस तरुणी के पास जाकर उसे तीन बार यथायोग्य अभिवादन न

करके। दूसरा अपराध किया है उसे खुद ही चुनकर, क्योंकि 'मेनुएत' नाच में संगी चुनने का अधिकार महिलाओं को है, सज्जनों को नहीं। इसलिए आपको कड़ी सज़ा मिलेगी। सज़ा यह होगी कि बड़े पानपात्र को आपको एक साँस में खाली करना पड़ेगा।"

कोरसाकोव का विस्मय क्षण-क्षण पर बढ़ता ही गया। एक मिनट में मेहमानों ने उसे घेर लिया, हल्ला करते हुए नियम मानकर चलने की माँग की। हँसी और चीत्कार सुनकर प्योत्र बग़लवाले कमरे से निकल आये, इस तरह के दंड के पालन के वक्त व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहना वे बहुत पसन्द करते थे। उन्हें देख कर भीड़ ने रास्ता छोड़ दिया, वे वृत्त में आ घुसे। वहाँ अपराधी और उसके सामने 'मालवाज़िया' से भरे विशाल पानपात्र को हाथ में लिये नाच की मजलिस के अध्यक्ष खड़े हुए थे। अपराधी को स्वेच्छा से इस प्रथा का पालन करने के लिए वे व्यर्थ ही समझा रहे थे। कोरसाकोव को देखकर प्योत्र बोल उठे—

"हाय हाय भाई, तुम फँस गये। पी डालो, अब भौंहें सिकोड़ने से क्या होगा!"

कोई चारा न था। बेचारे बाँके ने एक साँस में पूरे पानपात्र को खाली करके उसे अध्यक्ष के हाथों में लौटा दिया।

प्योत्र उससे बोले, "देखो कोरसाकोव तुम्हारा पैन्ट मख़मल का है। मैं खुद ही मख़मल का पैन्ट नहीं पहनता, यद्यपि मैं तुमसे अधिक बड़ा आदमी हूँ। यह पैसे की बर्बादी है। देखो, मुझे फिर कहने की ज़रूरत न पड़े।"

इस बात को सुन कोरसाकोव ने भीड़ छोड़कर निकल जाना चाहा, लेकिन वह लड़खड़ाते हुए गिरा जा रहा था। यह देखकर सम्राट और उनके जलसे के साथी कितने खुश हुए यह बताया नहीं जा सकता। इस घटना से असली कार्यक्रम का ऐक्य और आकर्षण विघ्नित नहीं हुआ, बल्कि इससे उसमें और भी जान आ गई। सुन्दर पोशाकवाले तरुणों ने पैर पटक सिर नीचा कर और महिलाओं ने घुटने मोड़ कमर नवा ताल की ओर तनिक भी ध्यान न दे एड़ियाँ पटकने लगीं। कोरसाकोव इस सामूहिक आनन्द में सम्मिलित नहीं हो सका। उसने जिस लड़की को चुना था वह अपने पिता गाव्रिला

अफनासियेविच के आदेशानुसार इब्राहिम के पास आ नील नयनों को झुका संकोची हाथों को उसके हाथ में रख दिया। इब्राहिम उसके संग 'मेनुएत' नाच नाच कर उसे अपनी पुरानी जगह ले गया। इसके बाद कोरसाकोव को ढूँढ़ कर नाच घर से बाहर ले जा गाड़ी में बैठा कर घर ले गया।

रास्ते में जाते-जाते कोरसाकोव पहले स्पष्ट स्वर में बोला, "जहन्नुम में जाय नाच की मजलिस! जहन्नुम में जाय विशाल पानपात्र!" लेकिन ज़ल्द ही वह गहरी नींद में सो गया। उसे पता ही न चला कि वह किस तरह घर पहुँचा, किस तरह पोशाक बदल कर उसे लिटाया गया। अगले दिन वह सिर दर्द लेकर जागा, पैर पटकने की आवाज़, घुटने मोड़ कमर नवाने, तम्बाकू के धुयें, फूलों के गुलदस्तेवाले विशाल पानपात्र लिये सज्जन की धुँधली सी याद आई......।

चार

भोजन - समय हमारे पूर्वज नहीं शीघ्रता करते थे।
चम्मच और सुरा के प्याले धीरे धीरे चलते थे॥
—रुसलान और लुदमिला

अब गाव्रिला अफनासियेविच र्ज़ेवस्की से सहृदय पाठकों का परिचय करा देना उचित है। वे एक प्राचीन सम्भ्रान्त सामन्त परिवार की सन्तान थे, विशाल सम्पत्ति के मालिक, अतिथिपरायण, बाज़ चिड़िया से शिकार करने का उन्हें बड़ा शौक था। उनके अनगिनत नौकर-चाकर थे। यथार्थ में वे सच्चे रूसी ज़मीन्दार थे। उनके शब्दों में कहा जाय तो, वे जर्मन हवा बिलकुल सहन नहीं कर पाते थे। इसीलिए पारिवारिक जीवन में अपनी प्यारी उस युग की पुरानी व्यवस्था को कायम रखने की चेष्टा की थी।

उनकी बेटी की उम्र सत्रह की थी। कम उम्र में ही उसकी माँ मर गई थी। उसका पालन-पोषण पुराने ढंग से हुआ था अर्थात् मौसियाँ, बुआएँ, सखी-सहेलियाँ और दासियाँ उसे घेरे रहतीं। लिखना पढ़ना वह

बिलकुल नहीं जानती थी, सुनहरे धागे से सीना जानती थी। यद्यपि उसके पिता को सभी प्रकार की विदेशी चीज़ें नापसन्द थीं, फिर भी वह अपने मकान में बन्दी स्वीडिश अफ़सर से जर्मन नाच सीखने का विरोध नहीं कर सके। उस सुयोग्य नृत्य-शिक्षक की उम्र पचास की थी, नार्वा की लड़ाई में उसके दाहिने पैर में गोली लगी थी। इसीलिए 'मैनुएत और कुरान्त' नाच के लिए वह अयोग्य था, लेकिन बड़ी आश्चर्यजनक कला-कौशल और चंचलता के साथ उसका बायाँ पैर नाच के सबसे कठिन कामों को करता जाता। उसकी छात्रा ने इस प्रचेष्टा की मर्यादा रखी थी। नतालिया गाव्रिलोवना नाच के जलसे में सबसे अच्छी नाचनेवाली के रूप में मशहूर थी। और यह ख्याति ही आंशिक रूप से कोरसाकोव के उस व्यवहारका कारण थी। अगले दिन वह गाव्रिला अफनासियेविच से माफ़ी माँगने आया। लेकिन इस तरुण छैल चिकनिया का सर्वज्ञ का हाव-भाव और विलासिता गर्वीले सामन्त को नहीं भाया। उन्होंने व्यंग में उसका नाम फ्रान्सीसी बन्दर रख दिया।

उस दिन उत्सव का दिन था। गाव्रिला अफनासियेविच कुछ संबंधियों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पुराने हाल में एक लम्बी टेबिल सजाई गई थी। स्त्रियों और कन्याओं को लिये मेहमान आ रहे थे, सम्राट के आदेश और उनके व्यक्तिगत उदाहरण से स्त्री-कन्याएँ पारिवारिक क़ैद से रिहा हुई थीं। नतालिया गाव्रिलोवना सोने के पानपात्रों से सजी चाँदी की ट्रे लेकर हर मेहमान के पास जा रही थी। वे एक-एक पात्र पी रहे थे, पिछले ज़माने में ऐसी हालत में पेय के साथ एक एक चुम्बन भी मिलते थे। उसके उठ जाने पर वे अफ़सोस कर रहे थे। वे मेज़ के किनारे जा बैठे। गृहस्वामी की बग़ल में पहले आसन पर उनके ससुर प्रिन्स बोरिस अलेक्सियेविच लीकोव, जो सत्तर वर्ष के एक सम्भ्रान्त सामन्त थे, बैठे थे। दूसरे मेहमानों ने वंश की कुलीनता के अनुसार आसन ग्रहण किया। उन्हें देख कर 'मेस्तनिचेस्तवो'* के सुख के दिन याद आ रहे थे। पुरुष एक

* पन्द्रहवीं से सत्रहवीं सदी तक रूस में राज्य-शासन के कामों के लिए लोगों के पद का चुनाव योग्यता के आधार पर नहीं, वंश की कुलीनता और मर्यादा के आधार पर होता था। जिस रीति से यह चुनाव होता था रूसी भाषा में उसे 'मेस्तनिचेस्तवो' कहते हैं।

पाँत में और स्त्रियाँ दूसरी पाँत में बैठी हुई थीं। बिलकुल आखिरी आसन पर बाकायदा बैठी हुई थीं—उस पुराने किस्म का ब्लाउज़ और अहिवाती की टोपी पहने सम्भ्रान्त परिवार की प्रधान परिचारिका, बनी ठनी तीस वर्ष की बच्ची कारलित्सा जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और नीले रंग की पुरानी वर्दी पहने बंदी स्वीडिश बैठे हुए थे। अनगिनत प्लेटों से सजी टेबिल को सदा व्यस्त असंख्य नौकर घेरे हुए थे। इनमें क्रूर दृष्टि बड़ी तोंदवाला चलने फिरने में अपारग भंडारी सबसे अधिक दृष्टि आकर्षित कर रहा था। भोजन के पहिले दौर में सिर्फ़ हमारे प्राचीन देशी भोजन थे। सिर्फ़ प्लेटों और चम्मचों की आवाज़ ही साधारण नीरवता को भंग कर रही थी। अन्त में प्रीतिकर बातों से मेहमानों को संतुष्ट करने की आवश्यकता देख गृहस्वामी बोले, "एकिमोव्ना कहाँ है? उसे यहाँ बुला लाओ।" कई नौकर विभिन्न दिशाओं में दौड़ पड़े, लेकिन उसी क्षण एक बृद्धा महिला सलमेसितारे और फूलों के काम की हुई पोशाक पहिन गुलाबी रंग चुपड़े मोटे कपड़े का रबरंग पहने खुले गले......नाचने के ढंग से कदम डालती गाने की एक कड़ी गुनगुनाती हुई आ घुसी। उसके आविर्भाव से सभी खुश हुए। प्रिन्स लीकोव ने कहाः "क्यों जी एकिमोव्ना कैसी हो?" बड़े मज़े में हूँ। बर का रास्ता देखती हुई नाच-गाकर दिन काट रही हूँ।

"कहाँ थी बुद्धू"—गृहस्वामी ने पूछा।

"सजधज रही थी; प्यारे मेहमानों के लिए; सम्राट के आदेश से, सामन्त के आदेश से धार्मिक उत्सव के लिए, जर्मन फैशन दिखा कर सबको फँसाने के लिए।"

इस बात को सुन कर ज़ोरों का कहकहा लग गया और 'बुद्धू' गृहस्वामी की कुर्सी के पीछे अपनी जगह पर खड़ी रही।

—"झूठ बोलते बोलते बुद्धू बीच बीच में सच भी बोल बैठती है।"—गृहस्वामी की बड़ी बहन तातियाना अफनासियेवना बोली। गृहस्वामी उनकी बड़ी श्रद्धा करते थे। —"सचमुच ही आज के फैशन पर सारा संसार फँसेगा। देखिये, आपलोग जब दाढ़ी बना छोटे 'काफतान' पहने हैं तो स्त्रियों की पोशाक के बारे में कुछ कहने को नहीं रह गया है। हाँ, 'शराफान', कुमारी लड़कियों या अहिवातियों के सिर पर के रूमाल को लेकर ही तमाम

गड़बड़ी पैदा हुई है। आजकल की लड़कियों की ओर देखने से हँसी भी आती और दुःख भी होता है: फुलाये बाल—जिन पर मानो चर्बी पुती, फ्रान्सीसी मैदा* छिटका था, पेट इस तरह कसकर बँधा हुआ था मानो फट जायेगा, नीचे पिन से अटकाया हुआ है। 'कलीमगा' गाड़ी में बैठना हो तो पीपे की तरह बैठना होता है। दरवाज़े में झुककर घुसना पड़ता है। न बैठते बनता है न उठते और न साँस लेते। मेरी 'गोलूबुस्का' ओं का जीवन सचमुच ही बड़ी पीड़ा का है।

किरीला पेत्रोविच त···बोले "ओ, तातियाना अफनासियेवना", रियाज़ान के जंगी लाट होने पर उन्हें तीन हज़ार दास और तरुणी भार्या मिली थी, इसके अलावा पाप के रास्ते उन्होंने और भी बहुत सी चीज़ें प्राप्त की थीं। —"मेरा मत है, स्त्री की जैसी इच्छा हो बने ठने; चाहे वह 'कुताफिया'** में हो, चाहे 'बल्दीखान'*** में हो। बस केवल यह न हो कि हर महीने पहिले के अच्छे ख़ासे कपड़ों को फेंक कर नये बनवाया करे। पुराने ज़माने में दादी का 'शराफान' पोती को दहेज में मिला करता था और अब 'रबरंद' की ओर ज़रा देखिये; आज मालकिन पहने हैं, कल महरी पहनेगी। किया क्या जाय? देखिये, रूस के अभिजातों का क्या हाल हुआ है! दुर्भाग्य, कितना दुर्भाग्य है!"—यह कह कर उन्होंने लम्बी साँस छोड़ कर अपनी पत्नी मारिया इलिचना की ओर देखा। लगा, पुराने की प्रशंसा और नये फैशन का विरोध मारिया इलिचना को बिलकुल पसन्द नहीं आया। उसकी तरह दूसरी सुन्दरियाँ भी रुष्ट थीं, लेकिन वे मौन साधे रहीं क्योंकि, उन दिनों विनम्र व्यवहार तरुणी नारी का एक बहुत ज़रूरी गुण माना जाता था।

कड़वे शोरवे के प्याले को हिलाते हुए गाव्रिला अफनासियेविच बोले, "लेकिन ज़िम्मेदार कौन है? क्या हम खुद ही नहीं? कमसिन स्त्रियाँ मूर्खता करती हैं और हम उन्हें सह देते हैं।"

किरीला पेत्रोविच बोले, "इच्छा न भी हो तो भी हम कर ही क्या सकते

* फ्रासीसी मैदा—पाउडर। सम्पादक

** कुताफिया—प्राचीन रूसी पोशाकें जिसे पहिनने से लोग ढीलेढाले लगते हैं।—सं०

*** बल्दीखान—एक प्रकार की रूसी टोपी।—सं०

हैं? शायद काई कोई हो सकता है कि स्त्री को हरम में बन्द रखने में आनन्द पाते हों। लेकिन उधर बाजे के ताल के साथ नाच की मज़लिस में बुलाया जाता है। पति चाबुक ढूँढ़ते हैं, स्त्री साज-पोशाक ढूँढ़ती है! ओफ़, यह नाच की मजलिसें हैं! भगवान ने हमारे पापों के लिए यह सजा दी है।"

मारिया इलिचना मानो सुई पर बैठी हुई थीं, उनकी जीभ में खुजली हो रही थी। अन्त में अब सहा नहीं गया, पति की ओर मुड़ कड़वी हँसी हँस कर पूछा, नाच की मजलिसों में कौन सी बरी बात देखी है?

उत्तेजित होकर पति ने जवाब दिया, "इसमें बुरी बात यह है कि, इसके शुरू होने के बाद से ही पति-पत्नी में अनबन हो रही है। स्त्री को पति से डरना चाहिए, इस धर्म-नीति की बात स्त्रियाँ भूलती ही जा रही हैं। वे अब घर गृहस्थी की बात नहीं सोचती हैं, सोचती हैं नये फैशन की बात, यह नहीं सोचतीं की पति की भलाई कैसे होगी, सोचती हैं चपलमति अफसरों की दृष्टि कैसे आकर्षित की जाय। बतलाइये तो 'सुदारिनिया',* रूसी अभिजात परिवार की मालकिन अथवा तरुणी नारी को तम्बाकू पीने-वाले जर्मनों अथवा महरियों के साथ देख पाना बहुत संगत है? अधिक रात तक नाच और कम उम्र के पुरुषों के साथ हँसी-मज़ाक की बात कभी सुनी है क्या? नाते-रिश्तेवालों से ज़रा अच्छा बर्ताव करना अच्छा होता, लेकिन सो नहीं, लेकिन करेंगी अपरिचित पराये पुरुष के साथ।"

"मुँह खोला कि शेर के मुँह में गये,"...भौंहें सिकोड़ कर गाव्रिला अफनासियेविच बोला।—"फिर भी मानता हूँ, नाच की मजलिस मुझे नापसन्द है। तिसपर मतवाले से टकराओगे अथवा हास्यास्पद तरीके से तुम्हें मतवाला बना देंगे। इसके अलावा, कोई लफंगा तुम्हारी बेटी से कुछ कर बैठेगा। आजकल के तरुण इस कदर बिगड़ गये हैं कि उनकी जोड़ी मिलना मुश्किल है। यही लीजिये, स्वर्गीय एवग्राफ सेर्गेयेविच कोरसाकोव का बेटा नाच की पिछली मजलिस में नताशा से ऐसा हंगामा कर बैठा कि मारे गुस्से के मैं लाल हो उठा था। अगले दिन देखा, कोई सीधे मेरे पास आ रहा

* सुदारिनिया—माननीया सम्भ्रांत महिला।—(रूसी)

है। सोचा कौन आ रहा है? प्रिन्स अलेकसान्द्र दानिलोविच तो नहीं है? नहीं, आया इवान एवग्राफोविच! फाटक के पास से शान्तभाव से चलकर नहीं आ सका, आया दौड़ता हुआ। कितना पैर पटका। कितना बक-बकाया! बुद्धू एकिमोव्ना कितनी निर्ममता से उसे डंक मारती है। जो भी हो, विदेशी बंदर की नकल करो तो।"

बुद्धू एकिमोव्ना एक डिश का ढक्कन उठा टोपी की तरह कान पर दबा मुँह टेढ़ा कर पैर पटक चारों ओर घूम कर अभिवादन करने लगी, "मूसियें···मामजेल···नाच की मजलिस के··· पारदँ" अतिथियों को मज़ा आया, वे ठठा कर हँस पड़े!

जब हँसी की लहर धीरे-धीरे कम होने लगी तो बूढ़े प्रिन्स लोकोव ठहाके से निकल आये आँसू पोछते हुए बोले, "ढकने से फ़ायदा क्या? जर्मनों के देश से भाँड़ बनकर पवित्र रूस भूमि में लौटे हुए लोगों में कोरसाकोव पहला भी नही है, आखिरी भी नहीं है। हमारे लड़के वहाँ क्या सीखते हैं? पैर पटकना, न जाने किस भाषा में भगवान जानें—बकबक करना, बूढ़ों का सम्मान न करना और पराई स्त्री के पीछे चक्कर काटना। विदेशों में पढ़े हुए सभी तरुणों में (माफ़ करें) सम्राट का हबशी ही सबसे अधिक आदमी जैसा है।"

"ठीक कहा है,"—गाव्रिला अफनासियेविच ने हुँकारी भरी। "वह धीर स्थिर शान्त है। चपलता तनिक भी नहीं है···फाटक से आँगन में फिर कौन आया? कहीं विदेशी बंदर तो नहीं है? बकरे, तुम लोग मुँह बाये क्यों रह गये?" नौकरों की ओर मुड़कर वे बोले, "दौड़ो, उसे मना करो, लेकिन देखना, पहिले जिसमें···"

उन्हें बाधा देती हुई बुद्धू एकिमोव्ना चिल्ला पड़ी, "तुम क्या सपना देख रहे हो, बूढ़ी दाढ़ी? तुम क्या अंधे हो? सम्राट की गाड़ी है, सम्राट आये हैं!"

गाव्रिला अफनासियेविच कुर्सी से उछल कर उठे। सभी दौड़ कर खिड़की के पास गये। सचमुच ही उन्होंने सम्राट को देखा। वे अपने अर्दली के कंधे का सहारा लेकर बरामदे से आ रहे थे। हल्ला मच गया। गृहस्वामी सीधे प्योत्र की ओर दौड़े, नौकर बेवकूफ़ों की तरह इधर उधर दौड़ने लगे

अतिथि डर गये, और किसी-किसी ने जल्दी से घर लौटने की सोची। अचानक सामने के हाल में प्योत्र का उच्च कलकंठ सुनाई पड़ा। सभी चुप थे। आनन्द विभोर गृहस्वामी के साथ सम्राट कमरे में घुसे। हँसते हुए प्योत्र बोले, "अच्छी तरह हैं न सज्जनो" सभी ने सिर नवा कर अभिवादन किया। सम्राट की पैनी दृष्टि ने भीड़ के बीच से गृहस्वामी की तरुणी कन्या ढूँढ़ निकाली। उन्होंने उसे पास बुलाया। नतालिया गाव्रिलोवना बड़ी हिम्मत कर के उनके पास बढ़ गई। लेकिन उसके दोनों कान, यहाँ तक कि, दोनों कंधे तक मारे लाज के लाल हो उठे।—" तुम क्षण-क्षण अधिक सुन्दर होती जा रही हो,"—यह कह कर सम्राट ने यथारीति उसका चुम्बन किया। फिर अतिथियों की ओर मुड़कर बोले, "मैंने आप लोगों को बाधा पहुँचाई। आपलोग भोजन करने बैठे थे। मैं अनुरोध करता हूँ, आपलोग फिर बैठें, गाव्रिला अफनासियेविच, मुझे सेब की वोदका दीजिये।" गृहस्वामी मुख्य खानशामे के पास दौड़ पड़े और उसके हाथों से ट्रे छीनकर सोने के पानपात्र को खुद ही भर अभिवादन कर सम्राट के हाथों में दिया। प्योत्र ने पानकर एक बिस्कुट खा फिर अतिथियों से भोजन शुरू करने का अनुरोध किया। कालित्सा और परिवार की मुख्य परिचारिका के अलावा सभी पहिले की जगहों में बैठ गये। केवल उन दोनों ने ही सम्राट की उपस्थिति से धन्य हुई मेज़ पर बैठने की हिम्मत नहीं की। प्योत्र ने गृहस्वामी के पास बैठ अपने लिये शोरबा माँग लिया। सम्राट के अर्दली ने हाथी दाँत से बँधा लकड़ी का चम्मच, छुरी और हरे रंग के बेंटवाला हड्डी का काँटा सम्राट की ओर बढ़ा दिया क्योंकि, प्योत्र अपनी चीज़ों के अलावा दूसरे की चीज़ें कभी इस्तेमाल नहीं करते थे। क्षण भर पहिले की हल्ला-गुल्लावाली भोजसभा अब ज़बर्दस्ती लादी हुई नीरवता के बीच बढ़ चली। सम्राट के प्रति सम्मान और आनन्द से गृहस्वामी ने कुछ भी नहीं खाया, अतिथि भी बने ठने १७०१ ई० के अभियान के बारे में स्वीडिश बन्दी से जर्मन भाषा में सम्राट का वार्तालाप सानन्द सुन रहे थे। बुद्धू एकिमोव्ना तक ने कई बार सम्राट के प्रश्नों के उत्तर में इस तरह भीत शान्त उत्तर दिया था कि उससे उसका स्वाभाविक बुद्धूपन बिलकुल पकड़ में नहीं आया, अंत में भोज समाप्त हुआ। सम्राट उठ खड़े हुये, सभी अतिथि उनके बाद उठ खड़े हुये। वे

गृहस्वामी से बोले, "गाव्रिला अफनासियेविच, आप से मेरी एक गोपन बात है।" फिर गृहस्वामी का हाथ पकड़ ड्राइंगरूम में ले जा दरवाज़ा बन्द कर दिया। अतिथि भोजनकक्ष में बैठे ही सम्राट के इस अचानक आगमन के बारे में फुसफुसा कर बातें करने लगे। कहीं गुस्ताखी न हो जाय इस डर से थोड़ी ही देर में वे एक-एक कर विदा हुए। जाते समय उनलोगों ने गृहस्वामी की आतिथेयता के लिये धन्यवाद तक नहीं दिया। गृहस्वामी के ससुर, लड़की और बहन ने उन्हें एक-एक कर के धीरे-धीरे दरवाज़े तक पहुँचा दिया, फिर सम्राट के आने की प्रतीक्षा में भोजनकक्ष में प्रतीक्षा करने लगीं।

पाँच

तुमको बहू लाकर दूँगा,
नहीं तो चक्कीवाला
कहलाना छोड़ दूँगा।
—अब्लेसिमोव, "चक्कीवाला"
आपेरा में।

आधे घंटे के बाद दरवाज़ा खुला और प्योत्र बाहर निकल आये। प्रिन्स लीकोव, तातियाना अफनासियेवना और नताशा—इन तीनों के अभिवादन के उत्तर में वे मर्यादा-व्यंजक तरीके से सिर नवा प्रत्युत्तर दे सीधे बाहर के हाल की ओर चले गये। गृहस्वामी ने उनके लाल ओवरकोट को बढ़ा दिया, स्लेज तक उनके साथ गये और बरामदे के सामने खड़े होकर उन्होंने जो सम्मान दिखाया है उसके लिए फिर धन्यवाद दिया। प्योत्र चले गये।

भोजन घर में लौट आने पर गाव्रिला अफनासियेविच बहुत चिन्तित लग रहे थे। क्रुद्ध स्वर में उन्होंने नौकरों को मेज़ साफ़ करने का हुक्म दिया और नताशा को उसके कमरे में भेज दिया। बहन और ससुर को कहा कि, उनसे उन्हें ज़रूरी मामले पर सलाह करनी है। भोजन के बाद उन्हें

सोने के उस कमरे में ले गये जहाँ वे प्रायः विश्राम किया करते थे। बूढ़े प्रिन्स ओक लकड़ी के पलंग पर लेटे, तातियाना अफनासियेवना अपने पैर के नीचे टूल को खींचकर मख़मल से ढकी पुरानी कुर्सी पर बैठीं। गाव्रिला अफनासियेविच ने सभी दरवाज़े बन्द कर के पलंग पर प्रिन्स लीकोव के पैरों के पास बैठकर दबी आवाज़ में शुरू किया :

"सम्राट यूँही हमारे यहाँ नहीं आये थे। बतलाइये तो उन्होंने मुझसे किस विषय पर बातें की।"

"हम कैसे जानें भाई,". .तातियाना अफनासियेवना बोलीं।

ससुर बोले, "सम्राट ने क्या तुम्हें किसी लड़ाई की खबर लेने का हुक्म दिया है? काफ़ी दिन तो हो गये। या तुम्हें सम्राट का वैदेशिक प्रतिनिधि बनने के लिए अनुरोध किया है? मामला क्या है? सिर्फ़ अफसर होने से ही तो काम नहीं चलता, नामी लोगों को ही दूसरे सम्राट के पास भेजा जाता है।"

भौंहें सिकोड़ कर दामाद बोले, "नहीं, मैं पुराने विचारों का आदमी हूँ, आज हमारी उन्हें आवश्यकता नहीं है। हो सकता है रूसी सामन्त-गण आज के नये फ़ैशनबाज़, 'ब्लिन्निक'* और विदेशियों के मुखापेक्षी बने रहेंगे—यही असली बात है।"

तातियाना अफनासियेवना बोलीं, "तो भाई, वे इतनी देर तक तुमसे किस विषय पर बातें करते रहे। तुम क्या किसी मुसीबत में पड़े हो? भगवान रक्षा करें, दया करें।"

"जैसी तैसी मुसीबत, यह बात मेरे दिमाग़ में पहिले ही आई थी।"

"क्या हुआ है भाई? मामला क्या है?"

"मामला है नताशा को लेकर। सम्राट उसके लिये ब्याह का प्रस्ताव लेकर आये थे।"

"जय भगवान!"—क्रास बनाती हुई तातियाना अफनासियेवना बोलीं। "लड़की

*ब्लिन्निक—एक प्रकार का रूसी विस्कुट। इसे बेचनेवाले भी इसी नाम से पुकारे जाते हैं। यहाँ प्रिन्स मेंशिकोव के प्रति व्यंग किया गया है, क्योंकि, बचपन में वे बिस्कुट बेचा करते थे।—अनुवादक।

सयानी हो गई है, जैसा अगुआ है वर भी वैसा ही होगा। भगवान प्रेम दें, शुभ बुद्धि दें, बहुत सम्मान दें। सम्राट नताशा के लिये किसी वर की बात लाये हैं?

"हूँ,"···भर्राई आवाज़ में गाव्रिला अफनासियेविच बोले, "किस वर के लिये? हाँ तो किस वर के लिये?"

"किस के लिये बताओ न?"···प्रिन्स लीकोव फिर बोले। वे इसी बीच ऊघने लगे थे।

"अटकल लगाइये,"—गाव्रिला अफनासियेविच बोले।

"देखो भाई,"—बूढ़ी बहन बोलीं.—"हम अटकल कैसे लगायें? राज-परिवार में क्या लड़कों की कमी है? तुम्हारी नताशा को पाकर सभी प्रसन्न होंगे।

"दलगोरुकि है क्या?"

"नहीं, दलगोरुकि नहीं है।"

"भगवान उसका मंगल करें, वह बड़ा घमंडी है। कौन शेइन, त्रैकुरोव।"

"नहीं, यह भी नहीं वह भी नहीं।"

हाँ, मुझे भी वे पसन्द नहीं हैं। बड़े अस्थिरमति हैं। उन पर जर्मन विचारों का बहुत प्रभाव पड़ गया है। तो क्या मिलोस्लावस्की है?"

"नहीं, वह भी नहीं।"

"भगवान उसका मंगल करे, वे धनी हैं सही में मगर बुद्धू हैं। तो फिर कौन? एलेत्सको? लवोव? नहीं? तो क्या रागूज़िन्स्की? अब तुम्हीं बताओ, अब दिमाग़ काम नहीं करता है। सम्राट नताशा का ब्याह किससे करना चाहते हैं?"

"हबशी इब्राहिम के साथ।"

बृद्धा हाथ पटक कर हाय हाय कर उठी। प्रिन्स लीकोव तकिये से सिर उठा विभ्रान्त होकर बोले, "हबशी इब्राहिम से!" रोआँसे स्वर में बृद्धा बोली, "तुम भाई, अपनी प्यारी सन्तान की हत्या मत करो, हमारी नताशा को इस काले शैतान के पंजे में मत डालो।"

गाव्रिला अफनासियेविच बोले, "सम्राट ने इसके लिये मुझे, मेरे वंश को कृपापात्र बनाने का वचन दिया है। अब उनसे न कैसे करूँ।"

"क्या ?"—बूढ़े प्रिन्स चिल्ला उठे, इसी बीच उनकी नींद टूट गई थी "नताशा, मेरी नतिनी ब्याही जायेगी एक ख़रीदे गुलाम के संग!"

गाब्रिला अफनासियेविच बोले, "वंश के हिसाब से वह छोटा नहीं है, हबशी सुलतान की वह संतान है। मुसलमानों ने उसे बन्दी कर कुस्तुनतुनिया में बेच दिया था तब हमारे दूत ने उसे पाकर सम्राट को भेंट किया। उसे वापस पाने के लिये बहुत रुपये लेकर उसका बड़ा भाई रूस आया था और···"

"भाई गाब्रिला अफनासियेविच,"—वृद्धा ने रोकते हुये कहा—"बोवा करोलेविच और एरुस्लान लज़ारेविच की कहानी हमने सुनी है। बेहतर हो कि सम्राट के प्रस्ताव के उत्तर में तुमने क्या कहा वह हमें बताओ।"

"मैंने उनसे कहा कि वे ही हमारे मालिक हैं और हर मामले में उनकी बात मानकर चलना ही हमारा काम है।"

उसी क्षण दरवाज़े के पीछे एक आवाज़ सुनाई पड़ी। गाब्रिला अफनासियेविच दरवाज़ा खोलने गये, लेकिन उसके पीछे किसी चीज़ का दबाव अनुभव कर उन्होंने ज़ोरों का धक्का लगाया। दरवाज़ा खुल गया। देखा कि फ़र्श पर खून से लथपथ नताशा बेहोश पड़ी हुई है।

सम्राट ने जब उसके पिता को लेकर दरवाज़ा बन्द किया, उसी समय नताशा का कलेज़ा ठंडा हो गया था। न जाने कौन सी पूर्वानुभूति उसके कानों में कह गई थी कि मामला उसी को लेकर है। जब बुआ और दादा से बातें करनी हैं कहकर गाब्रिला अफनासियेविच ने उसे उसके कमरे में भेज दिया था तब नताशा नारीसुलभ कौतूहल को दबा नहीं सकी, इसलिये भीतर के कमरों के अन्दर से होकर वह चुपचाप आकर सोने के कमरे के दरवाज़े के पास खड़ी हुई। इस भयंकर वार्तालाप का एक-एक शब्द उसने सुना। जब पिता की अंतिम बात उसके कानों में पहुँची तो यह अभागी लड़की बेहोश होकर लोहे की उस सन्दूक पर गिर पड़ी जिसमें उसका दहेज़ रखा हुआ था। उसका सिर फट गया था।

सब लोग दौड़े। नताशा को उठाकर उसके कमरे में ले जाकर पलंग पर लिटा दिया गया। कुछ देर के बाद उसे होश हुआ, आँखे खोल कर देखा, लेकिन पिता, बुआ किसी को भी पहचान न सकी। उसे बड़े ज़ोर का बुखार था, वह ज़ार के बारे में, हबशी के ब्याह के बारे में अंटसंट

बकती जा रही थी। इसके बाद शिकायत भरी तेज आवाज़ में चिल्ला उठी, "वैलेरियान, मेरे सर्वस्व! मुझे बचाओ! वह देखो वे आ रहे हैं..." तातियाना अफनासियेवना ने बेचैनी से भाई की ओर देखा। भाई का चेहरा पीला पड़ गया था। होठ को दाँतों तले दबाये वे सोने के कमरे से बाहर चले गये। वृद्ध प्रिन्स सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाते हैं, वे नीचे ही थे। गाव्रिला अफनासियेविच उनके पास लौट आये। वृद्ध ने पूछा, "नताशा का क्या हाल है!" क्षुब्ध पिता ने उत्तर दिया, "ख़राब। जितना मैंने सोचा था उससे भी ख़राब। वह बेहोशी में वालेरियान का नाम लेकर अंटसंट बक रही है।"

"वैलेरियान कौन है?" चकित वृद्ध ने पूछा। तुम्हारे घर में जो पला था वही अनाथ, 'स्त्रेलेत्स'* का वह लड़का क्या?"

गाव्रिला अफनासियेविच ने उत्तर दिया, "हाँ, वही। मेरा दुर्भाग्य है कि लड़ाई के वक्त उसके बाप ने मुझे बचाया था और शैतान के चक्कर में पड़कर मैं इस अभिशप्त जानवर के बच्चे को अपने घर लाया था। दो वर्ष पहिले जब उसके अनुरोध से उसे फौज़ में भर्ती कर दिया गया तो विदा होते समय नताशा रो पड़ी थी और वह पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा था। तभी मुझे दाल में कुछ काला मालूम हुआ था, मैंने बहन से यह बात बताई थी। लेकिन उसके बाद फिर नताशा ने उसकी बात नहीं चलाई और उसके बारे में कोई कानाफूसी भी नहीं सुनाई पड़ी। मैंने सोचा था, नताशा उस बात को भूल गई है। अब देखता हूँ बात वैसी नहीं है। हबशी के संग ही उसका ब्याह होगा, यही मेरा फ़ैसला है।"

प्रिन्स लीकोव ने विरोध नहीं किया; करने से वह बेकार होता। वे घर चले गये। तातियाना अफनासियेव्ना नताशा के बिस्तर के किनारे बैठी रही। गाव्रिला अफनासियेविच ने डाक्टर बुलाने को कह अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। सारे मकान में निस्तब्ध विषाद छा गया।

इस अनहोनी शादी की बात सुनकर गाव्रिला अफनासियेविच को जिस

*स्त्रेलेत्स—१६ वीं और १७ वीं शताब्दी के रूप में एक विशेष प्रकार की स्थायी सेना के सैनिक का नाम।—अनुवादक

तरह अचरज हुआ उसी तरह इब्राहिम को भी अचरज हुआ। बात यह हुई थी; इब्राहिम के संग काम करते-करते प्योत्र ने एक दिन कहा, "मैं देखता हूँ भाई, तुम कुछ उदास हो गये हो। साफ़-साफ़ बताओ तो, तुम्हें किस बात की कमी है।" इब्राहिम ने सम्राट को बताया कि वह अपने काम से बहुत संतुष्ट है, इससे बढ़ कर उसे और कुछ नहीं चाहिये। सम्राट बोले, "अच्छा, अकारण ही अगर तुम्हारा जी उदास रहता है तो तुम्हारे मन को चंगा करने का उपाय मुझे मालूम है।"

काम ख़तम होने पर प्योत्र ने इब्राहिम से पूछा," नाच की पिछली मजलिस में तुम जिस लड़की के साथ 'मेनुयेत' नाचे थे वह तुम्हें पसंद है?

"लड़की बड़ी भली है 'गोसुदार', * लगता है नम्र पर प्रफुल्ल है।"

"तो कुछ दिनों के अन्दर ही उससे तुम्हारा परिचय करा दूँगा। इस लडकी से ब्याह करना चाहते हो?"

मैं, गोसुदार?"

"सुनो इब्राहिम, तुम अकेले हो, तुम्हारे कोई आत्मीय-स्वजन नहीं हैं। मुझे छोड़कर और सभी के लिये तुम बिलकुल विदेशी हो। आज अगर मैं मर जाऊँ तो तुम्हारा क्या होगा, मेरे अभागे हबशी? समय रहते तुम्हें अपना ठौर-ठिकाना लगा लेना चाहिये। नये सम्बन्ध में सहायता ढूँढ़नी होगी, रूसी सामन्तों से सम्बन्ध स्थापित करना होगा।"

"गोसुदार, आपकी दया और कृपा से मैं धन्य हूँ। अपने सम्राट और शुभाकांक्षी के पहिले ही मेरी मृत्यु हो, इससे बढ़कर मुझे और कुछ नहीं चाहिये। मेरी अगर ब्याह करने की इच्छा भी हो तो क्या वह तरुणी और उसके सम्बन्धी राज़ी होंगे? मेरी सूरत ..."

"तुम्हारी सूरत! क्या कहते हो! तुम क्या तरुण नहीं हो। तरुणी लड़की को माँ-बाप की बातें सुननी ही होगी। और अगर मैं तुम्हारा अगुआ बन कर जाऊँ तो देखा जायगा बृद्ध गाव्रिला अफनासियेविच क्या कहते हैं?" यह कह कर सम्राट स्लेज तैयार करने का आदेश देकर चिन्ताग्रस्त इब्राहिम को अकेला छोड़कर चले गये।

* गोसुदार—माननीय सम्राट। (रूसी)

'ब्याह !'—हबशी ने सोचा,—'क्यों न करूँ?....ग्रीष्मप्रधान देश में जन्मा हूँ इसीलिये क्या मुझे निस्संग जावन बिताना होगा? चरम आनन्द और मनुष्य की पवित्रतम जिम्मेदारियाँ क्या हैं, इसे नहीं जान पाऊँगा? कोई मुझे प्यार करेगा इसका आशा करना ही मेरे लिये असंभव है। बचकाना आपत्ति है। लड़कियों के चपल हृदय में क्या सचमुच ही प्रेम रहता है? मधुर भूल को सदा के लिए विदा कर मैंने और भी वास्तव प्रलोभन को ग्रहण किया है। सम्राट ने ठीक ही कहा है, मुझे अपना भविष्य अभी से ठीक-ठाक कर लेना चाहिये। तरुणी ज़्रेवस्काइया से ब्याह वंशगर्वित रूसी सामन्त समाज से मेरा सम्बन्ध करा देगा। अपनी इस नई पितृ-भूमि में फिर विदेशी नहीं रह जाऊगा। स्त्री से मैं प्रेम प्रत्याशा नहीं करूँगा। उसकी वफ़ादारी से ही मैं संतुष्ट रहूँगा। हर क्षण के कोमल मधुर व्यवहार, विश्वास और सहानुभूति से मैं उसकी मित्रता प्राप्त करूँगा।'

इब्राहिम ने अपने स्वभाव के अनुसार काम में लगे रहना चाहा, लेकिन उसकी कल्पना उद्दाम हो उठी। वह क़ागज़ात रख कर नेवा नदी के किनारे टहलने गया। अचानक प्योत्र के गले की आवाज़ कानों में पड़ी। मुँह फेरते ही सम्राट को देखा। वे स्लेज से उतर प्रसन्न भंगिमा में उसकी ओर आ रहे थे। "सब कुछ ठीक हो गया मित्र!"—उसके दोनों हाथों को पकड़ वे बोले, "मैंने तुम्हारे ब्याह का बात चलाई है। कल अपने ससुर के यहाँ ज़रा जाना। लेकिन देखो, उनके अभिजात वंशगर्व को सहन कर चलना। स्लेज फाटक के पास ही रोकना। अहाते में पैदल प्रवेश करना। उनके महान कार्य के विषय में, उनके बारे में बातें करना। वे तुम्हारे आचरण से मुग्ध हो जायँगे। और अब,"—हाथ की छड़ी को घुमाकर वे बोले—"मुझे शैतान दानिलिच के पास ले चलो, उसकी नई हरकतों के लिये उससे मुलाक़ात करना ज़रूरी है।"

इब्राहिम प्योत्र को अपने बारे में पिता सुलभ चिन्ता के लिये आन्तरिक धन्यवाद दे उन्हें प्रिन्स मैंशिकोव के विशाल महल में ले गया और फिर घर लौट आया।

छः

काँच के खाने में दीपक धीरे-धीरे जल रहा था और उसमें गृह देवता का सोने-चाँदी का पहनावा चमक रहा था। दीपक की काँपती हुई शिखाने घिरे हुये पलंग और लेबिल लगी बोतलों से सजी टेबिल पर म्लान ज्योति बिखेर दी थी। अँगीठी के पास दासी चर्खा लिये बैठी हुई थी। सिर्फ़ चर्खा चलाने की धीमी आवाज़ सोने के कमरे की नीरवता भंग कर रही थी।

क्षीण स्वर ध्वनित हुआ, "कौन है"—फौरन दासी उठ खड़ी हुई और पलंग के पास जाकर पर्दा उठा दिया। नतालिया ने पूछा, "भोर होने में कितनी देर है?" दासी ने उत्तर दिया, "अब तो दोपहर हो गया है।" "यह क्या, तो इतना अँधेरा क्यों है?" "सारी खिड़कियाँ बन्द हैं बीबीजी, "जल्दी से कपड़े पहनने में मेरी मदद करो," "सो नहीं हो सकता, बीबीजी, डाक्टर साहब ने मना किया है।"

"तो क्या मैं बीमार हूँ?" "दो हफ्ते हो गये।" "बात ऐसी है। लेकिन मुझे लग रहा है अभी कल पड़ी हूँ..."

नताशा चुप हो गई। उसने अपने बिखरे विचारों को एकत्रित करने की चेष्टा की। उसे मानो कुछ हुआ था, लेकिन वह क्या था याद नहीं आया। दासी आदेश की प्रतीक्षा में उसके सामने ही खड़ी थी। इसी समय नीचे एक दबी आवाज़ सुनाई पड़ी। "यह क्या है?" नताशा ने पूछा। "हुज़ूर लोगों ने भोजन समाप्त किया, अब मेज़ से उठ रहे हैं। तातियाना अफनासियेवना अभी यहाँ आयेंगी।"—दासी ने कहा। प्रतीत हुआ कि नताशा कुछ अधिक प्रसन्न हुई। उसने अपना क्षीण हाथ हिलाया। दासी पर्दा गिरा कर फिर चर्खा लेकर बैठी।

कई मिनटों के बाद दरवाज़े के पीछे काले फ़ीतेवाली सफ़ेद टोपी पहने एक सिर दिखाई पड़ा, दबी आवाज़ में प्रश्न सुनाई पड़ा, "नताशा कैसे है," शान्त स्वर में रोगिणी ने जबाब दिया?

"कहिये बुआजी।" तातियाना अफनासियेवना नताशा के पास बढ़ आई। सावधानी से कुर्सी बढ़ाते हुए दासी ने बताया, "बीबीजी को होश आ गया है।" आँसुओं से भरी आँखोंवाली वृद्धा भतीजी के पीले वेदना पीड़ित मुँह को चूम उसकी बग़ल में बैठ गई। उनके पीछे काला कोट और पंडिताऊ विग * पहने जर्मन डाक्टर आये। नताशा की नब्ज़ देख कर पहले लैटिन फिर रूसी में बोले की ख़तरा दूर हो गया है। डाक्टर क़ागज़ कलम माँग कर नया नुस्ख़ा लिख बिदा हुए। नताशा को फिर चूम कर वृद्धा उसी दम गाव्रिला अफनासियेविच को खुशखबरी देने के लिये नीचे दौड़ पड़ी।

तलवार के साथ वर्दी पहने और हाथ में टोपी लिये ज़ार का हबशी ड्राइंगरूम में बैठा गाव्रिला अफनासियेविच से श्रद्धा के साथ बातें कर रहा था। मख़मल के एक दीवान पर लेटा कोरसाकोव अनमना उनकी बातें सुन रहा था। अन्त में झुँझलाकर अपने बनने-ठनने के स्वाभाविक आश्रय स्थान आईने की ओर बढ़ गया। आईने में उसने तातियाना अफनासियेविच को देखा। दरवाज़े के पीछे खड़ी भाई की ओर इस तरह से इशारा कर रही थीं कि वह दिखाई नहीं पड़ रहा था। गाव्रिला अफनासियेविच की ओर मुड़ इब्राहिम की बातचीत में ही काटते हुए कोरसाकोव बोला, "आपको बुला रही हैं।" गाव्रिला अफनासियेविचा उसी दम निकल दरवाज़ा बन्द करके बहन के पास गये।

कोरसाकोव ने इब्राहिम से कहा, "तुम्हारा धीरज देखकर अचरज होता है। पूरे एक घण्टे से तुम लीकोव और ज़्रेवस्कीयों के कुल की पुरानी कहानी सुनते जा रहे हो, यही नहीं, उसके साथ तुम आदर्श की बातें भी जोड़ते जा रहे हो। तुम्हारी जगह मैं होता तो नतालिया गाव्रिलोवना समेत इस झूठे बूढ़े को और उसके ख़ानदान के मुँह पर जोर से थूक देता और वह लड़की तो मुँह बना ही रही है, बीमारी का नख़रा कर रही है, कमज़ोरी का झूठा बहाना कर रही है···विवेक की दोहाई देकर बताओ तो क्या तुमने सचमुच ही उस नन्ही नख़रेबाज़ से प्रेम किया है? सुनो इब्राहिम, कमसे कम एक बार हमारी सलाह मान कर चलो। जितना दिखाई देता है उससे अधिक अक्ल रखता हूँ।

*विग—नकली बालों की टोपी।—अनुवादक।

इस पागलपन की चिन्ता छोड़ो। ब्याह मत करो। मुझे लगता है कि तुम्हारे प्रति मगेतर का कोई विशेष आकर्षण नहीं है। दुनिया में क्या कुछ कम बातें होती हैं। देखो, मैं खुद देहाती नहीं हूँ फिर भी मुझे अनेक पतियों को धोखा देना पड़ा है......वे किसी भी बात में मुझसे बुरे नहीं हैं। तुम खुद ही···हमारे पेरिस के मित्र काउन्ट द...की बात याद है? स्त्रियों की निष्ठा पर विश्वास करना असम्भव है। जो लोग इधर से उदासीन हैं वही सुखी हैं लेकिन तुम···अपने उद्दाम, चिन्ता गम्भीर शक्की प्रकृति को लेकर, अपनी चिपटी नाक, फूले होठ, मोटे ऊन जैसे बालों को लेकर ब्याह के झमेले में कूद पड़ोगे''...."इस मित्रतापूर्ण उपदेश के लिए धन्यवाद" इब्राहिम ने उदासीन भाव से कहा, "कहावत है जानते हो न: पराये बच्चे को पालने पर झुलाना तुम्हारा काम नहीं है।'' ···हँसते हुए कोरसाकोव बोला, "देखो इब्राहिम, इस कहावत को तुम अक्षरशः मत साबित करना।"

बग़लवाले कमरे की बातचीत में गरमी आ गई। वृद्धा बोली, "तुम उसे मार डालोगे। वह इब्राहिम की सूरत नहीं बर्दाश्त कर पायेगी।" ज़िद्दी भाई ने उत्तर दिया "तुम खुद ही ज़रा सोच देखो। दो हफ्ते से वह वर के तौर पर आ रहा है, आज तक उसने लड़की की सूरत तक नहीं देखी। आख़िर वह सोचेगा कि उसकी बीमारी की बात महज़ बहाना है। मानो उसके सम्पर्क से बचने के लिए हम बात टालने का मौका ढूँढ़ रहे हैं। सम्राट क्या कहेंगे? उन्होंने तो इसी बीच नताशा के स्वास्थ्य के बारे में तीन बार पूछताछ की है। तुम्हारा जो जी चाहे करो, लेकिन मैं सम्राट से झगड़ा मोल लेने के लिए तैयार नहीं।'' "हाय भगवान!" तातियाना अफनासियेवना बोली, "उस बेचारी का क्या होगा? कम से कम मुझे जाकर नताशा को इस मुलाक़ात के लिए तैयार कर लेने दो।'' गाव्रिला अफनासियेविच राज़ी होकर ड्राइंगरूममें लौट आये।

उन्होंने इब्राहिम से कहा, ''भगवान की कृपा से ख़तरा टल गया है। नतालिया अब काफ़ी अच्छी है, प्रिय अतिथि इवान येवग्राफोविच यहाँ अकेले छोड़ना न पड़ता तो मैं तुम्हें तुम्हारी मँगेतर को दिखाने के लिए ऊपर ले जाता।" कोरसाकोव ने गाव्रिला अफनासियेविच को बधाई दे चिन्ता न करने का अनुरोध करके कहा कि उसका जाना बहुत ही ज़रूरी है और गृहस्वामी को तैयार होने का मौका न देकर वह बाहर के हाल की ओर दौड़ कर निकल गया।

इधर तातियाना अफनासियेवना रोगिणी को इस भयावने मेहमान के आगमन के लिए तैयार करने के लिए दौड़-पड़ीं। सोने के कमरे में घुस लम्बी साँस छोड़ बिस्तरे के किनारे बैठ उन्होंने नताशा का एक हाथ उठा लिया, लेकिन कुछ कहने के पहले ही दरवाज़ा खुल गया। नताशा ने पूछा, "यह कौन है?" बृद्धा के दिल की धड़कन धीमी हो गई, वे चुप हो गईं। गाव्रिला अफनासियेविच ने पर्दा उठा रोगिणी की ओर रुखाई से देख कर पूछा, "वह कैसी है?" रोगिणी को उनकी ओर देख कर मुस्कराने की इच्छा हुई, लेकिन उससे मुस्कराया नहीं गया। पिता की कठोर दृष्टि ने उसे अविभूत कर दिया, उसका मन अशान्त हो उठा। इसी समय उसे लगा कि कोई उसके सिरहाने के पास आ खड़ा हुआ है। रोगिणी ने बल लगा कर सिर उठाते ही सम्राट के हबशी को पहचान लिया उसी दम सारी बातें उसे याद आ गईं, भविष्य विभीषिका का रूप लेकर उसके सामने दिखाई पड़ा। लेकिन वह इतनी अवसन्न हो गई थी कि उसके चेहरे पर व्यथा का कोई चिन्ह नहीं दिखाई पड़ा। नताशा ने फिर तकिये पर सिर रख आँखें बन्द कर लीं।···दिल की धड़कन धीमी हो गई।

तातियाना अफनासियेवनाने इशारे से भाई को बतलाया कि रोगिणी सोना चाहती है। कमरे से सभी चुपचाप निकल गये। कमरे में सिर्फ़ दासी रह गई। वह फिर चर्खा लेकर बैठ गई।

अभागी सुन्दरी ने आँखें खोल कर देखीं, लेकिन बिस्तर के किनारे किसी को न देख दासी को पुकार कारलित्सा को बुला लाने को भेजा। लेकिन इसी समय एक बूढ़ी बच्ची गेंद की तरह लुढ़कती हुई नताशा के बिस्तर के किनारे आई! कारलित्सा को "गौरैया" के नाम से ही पुकारा जाता था। छोटे-छोटे पैरों से जितने ज़ोर से बन पड़ा गाव्रिला अफनासियेविच और इब्राहिम के पीछे-पीछे सीढ़ी से ऊपर चढ़ दरवाज़े के पीछे छिपी हुई थी। नारी जाति के सहजात कौतूहल को वह दबा नहीं रख सकी। उसे देख नताशा ने दासी को बाहर भेज दिया, कारलित्सा पलंग के किनारे टूल पर बैठ गई।

इतने छोटे शरीर में इतनी फर्ती पहिले कभी नहीं दिखाई पड़ी थी। वह सभी मामलों में टाँग अड़ाती थी, सब कुछ जानती थी, सभी विषयों में बकबक करती थी। चतुराई और धूर्तता से वह मालिकों का स्नेह अर्जन करती और दूसरे दास दासियों की घृणा अर्जन करती। वह स्वेच्छाचारियों

की तरह उनपर शासन करती, उसकी कुत्सा शिकायतों और बचकाना ज़िद्द को गाव्रिला अफ़नासियेविच सुनते। तातियाना अफनासियेवना हर बात में उसकी राय से अपनी राय मिलातीं, उसके कहने के मुताबिक चलतीं। उसके लिये नताशा में बड़ा आकर्षण था, सोलह साल की उम्र में ही अपने हृदय की प्रत्येक धड़कन, प्रत्येक बात वह कारलित्सा को बताती।

नताशा बोली, "जानती हो गौरैया, पिता हबशी से मेरा ब्याह करा रहे हैं।"

कारलित्सा ने लम्बी साँस ली, उसके झुर्रियों भरे चेहरे की झुर्रियाँ और भी गहरी हो गईं।

नताशा बोली, "सचमुच ही क्या अब कोई आशा नहीं है? मेरे प्रति क्या पिता तनिक भी करुणा नहीं करेंगे।"

कारलित्सा ने छोटी सी टोपी हिलाई।

"दादा या बुआ क्या मेरी पीठ पर नहीं खड़ी होंगी?"

"नहीं, बीबीजी। आपकी बीमारी के वक्त हबशी ने सब का हृदय जीत लिया है। मालिक उसे देख कर मोहित हो गये हैं, प्रिन्स उसके अलावा और किसी विषय पर बातें ही नहीं करना चाहते हैं और तातियाना अफ़-नासियेवना सिर्फ़ कहती हैं, दुःख की बात है कि वह हबशी है, लेकिन उससे अच्छा वर ढूँढ़ना हमारे लिये पाप है।"

"हाय भगवान, हाय भगवान!" नताशा वेदना-विह्वल अस्फुट स्वर में बोल उठी।

उसके दुर्बल हाथों को चूम कर कारलित्सा बोली, "अफ़सोस मत करो, क्राशावित्सा नताशा तुम्हें अगर हबशी से ब्याह करना ही पड़ा तो भी तुम्हारी इच्छा तो अपनी ही रहेगी। पहले जो थी, अब वह नहीं है। पति अब स्त्रियों को ताले में बन्द नहीं कर रखते हैं। सभी कहते हैं, हबशी धनी है। तुम्हारी गृहस्थी भरे पूरे प्याले जैसी होगी, हँसी खुशी से तुम्हारे दिन बीतेंगे।..."

"हाय वैलेरियान!" नताशा इस बात को इतना धीरे बोली कि कारलित्सा सुन ही नहीं पाई। मन ही मन अन्दाज़ लगा लिया।

छिपाकर बातें करने के बहाने धीमे स्वर में कारलित्सा बोली," देखो

बीबीजी, तुम अगर स्त्रोलेत्स के लड़के की बात ज़रा कम सोचती तो बुखार में उसका नाम लेकर अंटसंट न बकती तो तुम्हारे पिताजी भी गुस्सा न होते।"

सहमी हुई नताशा बोली, "क्या? मैंने वैलेरियान का नाम लेकर अंट-संट बका है, पिता ने सुना, गुस्सा हुये हैं?"

"यही तो मुशीबत है, "कारलित्सा ने उत्तर दिया," अब अगर तुम हबशी से ब्याह न करने के लिये विनता करो तो वे समझेंगे कि वैलेरियान इसके पीछे है। करने को कुछ भी नहीं है, पिता की बात मान लो, जो होना है होगा।"

नताशा ने कुछ भी नहीं कहा। उसके दिल की गुप्त बात पिता जान गये हैं यह चिन्ता उसकी कल्पना में जम कर बैठ गई। उसके दिल में एक ही आशा है, इस घिनौने ब्याह के पहले ही उसकी मौत हो जाय। इस विचार से उसे सान्त्वना मिली। दुर्बल वेदनाविधुर हृदय से उसने अपने भाग्य को मान लिया।

सात

गाव्रिला अफनासियेविच के मकान के हाल में घुसते ही दाहिनी ओर एक छोटी सी कोठरी है, उसमें एक ही खिड़की थी। उस कोठरी में मुलायम गुदगुदे रुई के कम्बल से ढकी एक खाट थी। खाट के सामने बाँज लकड़ी की एक छोटी मेज़ थी। उस पर तेल का दीया जल रहा था, खुली स्वरलिपि बिखरी हुई है, दीवार पर एक पुराना नीला कोट और उसके साथ संगिनी एक तिकोनी टोपी टँगी हुई है, उसके ऊपर तीन हुकों से घोड़े पर चढ़े बारहवें कार्ल की सस्ती छपी एक तस्वीर लगी हुई थी। इस शान्त वातावरण में वंशी बज रही थी। नाच का शिक्षक यहाँ का निस्संग निवासी बन्दी है। सिर पर टोपी, चीनी रात की पोशाक पहिने वह जाड़े की संध्या की थकान भरी उदासी को प्राचीन स्वीडिश मार्च का

सुर बजा कर मधुर बना रहा है, इस सुर में उसकी अपनी जवानी के आनन्दमय क्षण याद आ रहे हैं। पूरे दो घंटे बजाने के बाद वंशी को बक्स में रख वह कपड़े उतारने लगा।

इसी समय दरवाज़ा खुल गया। वर्दी पहिने एक लम्बा चौड़ा तरुण कमरे में घुसा। विस्मित स्वीडिश हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ।

तरुण आगन्तुक काँपती हुई आवाज़ में बोला, "तुम मुझे नहीं पहचान सके, गुस्ताव अदामीच। जिस लड़के को तुमने स्वीडिश कायदे से बन्दूक चलाना सिखाया था, उसकी बात याद नहीं। उसके साथ बच्चों की बन्दूक से गोली चलाते समय इस मकान में आग लगाने ही वाले थे।" गुस्ताव अदामीच एकटक देखता रहा…अन्त में उससे लिपट कर चिल्ला उठा, "आ-अ-च-छे हो न, तो तुम यहीं हो। बैठो मित्र, बैठो।"

१९२७

१. लीज़ा—साशा को

प्रिय साशा,

मेरे यकायक गाँव चले आने पर तुम्हें ज़रूर अचरज हुआ होगा। परमुखापेक्षी की स्थिति मेरे लिये सदा पीड़ादायक लगती है। इसीलिये तुम्हें जल्दी से सब कुछ खोलकर बता रही हूँ। यह सच है कि आवदोतिया आन्द्रेयवना ने मेरा पालन-पोषण अपनी नीजी भतीजी के साथ एक ही तरह से किया। फिर भी मैं उनके घर में पालिता लड़की के सिवा और कुछ नहीं हूँ। तुम कल्पना नहीं कर सकोगी कि इस शब्द के साथ कितने छोटे-मोटे क्लेश जुड़े हुए हैं। बहुत कुछ मुझे सहना पड़ा, कितने ही मामलों में झुकना पड़ा है; कितनी बातों को देखकर अनदेखी करना पड़ा है। हमेशा मेरी स्वाभिमानी आँखों ने अवज्ञा की एक क्षीण छाया को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा है। ज़मींदार की बेटी और मैं समान हूँ, यह मेरे लिये बेचैनी की बात थी। जब कभी हम दोनों एक ही तरह बॉल-नृत्य में जातीं तो उसके गले में हीरा न देख कर मुझे झुँझलाहट होती। मुझे लगता कि मुझसे अधिक अच्छा न लगने के लिये ही वह हीरा नहीं पहनी थी। उसके इस ख़याल से मुझे अपमान का बोध होता। मैं सोचती कि, सचमुच ही मेरे अन्दर ईर्ष्या या शिशुसुलभ संकीर्णता जैसी कुछ उत्पन्न हुई है? मेरे प्रति पुरुषों का व्यवहार चाहे वह कितना ही सज्जनता क्यों न हो, हर क्षण वह मेरे आत्मसम्मान को चोट पहुँचाता। उनकी उपेक्षा हो या सौजन्यता दोनों मुझे अपमान सी लगती। संक्षेप में दुःख पाने के लिये ही मेरा जन्म हुआ था। स्वभावतः मेरा हृदय कोमल था; इसलिये दिन पर दिन मेरा मन कड़वा होता जा रहा था। तुमने क्या कभी ग़ौर किया है कि पालिता, दूर की सम्बन्धी, [सङ्गिनी] demioselles de compagnie और इसी तरह की लड़कियाँ आमतौर से निम्नकोटि की नौकरानियाँ होती हैं या परले सिरे की झक्की। इनमें से अन्तिम वर्ग की स्त्रियों को मैं

आदर की दृष्टि से देखती हूँ और उन्हें पूरी तौर से क्षमा योग्य समझती हूँ।

तीन सप्ताह हुए मुझे अपनी ग़रीब दादी का पत्र मिला है। उन्होंने अकेलेपन पर अफ़सोस करते हुए मुझे अपने पास गाँव जाने का अनुरोध किया है। मैंने इस अवसर को न छोड़ने का फैसला किया था। बड़ी मुश्किल से आवदोतिया आन्द्रेयवना से जाने की अनुमति पाई है। मुझे वादा करना पड़ा है कि सर्दियों में पीतर्सबुर्ग लौट आऊँगी। किन्तु ऐसा करने का मेरा इरादा नहीं है। मुझे पाकर दादी कितनी प्रसन्न हुईं यह क्या बताऊँ। उन्होंने मेरे आने की बिलकुल आशा नहीं की थी। उनके आँसुओं ने जिस प्रकार मेरे हृदय को स्पर्श किया उसका वर्णन मैं नहीं कर सकती। मैं उन्हें हृदय से प्यार करती हूँ। किसी समय वे ऊँचे समाज की थीं। उस समय के बहुत से अदब क़ायदे उन्होंने क़ायम रखे हैं।

इस समय मैं घर में ही हूँ, मैं ही घर की मालकिन हूँ। तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि मुझे इसमें कितना सच्चा आनन्द आ रहा है। ग्रामीण जीवन को मैंने फ़ौरन अपना लिया है, धन विलास का अभाव मुझे बिलकुल आश्चर्यजनक नहीं लगता। हमारा गाँव बड़ा प्यारा है। पहाड़ी की गोद में पुराने ज़माने का मकान, बाग़, झील, देवदारू-कुञ्ज; यह सब पतझड़ और जाड़ों में कुछ उदास अवश्य दिखाई देते हैं। लेकिन फिर बसन्त और गर्मियों में तो यहाँ पर स्वर्ग ही उतर आता होगा। पड़ोसी बहुत कम हैं। अभी तक किसी से मुलाकात नहीं की है। तुम्हारे ला मार्तीन के काव्य की तरह निर्जन नीरवता मुझे सचमुच ही बहुत अच्छी लगती है।

पत्र लिखना, प्यारी सखी! तुम्हारी चिट्ठी मुझे बड़ी सांत्वना पहुँचायेगी। अपने बॉल-नृत्यों का समाचार लिखना। हमारे परिचितों का क्या हाल चाल है? मैं ब्रह्मचारिणी सन्यासिनी बन गई हूँ सही में मगर जीवन के आनन्द उच्छवृलता को तो अस्वीकार नहीं किया है—ये समाचार मुझे अच्छे ही लगेंगे।

पावलोवस्कोइये ग्राम।

२. साशा का उत्तर

प्रिय लीज़ा,

तुम्हारे गाँव चले जाने की बात सुनकर अवाक् रह गई। ज़मींदार की बेटी ओल्गा को जब मैंने अकेले देखा तो सोचा कि तुम शायद बीमार हो गई हो और उनके कहने पर विश्वास करने को जी न हुआ। अगले दिन तुम्हारी चिट्ठी मिली। तुम्हारे नये जीवन पर, प्यारी सखी, तुम्हें बधाई देती हूँ। गाँव का जीवन तुम्हें अच्छा लगा, यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई। अपने पहले के जीवन के बारे में तुम्हारी शिकायत ने मुझे व्याकुल कर दिया है किन्तु तुम्हारी ये शिकायतें मुझे अत्यधिक कटुताभरी प्रतीत हुईं। अपनी तुलना पालिता कन्या और demoiselles de compaignie [सहचरी] से कैसे की? सभी जानते हैं कि ओल्गा के पिता तुम्हारे पिता के आभारी थे। इसके अलावा इनकी मित्रता भी निकट सम्बन्धी की तरह गहरी और पवित्र थी। लगता था कि तुम भी अपने भाग्य से सन्तुष्ट हो। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तुम्हारे अन्दर इस क़दर विक्षोभ जमा हुआ है। बताओ तो, तुम्हारे इस प्रकार यकायक चले जाने का कोई और गुप्त कारण तो नहीं है? मुझे कुछ सन्देह होता है···किन्तु तुम मुझ से कुछ छिपा रही हो···जो भी हो, पत्र में इस प्रकार पहेलियाँ बुझाने के प्रयत्न से तुम कहीं मुझसे नाराज़ न हो जाना।

पीतर्सबुर्ग के बारे में मैं तुम्हें क्या लिखूँ? हमलोग अब तक गाँव के मकान में हैं। यद्यपि लगभग और सभी यहाँ से जा चुके हैं। दो-एक सप्ताह के बाद बॉल-नृत्य आरम्भ हो जायगा। मौसम बड़ा सुहावना है। मैं खूब घूमती हूँ। हाल ही में हमारे यहाँ कुछ लोग खाने की दावत पर आये थे। उनमें एक मुझसे पूछ रहा था कि मुझे तुम्हारी कोई ख़बर है या नहीं। उन्होंने कहा कि बॉल-नृत्यों में तुम्हारी अनुपस्थिति पियानों की टूटे तार की तरह बेहद खटकती है। मैं उससे इस बात में बिलकुल सहमत हूँ! हमें आशा है कि मनुष्य-द्वेष अधिक दिनों तक स्थायी नहीं होगा। प्यारी सखी,

लौट आओ, नहीं तो इस साल के जाड़ों में यहाँ ऐसा कोई नहीं होगा जिससे मैं अपने दिल की सारी बातें खोल कर कह सकूँगी। प्यारी सखी, कहना मानो, सोच विचार कर अपना फैसला बदलो।

क्रं प्रोव्स्की अस्त्रव।

३. लीज़ा—साशा को

तुम्हारे पत्र से बड़ा आनन्द आया। उसे पढ़कर हृदय में पीतर्सबुर्ग की सब बातें ताज़ी हो आईं। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं तुम्हारी बातें सुन रही हूँ। तुम्हारी चिर पुरातन बातों को पढ़कर हँसी आ रही थी। तुम्हारा ख़याल है कि मेरे हृदय में कोई गहरी और गोपन अनुभूतियाँ, किसी दर्द भरे प्यार की कहानी छिपी हुई है—बात सही है न? ठहरो, हड़बड़ाओ मत, तुमने ग़लती की है। दूर के एक निराले गाँव में बैठी क्लारिसा गार्लव की भाँति उड़ेल कर चाय पी रही हूँ—नायिका और मुझमें बस इतनी ही समानता है।

तुमने लिखा कि इस साल की सर्दी में तुम्हारे पास ऐसा कोई नहीं होगा जिसे तुम अपना व्यङ्गात्मक मतामत सुना सको—तो फिर हमारी यह चिट्ठी-पत्री किसलिये है? जो कुछ तुम देखती सुनती हो उसका सब हाल मुझे लिख भेजा करो। फिर दुहराती हूँ: मैं संसार से नाता तोड़कर जोगिन नहीं बनी हूँ। संसार की हरेक बात से मुझे दिलचस्पी है। इसका सबूत देने के लिये अनुरोध करती हूँ कि मेरी अनुपस्थिति किसे इस तरह खटकती है मुझे लिखना। हमारे बातूनी मित्र अलेक्सेई की नज़रों में नहीं न? मेरा विश्वास है कि नाम मैंने सही बूझ लिया है···मेरे काम सदा उनकी सेवा में हाज़िर रहते थे। उन्हें भी यही चाहिये था।

···के परिवार से परिचय हो गया है। मालिक बड़े रसिक और मेहमाननिवाज़ हैं। मालकिन मोटी ताज़ी हँसमुख बुढ़िया है। ताश खेलने का नशा है। सत्रह वर्ष की बेटी इकहरे बदन और उदास प्रकृति की लड़की है। उपन्यासों और खुली हवा पर पली है। वह दिन भर घर

के कुत्तों से घिरी हुई और हाथ में किताब लिये या तो बाग़ में बैठी रहती है या मैदान में। कुछ अजीब गाती हुई आवाज़ में वह मौसम के बारे में बातें करती है और बड़े भाव से लोगों को जैम खिलाती है। उसके पास आलमारी भरकर पुराने उपन्यास हैं। मैंने पूरी आलमारी पढ़ डालना तय किया है। इसलिये रिचर्डसन से शुरू किया है। अगर लोकप्रिय क्लारिसा पढ़ने का अवसर चाहो तो गाँव में रहना ज़रूरी है। अनुवादक की भूमिका से मैंने पुस्तक को पढ़ना शुरू किया। देखा कि भूमिका में आश्वासन दिया गया है कि यद्यपि पहले छः भाग नीरस हैं फिर भी अंतिम छः इतने रोचक हैं कि पाठक को धीरज का फल सोलहो आने मिल जाता है। यह पढ़कर कमर कसकर मैंने पुस्तक को पढ़ना शुरू किया है। एहिला भाग, दूसरा भाग फिर तीसरा भाग पढ़ा…आख़िर छठे तक आ पहुँची हूँ। एकदम रसहीन, अब हिम्मत नहीं रही। सोच रही थी कि इसी दम परिश्रम का मीठा फल मिलेगा। हुआ क्या? क्लारीसा की मृत्यु का वर्णन पढ़ती हूँ, फिर लवलेस की—और पुस्तक समाप्त। पुस्तक के हरेक खण्ड में दो भाग थे। कब छः नीरस खंड समाप्त हुए और कब छः रोचक भाग आरम्भ—इसका पता भी न चला।

रिचर्डसन को पढ़कर मैं चिन्ता में पड़ गयी हू। दादियों और पोतियों के आदर्शों में कितना भारी अंतर था! लवलेस और एडोल्फ में कौन-सी बात एक-सी है? लेकिन कुछ भी कहो, स्त्रियाँ बदलती नहीं है। झुककर अभिवादन करने की प्रथा थी, नहीं तो क्लारीसा आधुनिक उपन्यासों की नायिकाओं की-सी है कि पुरुषों का अच्छा लगना निर्भर करता है फैसन पर, क्षणिक मनोभाव पर, लेकिन स्त्रियों का अच्छा लगने का आधार है अनुभूति और स्वभाव। और यह अनुभूति और स्वभाव तो शाश्वत हैं।

देखती हो, मैंने सदा की भाँति तुमसे बकवास किया, चिट्ठी में तुम्हें भी कंजूसी नहीं करने दूँगी। पत्र शीघ्र से शीघ्र और लम्बे से लम्बे लिखा करो। तुम कल्पना भी नहीं कर सकती कि गाँव में कितनी अधीरता से डाक के दिन की प्रतीक्षा की जाती है। इसके साथ तो बॉल-नृत्य के दिन की प्रतीक्षा की भी तुलना नहीं की जा सकती।

४. साशा का उत्तर

प्रिय लीज़ा,

समझने में तुमने ग़लती की है। तुम्हारे अभिमान को कम करने के लिये बता दूँ कि "र" ने तुम्हारी अनुपस्थिति को ज़रा भी महसूस नहीं किया है। वह आजकल लेडी पेलम का घनिष्ठ मित्र हो गया है और सदा उसके साथ रहता है। यह एक अंग्रेज़ रमणी हैं जो हाल में यहाँ आई हैं। "र" जब कुछ कहता है तो वह बड़े भोले आश्चर्य से उसकी ओर देखती है और उत्तर में कहती है—ओहो! और वह गद्‌गद्‌ हो जाता है। अब सुनो, तुम्हारे बारे में जिसने मुझसे पूछा था और जो सच्चे हृदय से तुम्हारे दुःख में दुखी है, वह है तुम्हारा पुराना प्रशंसक व्लादीमीर "स"। सुन कर प्रसन्न हुईं? मैं समझती हूँ कि बहुत प्रसन्न हुईं। और अपनी आदत के अनुसार यह कहने में भी न हिचकिचाऊँगी कि तुम यह मेरे कहने से पहले ही जान गई थी। ख़ैर, मज़ाक नहीं···"स" तुम्हारे सिवा और कुछ नहीं जानता है। अगर तुम्हारी जगह मैं होती तो बहुत दूर तक उसे खींच ले जाती। वह तो बहुत अच्छा वर है···क्यों न उस से ब्याह कर लो? अगर ऐसा हो जाय तो तुम "विलायती समुद्रतट" पर रहोगी, हर शनिचर को घर पर दावतें दे सकोगी और रोज़ सबेरे मेरे यहाँ आया करोगी। बहुत हठ हो चुका, प्यारी सखी, अब हमारे यहाँ चली आओ···"स" से ब्याह कर डालो!

परसों "क" के यहाँ बॉल-नृत्य हुआ। बहुत से लोग आये थे। सबेरे पाँच बजे तक नाचते रहे। क० व० ने बड़े सीधे सादे कपड़े पहन रखे थे, सफ़ेद क्रेप की गाऊन, यहाँ तक कि गले में माला भी नहीं थी, मगर सिर पर और गले में करीब ५० हज़ार के हीरे थे! "ज" सदा की भाँति ऐसे कपड़े पहने हुए थी कि देखकर हँसी आती थी। यह आख़िर कहाँ से यह पोशाक ले आती है? उसके गाऊन पर फूल नहीं बल्कि न जाने कैसे कुकुरमुत्ते कढ़े हुए थे। कहीं यह तुमने तो उसे गाँव से नहीं भेजा था?

व्लादीमीर नहीं नाचा। वह छुट्टी पर जा रहा है। "स" आया हुआ था (शायद पहली बार), सारी रात बैठा रहा, नाचा नहीं, और सब के चले जाने के बाद गया। बुढ़िया रूज़ लिपस्टिक से ढकी लग रही थी—अब तो इसका समय भी आ चुका है…बॉल-नृत्य बहुत सफल रहा। पुरुषों को खाना पसन्द नहीं आया, पर तुम तो जानती ही हो कि वे सदा किसी न किसी बात से असन्तुष्ट होंगे ही। यद्यपि मैं उस असह्य डिप्लोमेट स्त-के साथ कतलियन नाची फिर भी समय बड़े मज़े में कटा। एक तो यूँही मूर्ख प्रकृति का है तिस पर मैद्रिद से लाया है अन्यमनस्कता।

रिचर्डसन की आलोचना लिख भेजने के लिये धन्यवाद लेना। अब मैं उन्हें कुछ-कुछ समझने लगी हूँ। मेरा स्वभाव ऐसा उतावला है कि उसे पढ़ने की आशा नहीं। यहाँ तक कि वाल्टर स्काट में भी कितनी ही फालतू चीज़ें मुझे दिखाई पड़ी हैं।

और सुनो, लगता है कि येलेना "न" और काउन्ट "ल" का रोमांस समाप्ति पर है। काउन्ट ऐसा उदास दिखाई देता है और येलेना इतना इठलाने लगी है कि लगता ब्याह का फैसला शायद हो चुका है। अलविदा, मेरी अच्छी सखी, मेरी आज की बकवास से सन्तुष्ट हो न?

५. लीज़ा—साशा को

नहीं, प्यारी स्वाखा*, गाँव छोड़कर तुम्हारे यहाँ ब्याह करने आने का मेरा इरादा बिलकुल नहीं है। यह मैं खुलेआम मानने को तैयार हूँ कि ब्लादीमीर "स" मुझे पसंद था, किंतु उससे ब्याह करने की बात मैंने कभी नहीं सोची। वह रईस ठहरा, और मैं एक साधारण कुल की स्त्री हूँ। उपन्यास की सच्ची नायिका की तरह सगर्व कह दूँ कि मेरा जन्म रूस के सबसे प्राचीन रईस घराने में हुआ था। और मेरा नायक एक दाढ़ीवाले लखपति का पोता है। पर तुम जानती ही हो कि हमारे यहाँ रईसी का क्या अर्थ

*स्वाखा—वह स्त्री जिसका काम विवाह सम्बन्ध ठीक कराना होता है।—अनु०।

होता है। जो कुछ भी हो, "स" संस्कृतिवान आदमी है। मैं उसे पसन्द हो सकती हूँ, लेकिन मेरे लिये वह धनी पत्नी और लाभदायक सम्बन्ध का बलिदान नहीं करेगा। अगर कभी ब्याह किया तो यहीं किसी चालीस वर्षीय ज़मींदार से करूँगी। वह अपने शक्कर के कारखाने को सँभालेगा और मैं गृहस्थी को। और काउन्ट "क" के यहाँ बॉल में नाचने का और अंग्रेज़ी समुद्रतट के बङ्गले पर दावतें दे सकने का अवसर न मिलने पर भी मैं सुखी रहूँगी।

यहाँ जाड़ा शुरू हो चुका है। गाँव में "cest un evenment" [पूरा उत्सव] है। सर्दी में जीवन का ढर्रा ही बदल जाता है। बाहर अकेले घूमना बन्द हो जाता है। घंटे बजते ही शिकारी अपने कुत्तों के साथ निकल पड़ते हैं। पहली बर्फ गिरने के साथ ही हरेक चीज़ श्वेतवर्ण और आनन्ददायक बन जाती है। इसकी मैंने कभी आशा नहीं की थी। गाँव की सर्दी ने मुझे डरा दिया है। परन्तु संसार में हर चीज़ का एक अच्छा पहलू भी तो होता है।

माशेन्का…से मेरा थोड़ा सा परिचय हो गया है। मुझे तो उससे प्रेम हो गया है। इस लड़की में ऐसा बहुत कुछ है जो सुन्दर और मौलिक है। अचानक पता चला कि उनका नज़दीकी रिश्तेदार है। माशेन्का ने उसे सात साल से नहीं देखा है किन्तु माशेन्का उसकी बड़ी प्रशंसक है। एक बार ग्रीष्मकाल उसने इन लोगों के यहाँ बिताया था और माशेन्का उस समय के जीवन की कोई छोटी बातें सुनाते नहीं थकती है। माशेन्का से लेकर जब उपन्यास पढ़ती हूँ तो हासिये पर पेन्सिल से लिखी "स" की टीका-टिप्पणियाँ देखती हूँ! टिप्पणियाँ मद्धिम पड़ गई हैं। जान पड़ता है कि उस समय वह बच्चा था। ऐसे भाव और अनुभूतियों से वह तब आच्छन्न था कि आज की बात होती तो उनकी खिल्ली उड़ाता। किन्तु इनमें उसकी प्राणवान और अनुभूति प्रवण आत्मा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। आजकल बहुत पढ़ती हूँ। तुम कल्पना भी नहीं कर सकोगी कि १७५७ ई० में लिखा हुआ उपन्यास १८२९ ई० में पढ़ना कितना अजीब मालूम पड़ता है। लगता है मानो अचानक हम अपनी बैठक से निकल कर एक पर्दे से घिरे पुराने हाल में आ गये हैं। हम रेशम लपेटी मुलायम चमड़े की

कुर्सी पर बैठे हैं। अपने निकट हमें विचित्र पहनावे पहने, पहचाने हुए चेहरे दिखाई पड़ते हैं। यह चेहरे हमारे दादा-दादियों के हैं, लेकिन उनकी नौजवानी के। इन उपन्यासों में से अधिकतर में इसके अतिरिक्त और कोई दूसरी ख़ूबी नहीं है। कहानी रोचक है, स्थिति ख़ूब उलझी हुई है। बेलकूर पहेली की सी बातें करता है और शार्लट का उत्तर टेढ़ा होता है। कुछ व्यक्ति चाहें तो बने बनाये प्लाट, सजे सजाये पात्रों को ले कथोपकथन और बेवकूफ़ियों को अच्छी तरह सुधार जो जगहें छूटी हैं उनकी खानापूरी कर देने से काफ़ी अच्छा मौलिक उपन्यास बन जायगा। मेरी ओर से मेरे कृतघ्न "र"...को यह कह देना। अंग्रेज़ लड़कियों से बकवास करके अपना दिमाग़ काफ़ी खराब कर चुका है। उसे चाहिये कि पुराने कैनवस पर नई कढ़ाई करे। एक छोटे से चौखटे में उस संसार और उनलोगों का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दे जिन्हें वह इतनी ख़ूबी से जानता है।

माशा रूसी साहित्य से बहुत अच्छी तरह परिचित है। वैसे भी पीतर्सबुर्गवालों से यहाँ के लोग साहित्य अधिक पढ़ते हैं। वहाँ मासिक-पत्र मिलते हैं और उनके परस्पर वाद-विवादों में लोग सक्रिय भाग लेते हैं, बारी-बारी दोनों पक्षों के मत पर विश्वास करते हैं और अगर उनके प्रिय किसी लेखक की समालोचना की जाती है तो नाराज़ होते हैं। अब मेरी समझ में आया कि व्याज़ेम्स्की और पुश्किन को ग्रामीण स्त्रियाँ क्यों इतना पसन्द करती हैं। ये ही उनकी असली पाठिका हैं। हाल ही में मैं कुछ पत्रिकायें देख रही थी। उनमें मैं "वेस्तनीक एवरोपी" [यूरोपीय वार्त्ता] के समालोचकों के लेख पढ़ने लगी। किन्तु उनकी दास प्रवृति और सरलता मुझे अत्यन्त झुँझलानेवाली प्रतीत हुई। देख कर हँसी आती है कि स्कूल के लड़के उन कृतियों पर अश्लीलता और अनतिकता का दोषारोपण करता है जिन्हें हम सब संत पीतर्सबुर्ग की निष्कलंक कुमारियाँ पढ़ चुकी हैं।

६. लाज़ा का साशा को

प्रिये,

मेरे लिये अब छिपाना संभव नहीं, सखी की सहायता और उपदेश की बड़ी ज़रूरत है। जिससे भागकर मैं यहाँ चली आई हूँ, जिससे मैं काल की तरह डरती हूँ, वही यहाँ आ पहुँचा है। मैं क्या करूँ? मेरे सिर में चक्कर आ रहा है, बुद्धि कुछ काम नहीं करती। भगवान के लिये बताओ कि मुझे क्या करना चाहिये। सारा वृत्तान्त तुम्हें सुनाती हूँ…।

पिछली सर्दियों में तुमने तो देखा होगा कि वह मुझ से एक क्षण के लिये भी अलग नहीं रहता था। वह हमारे यहाँ नहीं आता था सही में, फिर भी सभी जगह हमारी मुलाकात हो जाया करती थी। व्यर्थ ही मैंने उपेक्षा का अस्त्र आज़माया, यहाँ तक कि उसे देखकर भी अनदेखा कर देने का प्रयत्न किया—किसी प्रकार मैं उससे छुटकारा न पा सकी। बॉल-नृत्यों में सदा वह मेरी बगल में बैठने की जगह ढूँढ़ लेता, टहलने निकलने पर उससे हमेशा हमारी मुलाक़ात होती, थियेटर में हमेशा उसकी दूरबीन हमारे बाक्स की ओर लगी दिखाई देती।

शुरू में तो इस बात ने मेरे आत्माभिमान को तृप्त किया। शायद यह मैंने उसे बहुत ही प्रत्यक्षरूप से समझने दिया था। जो भी हो, वह हर क्षण नये-नये अधिकार आयत्त कर हर बार मुझे अपने हृदय की बात सुनाता था, कभी ईर्षा से कातर हो जाता, कभी शिकायतें करता…डर लगा, फिर सोचा : आख़िर इस सब का भविष्य क्या होगा? गहरी निराशा में मुझे स्वीकार करना पड़ा कि मेरा हृदय उसके वश में है। मैं पीतर्सबुर्ग छोड़कर चली आई—सोचा कि इस प्रकार अकल्याण का अंकुर में ही अन्त हो जायेगा। मेरे दृढ़ संकल्प ने और इस धारणा ने कि मैं अपना कर्तव्य कर रही हूँ, मेरे हृदय को शान्ति प्रदान की। अब मैं उसके बारे में सोचती तो उदासीनता और पहले की अपेक्षा कम वेदना के भार से। अचानक उसे देख रही हूँ।

मैं उसे देख रही हूँ—कल उसका जन्म दिन था। खाने का निमंत्रण था। मैंने बैठक में प्रवेश किया। देखती हूँ, मेहमानों का जमघट है, उहलान वर्दियाँ पहने अफसर दिखाई पड़े, स्त्रियों ने मुझे घेर लिया। हमने एक दूसरे का चुम्बन किया और बिना किसी की ओर विशेष ध्यान दिये मैं गृहिणी के पास बैठ गई। नज़र उठाती हूँ तो···मेरे सामने। मैं किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गई...वह इतने अनुराग से, इतने सच्चे आनन्द से मुझसे बोला कि मैं भी अपना आश्चर्य और उल्लास छिपा न सकी।

हम खाने की मेज़पर जा बैठे। वह मेरे ठीक सामने बैठा था। उसकी ओर नजर उठाने की हिम्मत न हुई। किन्तु मैंने देखा कि और सभी लोगों की आँखें उसी की ओर लगी हुई हैं। वह चुपचाप और किसी ध्यान में मग्न था। दूसरा मौका होता तो मुझे लोगों का, वहाँ आये हुए इस फौज के अफ़सर का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयत्न, स्त्रियों का उद्वेग, पुरुषों का अनाड़ीपन, उनका अपने किये हुए मज़ाकों पर स्वयं ही हँसना और यह न देखना कि अतिथि अफ़सर को न उनकी बातों में दिलचस्पी है और न वह उनकी ओर ध्यान दे रहा है—यह सब बहुत ही मनोरंजक प्रतीत होता। खाने के बाद वह मेरे पास आया। यह सोचकर कि मुझे कुछ कहना चाहिए, मैं एक बिलकुल अनुपयुक्त बात पूछ बैठी, "यहाँ क्या आप कुछ काम से आये हैं?" "हाँ, मैं यहाँ एक ऐसे काम से आया हूँ जिसपर मेरा जीवन निर्भर करता है," उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया और फिर तत्काल वहाँ से हट गया। इसके बाद वह तीन वृद्धाओं के साथ ताश खेलने बैठ गया और मैं माशेन्का के पास ऊपर चली आई जहाँ शाम तक सिर दर्द का बहाना करके लेटी रही। वास्तव में तो मेरी हालत अस्वस्थ होने से भी बुरी थी। माशेन्का बराबर मेरे पास बैठी रही।···के आने से उसकी खुशी की सीमा नहीं रही। वह उनके यहाँ लगभग महीने भर ठहरेगा। माशेन्का दिन भर उसके साथ रहा करेगी। माशा को उससे सचमुच प्रेम है। ईश्वर करे कि वह भी उससे प्रेम करने लगे। माशेन्का का शरीर इकहरा है और प्रकृति असाधारण। पुरुषों को बस यही तो चाहिये।

बताओ, प्यारी बहन, मैं क्या करूँ? यहाँ मेरे लिये उससे पिण्ड छुड़ाने की सम्भावना नहीं है। इसी बीच उसने दादी का मन जीत लिया है।

फ़िर प्रेम की बातें, शिकायतें और वादे शुरू होंगे। और इस सब का अंत क्या होगा? वह मेरा प्रेम प्राप्त कर लेगा और मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं उसे प्यार करती हूँ। फिर सोचेगा ब्याह करने में कोई फायदा नहीं, कोई न कोई बहाना करके मुझे छोड़कर चला जायगा। और मैं··· कैसा भयंकर भविष्य है! भगवान के लिये मेरा हाथ पकड़ो—मैं डूबी जा रही हूँ।

७ साशा का उत्तर

स्वीकृति के भार से बोझिल हृदय को भारमुक्त करना क्या इतना सहज है! बिलकुल ही नहीं, सखि! जो बात मैं बहुत दिनों से जानती थी वह तुम मानना ही नहीं चाहती थीं:···और तुम दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हो—इसमें डरने की कौन-सी बात है? यह तो अच्छा ही हुआ। सभी चीज़ों को तुम किस दृष्टि से देखती हो इसे भगवान ही जाने! तुम बारम्बार दुर्भाग्य की बात कह रही हो देखना कहीं उससे सचमुच ही भेंट न हो जाय। ···से ब्याह करने में तुम्हे क्या आपत्ति हो सकती है? ऐसी कौन-सी दुर्जेय बाधा है? वह धनी है और तुम निर्धन–इससे कुछ आता-जाता नहीं। वह सिर्फ़ दो पुश्त का धनी है और तुम उससे अधिक दिनों की। वह अभिजात है, तो तुम भी क्या ख्याति और शिक्षा में अभिजात नहीं हो? हाल ही में बड़े घरों की स्त्रियों के बारे में बहस हो रही थी। मैंने सुना कि एकबार "र" ने अपने आपको अभिजातों का पक्षपाती इसलिये घोषित किया था कि वे जूते अच्छे पहनते हैं। तब तो स्पष्ट ही है कि तुम सिर से पैर तक अभिजात हो।

क्षमा करना, प्यारी बहन, तुम्हारे करुण पत्र को पढ़कर मुझे तो हँसी आ गई।···तुम्हें देखने गाँव गया है। कैसी मुसीबत है! तुम डूब रही हो, मुझसे राय पूछती हो। तुमने क्या अपने को ग्रामीण नायिका नहीं बना डाला है? मेरी राय है–जितनी जल्दी हो सके अपने गाँव के गिरजे में जाकर ब्याह कर डालो और फिर हमारे यहाँ चली आओ, आकर···के घर की दीवार पर टँगे

चित्रों की 'फोनारिना'* की भाँति प्रकट होओ। मैं दिल्लगी नहीं कर रही हू, तुम्हारे प्रेमिक की लगन ने मेरे मन को छुआ है। यह सच है कि पिछले ज़माने में एक प्यार भरी नज़र की ख़ातिर प्रेमी तीन वर्ष तक फिलिस्तीन में धर्म-युद्ध लड़ने के लिये चले जाया करते थे। किन्तु हमारे युग में अगर कोई व्यक्ति अपनी हृदयेश्वरी को देखने के लिये पीतर्सबुर्ग से तीन सौ मील दूर सफर कर सकता है तो यह कोई मामूली बात नहीं, और अवश्य ही पुरस्कार के योग्य है।

८ व्लादीमीर अपने मित्र को

एक उपाय करो, अफ़वाह उड़ा दो कि मैं मृत्यु-शय्या पर पड़ा हुआ हू। छुट्टी बढ़ाकर मैं जहाँ तक हो सके तन्दुरुस्ती ठीक करना चाहता हूँ। गाँव आये दो हफ्ते हो गये मगर समय किस प्रकार उड़ गया इसका मुझे पता ही नहीं चला। पीतर्सबुर्ग के जीवन से मैं बुरी तरह तङ्ग आ गया था, इसी से यहाँ कुछ आराम किये ले रहा हूँ। अगर पिंजरे से अभी हाल में मुक्त हुई कोई आश्रमवासिनी गाँव का जीवन पसन्द न करे तो वह क्षम्य है। अगर कोई अठारह वर्ष का सरकारी नौकर गाँव से प्रेम न करे तो वह भी क्षमा योग्य है। पितर्सबुर्ग अगर प्रवेश कक्ष है, मास्को अन्तःपुर, तो गाँव हमारा पढ़ने का कमरा है। भद्र आदमी आवश्यकता पड़ने पर बरामदे से गुज़रता है, अन्तःपुर की ओर बहुत कम दृष्टि डालता है, और अपने पढ़ने के कमरे में रहता है। मैं भी इसी तरह से रहना चाहता हूँ। काम से अवकाश ले लूँगा और व्याह करके अपने सारातोव वाले गाँव में जाकर रहूँगा। ज़मींदार का ओहदा भी एक प्रकार की नौकरी है। तीन हज़ार लोगों को सम्भालना, जिनके जीवन का सुख-दुख सर्वथा हम पर निर्भर है, पल्टन की कमांडरी करने या डिप्लोमेसी सम्बन्धी दस्तावेज़ लिखने से कहीं अधिक महत्त्व रखता है। जितने अधिक उनपर हमारे अधिकार हैं उतने ही अधिक

*फोनारिना— विश्वविख्यात चित्रकार राफ़ायेल की बनाई नारीमूर्ति।—अनुवादक।

उनके प्रति हमारे कर्त्तव्य भी हैं। उन्हें हम बेईमान कारिन्दों की कृपा पर छोड़ देते हैं, जो उनपर अत्याचार करते हैं और हमारी जेब काटते हैं। अपनी भविष्य की आमदनी हम कर्ज़ करके उड़ा देते हैं, अपना सत्यानाश करते हैं। बुढ़ापे में अभाव के कारण सभी प्रकार से दूसरों की अनुकम्पा पर निर्भर करते हैं।

हमारे सामन्तवर्ग का जो इस तेज़ी से पतन हो रहा है, उसका यही कारण है। दादा धनी होते हैं, बेटा निर्धन हो गया और पोता दरदर भीख माँगता फिरता है। पुराने खानदानों का सत्यानाश होता जा रहा है। नये खानदान आते हैं और फिर यह भी तीन पुश्त में लुप्त हो जाते हैं। जायदाद गायब होती जा रही है। कोई भी खानदान अपने पूर्वजों को नहीं जानता है। यह राजनैतिक भौतिकवाद आख़िर हमे किधर ले जा रहा है? यह मैं नहीं जानता। लेकिन अब रोकथाम करने का समय आ गया है।

अपने ऐतिहासिक वंशों का जब अधःपतन देखता हूँ, तो वेदना से कातर हो जाता हूँ। हम में से कोई भी, यहाँ तक कि उनके वंशधर भी उन्हें पास फटकने नहीं देते। जिनकी याद दिलाने के लिये स्मृतिस्तम्भ लिखने पड़े हैं "नागरिक मिनिच और राजकुमार पोझारस्की के प्रति" उस जनता स्मृति के कितने गौरव की आशा की जा सकती है? यह राजकुमार पोझारस्की कौन है? कौन है यह नागरिक मिनिच?

द्मित्री मिखाइलोविच पोझारस्की नामक एक राजकुमार और कोज़्मा मिनिच सुखोरुकी नागक एक नागरिक थे जिसे समस्त राज्य में से चुना गया था। किन्तु देश तो अपने उद्धारकों के असली नाम तक भूल गया। हमारे लिये अतीत का कोई अस्तित्व ही नहीं है। हायरी जनता!

पद-कौलीन्य से वंश-कौलीन्य की कभी पूर्ति नहीं होगी। सामंतवर्ग के संस्मरण देश के ऐतिहासिक संस्मरण होने चाहिये। लेकिन मामूली क्लर्कों के लड़के-लड़कियों में कौन-सी पारिवारिक वंश-स्मृति हो सकती है?

अभिजातों के पक्ष में बोलकर मैं अंगरेज़ लार्डों की बातों को दुहरा नहीं रहा हूँ। मेरे जन्म ने मुझे इस अधिकार से वंचित किया है, लेकिन अपने जन्म के लिये मैं लज्जित नहीं हूँ। मैं लाब्रयेर से सहमत हूँ: ["अपने

जन्म-परिचय के प्रति अवज्ञा दिखाना भुँइफोड़ के लिये हास्यास्पद और सामंतों के लिये नीचता है।"] "Affecter le mepris de la naissance est un ridicule dans le Parvenu et une lachete dans le gentil-homme."

दूसरे के गाँव में रहते हुए स्थानीय छोटे मोटे सामन्तों के चाल-चलन को देखकर ये बातें मेरे दिमाग़ में आई हैं। ये सज्जन कोई काम नहीं करते हैं। अपने बगीचे को लेकर व्यस्त रहते हैं। लेकिन मेरी इच्छा है कि, हमारी तरह भगवान इन्हें भी कहीं का न रखे। कैसा वहशीपन है! इनके लिये 'फनविजिन'* का युग समाप्त नहीं हुआ है। इनमें अभी भी प्रस्ताकवा और स्कतिनिनों का जन्म हो रहा है।

यह सब मेरे उस सम्बन्धी पर लागू नहीं होता जिनके यहाँ मैं ठहरा हुआ हूँ। वे बड़े भले आदमी हैं, उनकी स्त्री भी बुढ़िया नानी की तरह स्नेहमयी है, और उनकी बेटी बड़ी भली लड़की है। देख ही तो रहा हूँ कि मैं स्वयं बड़ा भला हो गया हूँ। यह सच है कि गाँव में आकर मैं बहुत ही मिलनसार और उदार हो गया हूँ। यह मेरी ग्रामीण ज़िन्दगी का और लीज़ा के सान्निध्य का परिणाम है। मज़ाक नहीं कर रहा हूँ, उसके बिना मुझे सचमुच जीवन बड़ा नीरस प्रतीत होगा। उसे पीतर्सबुर्ग वापस चलने की बात कहने के लिये ही मैं यहाँ आया हूँ। हमारी पहली भेंट बड़ी सफल रही। वह मेरी बुआ का जन्म दिन था। सभी पड़ोसी हाज़िर हुए थे। लीज़ा भी आई—मुझे वहाँ देखा तो अपनी आँखों पर विश्वास न कर सकी ··वह मन ही मन यह अस्वीकार न कर सकी कि मैं केवल उसी के लिये यहाँ आया हूँ। मैंने तो कम से कम उसे इसी बात का विश्वास दिलाने का पूरा प्रयत्न किया। यहाँ मुझे जितनी आशा थी उससे कहीं अधिक सफलता मिली है (और यह कोई मामूली बात नहीं है)। बूढ़ियाँ मेरी तारीफ़

* अठारहवीं सदी के विख्यात रूसी लेखक देनिस इवानोविच फनविजिन (१७४५-९२)। अपने एक प्रसिद्ध प्रहसन 'नेदोरस्सल' (१७८१) में उन्होंने सामन्तवाद निर्ममता, हृदयहीनता, बुद्धिहीनता और चरम परमुखापेक्षिता का पर्दाफाश किया। ज़मींदारी की मालकिन श्रीमती प्रस्ताकवा थी और स्कतिनिन उनका सहयोगी था।—अनुवादक।

के पुल बाँधती हैं। युवतियाँ मुझे इसलिये घेरे रहती हैं, "मानो वे देश-भक्त हैं!"

तरुण मेरे छैल-चिकनियापन से बुरी तरह नाराज़ हैं। क्योंकि यहाँ यह अभी भी नई चीज़ है। ये सबसे ज़्यादा इसलिये बिगड़े हैं, क्योंकि मैं बहुत भद्र और नम्र हूँ। लेकिन मेरा इरादा क्या है, इसका वे अन्दाज़ नहीं लगा पा रहे हैं, यद्यपि उन्होंने मुझे मन ही मन बेहया समझ लिया है। विदा! हमारे सभी मित्र क्या कर रहे हैं? [तुम सभी का विनीत सेवक] Servitor ditutti quantif चिट्ठी गाँव के पते पर देना।

६. मित्र का उत्तर

जो काम तुमने मुझे सौंपा था उसे मैंने पूरा कर दिया। कल थियेटर में मैंने यह घोषणा कर दी कि तुम स्नायविक उत्तेजना से अस्वस्थ हो गये हो और शायद अब तक चल बसे हो। इसलिये जबतक फिर तुम्हारा पुनर्जन्म नहीं होता तबतक जीवन के सुअवसर का सदुपयोग कर लो।

ज़मींदारी चलाने के बारे में तुम्हारी नीति भरी बातें सुनकर तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। क्या सच ही

[यद्यपि वह राजा नहीं है, ड्यूक नहीं है, काउन्ट नहीं है,
फिर भी उसके मन में कोई भय संशय नहीं है।]
Un nomme sans peur et sans reproches
Qui n'est ni roi, ni duc, ni comte aussi

मेरे विचार में तो ज़मींदार की स्थिति सबसे अधिक ईर्ष्याप्रद होती है। जहाँ सरकारी मुलाज़िमों के सिवा और किसी से घोड़े नहीं मिलते, कम से कम सिर्फ़ उसी पड़ाव के लिये रूस का सरकारी नौकर होना ज़रूरी है।

... ...

गहन विचारों पर बहस में मैं यह तो बिलकुल भूल ही गया था कि अब तुम्हें इन बातों में किसी प्रकार की दिलचस्पी क्यों होगी—तुम तो अपनी लीज़ा के ध्यान में मग्न हो। क्या तुम सदा मिस्टर फ़ाब्लास की

भाँति स्त्रियों को नचाने में ही आनन्द पाते हो? यह तुम्हें शोभा नहीं देता। इस मामले में तुम अपने युग से पिछड़ गये हो और सन् १८०७ के फटी आवाज़वाले उस पल्टन के कमांडर की भाँति रास्ता खो बैठे हो। अगर यह दोष कायम रहा तो शीघ्र ही तुम जनरल "ग"...से भी अधिक हास्यास्पद हो जाओगे। क्या बेहतर न होगा कि पहले ही से पकी उम्र के कठोर जीवन की आदतें डाल लो और ढलती जवानी से स्वयं ही अवकाश ले लो? जानता हूँ कि व्यर्थ ही उपदेश दे रहा हूँ, किन्तु यही तो मेरा काम है।

तुम्हारे सब मित्र तुम्हें सलाम भेजते हैं और तुम्हारी असामयिक मृत्यु से बहुत दुखी हैं। जो भी हो, तुम्हारी वह कभी की बान्धवी रोम से लौट आई है, उसका पोप से प्रेम हो गया है। यह बात तो सर्वथा उसके चरित्र के अनुकूल है और तुम यह सुनकर अवश्य प्रसन्न ही होगे! [क्या भगवान के दासों से] cum servo servorum dei प्रतियोगिता करने यहाँ नहीं आओगे? यह तो तुम्हीं को फबता। मैं रोज़ तुम्हारी प्रतीक्षा में रहूँगा।

१०. व्लादीमीर का अपने मित्र को

तुम्हारी दलील बिलकुल लचर है। मैं नहीं, तुम्हीं अपने युग से पूरे दस वर्ष पिछड़ गये हो। १८१८ में तुम्हारी गम्भीर सात्त्विक बहस चल सकती थी। उन दिनों भी कानून की कड़ाई और अर्थनीति ही फैशन थे। लोग बॉल-नृत्यों में तलवार लेकर ही जाते थे। आज्ञा हो तो निवेदन करूँ कि अब यह सब बदल चुका है। ऐडम स्मिथ के आर्थिक सिद्धान्तों का स्थान अब फ्रेंच काद्रील नृत्य ले चुका है—जिसको जैसा और जितना आता है लड़कियों के पीछे घूमता है और जीवन का रस लेता है। मैं युग की गति के साथ चलता हूँ, किन्तु तुम जड़ समान हो। [तुम भूत-काल में रहनेवाले पिछड़े हुए] ci-devant unhomme व्यक्ति हो, विरोधी दल की बेंचों पर अकेले बैठे रहने से तुम्हें आनन्द आता है। आशा करता हूँ कि "ज़" तुम्हें सीधे रास्ते पर ले आयेगी। मैं तुम्हें उसके छल-बल के हाथों सौंप रहा हूँ। अपने बारे में सिर्फ़ इतना ही कह सकता

हू कि मैंने अपने को संभ्रान्त जीवन के स्रोत में बहा दिया है। रात के दस बजे सोता हूँ, नई बर्फ़ पर स्थानीय जमींदारों के साथ गाड़ी पर घूमने निकलता हूँ, एक कोपेक की बाजी लगाकर बूढ़ियों के साथ 'बोस्तान'* खेलता हूँ और हारने पर गुस्सा हो जाता हूँ। लीज़ा से रोज़ मुलाकात होती है और उसके साथ प्रेम प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा है। उसकी बहुत सी बातें बड़ी आकर्षक हैं—जैसे आहिस्ता से मधुर आवाज़ में बात करने का ढंग, पीतर्सबुर्ग के उच्च समाज की शिष्टता और इसके साथ ही ऐसी सजीवता, उदारता, और (जैसे कि उसकी दादी कहती है) उच्च वंश सुलभ सरलता। उसकी किसी बात में आकस्मिकता, क्रूरता का लेशमात्र भी नहीं है। बच्चे रेवियन** खाकर जिस तरह मुँह बिदकाते हैं वह वैसा नहीं करती थी। उसके चरित्र में इतना संयम है कि किसी प्रिय या अप्रिय बात को सुनकर उसकी मुखमुद्रा बदलती नहीं। वह सुनती और समझती है—जो हमारी स्त्रियों में बड़ा दुर्लभ गुण है। जो लड़कियाँ यूँ अच्छी लगती हैं, उनकी कल्पनाशक्ति की अस्पष्टता देखकर अचरज होता है। प्रायः ऐसा होता है कि किसी सूक्ष्म विनोद को, किसी कवितापूर्ण सम्बोधन को वे या तो बेशर्म व्यंग समझ लेती हैं या कोई अशोभन नादानी। ऐसे समय उनकी आकृति इतनी निर्मम और भयंकर हो जाती है कि उसके सामने प्रबल से प्रबल प्रेम भी भस्म हो जाता है।

इसका अनुभव मुझे येलेना "क"…के साथ हो चुका है, जिससे मुझे इतना प्रेम था कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। मैंने उससे कुछ अनुरागपूर्ण बातें कहीं जिसे उसने अश्लीलता समझा और फिर मेरी शिकायत अपनी एक सहेली से की। इससे उसके बारे में मेरा मोह दूर हो गया। लीज़ा के अतिरिक्त मेरे मनोरंजन के लिये यहाँ माशेन्का है। वह बड़ी प्यारी लड़की है। यह लड़कियाँ जो सेव के वृक्षों के तले और खलिहानों के बीच में बड़ी हुई हैं, जिनका चाचियों, और बुआओं और प्रकृति ने लालन-पालन किया

* तास का एक तरह का खेल।—अनुवादक।

** वोल्गा के किनारे उगनेवाली एक तरह की लता। इससे तरह तरह की दवाएँ बनती हैं।—अनुवादक।

है। ये हमारी उबानेवाली सुन्दरियों से कहीं अधिक मधुर हैं। हमारी सुन्दरियाँ ब्याह न होने तक अपनी माताओं के विचारों को दुहराती हैं और ब्याह के बाद पतियों की हाँ में हाँ मिलाती हैं। अलविदा, प्रिय मित्र! तुम्हारी दुनिया की कोई नई ताज़ी ख़बर है? सब को सूचित कर देना कि आख़िर मैं भी काव्य-जगत् में उतर आया हूँ। हाल ही में मैंने ज़मींदार कन्या ओल्गा के चित्र के लिये एक पंक्ति लिखा है (जिसके लिये लीज़ा ने मुझे मधुर ढंग से फटकारा है।)

"सत्य की भाँति बुद्धिहीन, संपूर्णता की भाँति त्रुटिहीन।"

या शायद यूँ बेहतर रहे:

"संपूर्णता की भाँति त्रुटिहीन, सत्य की भाँति बुद्धिहीन।"

दोनों तरह अभिप्राय ठीक हो जाता है। "व" से कहना कि पद्य की पहली पंक्ति खोज ले और आज से मेरी गिनती कवियों में किया करे।

१८२९

किर्जालि

जन्म से किरजाली बुल्गार था। तुर्की भाषा में किरजाली का अर्थ है शूरवीर, सूरमा। उसका असली नाम क्या था यह मैं नहीं जानता।

अपनी डकैतियों से किरजाली ने समस्त मोल्दाविया में आतङ्क फैला रखा था। वह कैसा आदमी था यह बताने के लिए मैं आपको उसके एक कारनामे की बात बताऊँगा। एक रात उसने और अलबानीय मिखाइलाकी ने एक साथ एक बुल्गार गाँव पर हमला कर दिया। गाँव में दोनों ओर से आग लगा देने के बाद उन्होंने एक-एक झोपड़ी में प्रवेश करना शुरू किया। किरजाली सिर काट रहा था और मिखाइलाकी लूट का माल सम्भाल रहा था। दोनों "किरजाली!" "किरजाली!" कह कर चिल्ला रहे थे। आतंक से सारा गाँव भाग खड़ा हुआ।

जब अलेक्सान्द्र इप्सीलान्ती ने बग़ावत की घोषणा कर अपनी सेना इकट्ठी करनी शुरू की तो अपने कई पुराने साथियों को लेकर किरजाली भी उसके साथ शामिल हो गया। हितेरिया* का असली लक्ष्य यह लोग शायद ही समझते थे। लेकिन वे मानो यह बात बिलकुल साफ़ समझ गये थे कि युद्ध ने उनके सामने तुर्कों को और संभव हो तो मोल्दावों को लूटकर धनी बनने का सुअवसर ला दिया है।

व्यक्तिगतरूप से अलेक्सान्द्र इप्सीलान्ती निडर और साहसी था किंतु जिस काम का बीड़ा उसने इतने जोश और असावधानी से उठा लिया था उसे सफल करने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता थी उनका उसमें अभाव था। भाग्य ने उसे जिन लोगों का नेता बना दिया था उन्हें सम्भालना वह नहीं जानता था। उसके प्रति इन लोगों के हृदय में न आदर था और न विश्वास ही। लड़ाई में जब यूनानी नौजवान वीरों का श्रेष्ठतम भाग नष्ट हो गया तो योरदाकी ओलिम्बियोती** ने उसे सेना का नेतृत्व छोड़ देने की सलाह दी

* हितेरियाइयों का लक्ष्य यूनान को तुर्की पराधीनता से मुक्त करना था।—अनु०

** योरदाकी ओलिम्बियोती—सही नाम योर्गाकी ओलिम्बियस था। वे तुर्की

और स्वयं उसका स्थान ले लिया। इप्सीलान्ती आस्ट्रिया की सीमा की ओर भाग निकला, जहाँ से उसने इन लोगों को अपना अभिशाप भेजना और उन्हें नीच, कायर और अवज्ञाकारी कहकर गाली देना जारी रखा। ये वे नीच और कायर लोग थे जिनका अधिकांश भाग वीरता से संख्या में अपने से दस गुना अधिक दुश्मन से अपना बचाव करता हुआ सेकू के मठ की दीवारों के भीतर या प्रुत नदी के तट पर वीरगति को प्राप्त हो गया था।

किरजाली गियोर्गी कान्ताकूज़िन * की पल्टन में था। कान्ताकूज़िन के बारे में भी वही बात लागू होती है जो इप्सीलान्ती के बारे में कही जा चुकी है। स्कुलियानी की लड़ाई के ठीक पहले कान्ताकूज़िन ने रूसी सेनानायक से हमारी करान्टीन** में आ जाने की अनुमति माँगी। इससे पल्टन नेतारहित हो गई। किन्तु किरजाली, सफ़ियानोस, कन्तागोनी और उनके दूसरे साथियोंने नेता की कोई आवश्यकता नहीं समझी।

सम्भवतः स्कुलियानी की लड़ाई की यथार्थ हृदयविदारक कहानी का वर्णन किसी ने अभी तक नहीं लिखा है। ज़रा कल्पना कीजिये कि सात सौ आदमी—मुसलमान, अलबानीय, यूनानी, बुल्गार और हर प्रकार के जो युद्ध-कौशल से बिलकुल कोरे थे; पन्द्रह हज़ार तुर्की घुड़सवार सेना के सामने पीछे हटते हुए प्रुत नदी के किनारे पहुँचे। अपने सामने उसने दो छोटी-छोटी तोपें खड़ी कर दीं। ये तोपें इन्हें यासी के ज़मींदार के महल के अहाते में मिली थीं। धार्मिक तिथि के भोज के अवसर पर दोनों तोपों से वे गोला दाग़ने लगे। तुर्क सिपाही गोला चलाना चाहते थे लेकिन रूसी सेनानायक की अनुमति के बिना ऐसा करने का उन्हें साहस नहीं हुआ। तोप के गोले नदी

की अधीनता से मुक्त होने के लिए ग्रीस के विद्रोह के विशिष्ट नेता थे। विद्रोहियों की हार के बाद ये सेकू मठ में जा छिपे। दुश्मनों से बचने के लिए मठ में छिपाकर रखे बारूद के विस्फोट से वीरगति को प्राप्त हुए।—अनुवादक।

* पूरा नाम प्रिन्स ग. म. कान्ताकूज़िन। ये ग्रीस के विद्रोह के नेताओं में थे। किशिनेव में इनका पुश्किन से परिचय हुआ था। १८५७ ई० में इनकी मृत्यु हुई।—अनुवादक।

** बीमार सिपाहियों के लिए अलग शिविर।—अनुवादक।

के इस पार ज़रूर हमारी ओर तक पहुँच जाते। हमारे करान्टीन का कमांडर (जिसका अब देहान्त हो चुका है) यद्यपि फ़ौज में चालीस वर्ष बिता चुका था, किन्तु अब तक उसने कभी गोली-गोले की सनसनाहट नहीं सुनी थी। और अब यह ध्वनि सुनाने के लिए ईश्वर उसे यहाँ खींच लाया था। कई एक गोलियाँ उसके कानों के पास से सनसनाती हुई निकल चुकी थीं। क्रोध के मारे बूढ़ा स्वेच्छा-सेनावाहिनी के मेजर को इसके लिये गाली देने लगा। यह पल्टन करान्टीन के साथ तैनात थी। मेजर की समझ में नहीं आया कि क्या करे। वह दौड़कर नदीतट पर पहुँचा, जिसके पार तुर्की देलीबाश* लोग घोड़े पर सवार घमंड से झूम रहे थे। तर्जनी उठाकर मेजर चिल्लाने लगा। उसे देखकर देलीबाश मुँह फेर घोड़ों को घुमाकर ऐंड़ लगाई और सरपट भाग खड़े हुए। उनके पीछे सारी तुर्की पल्टन हो ली। तर्जनी हिलाकर चिल्लानेवाले इस मेजर का नाम हरचेव्स्की था। उसे क्या हुआ यह मैं नहीं जानता।

लेकिन अगले दिन तुर्कों ने विद्रोहियों पर धावा बोल दिया। गोला-गोली चलाने का साहस न होने के कारण उन्होंने अपने आम व्यवहार के विपरीत लौहशस्त्रों से ही आक्रमण करना तय किया। घनघोर लड़ाई हुई। तलवारों से मारकाट हुई। तुर्कों की ओर भाले दिखाई देने लगे लेकिन वे भाले का इस्तेमाल नहीं जानते थे। ये रूसी भाले थे—तुर्कों की ओर से नेक्रासोवपंथी** लड़ रहे थे। विद्रोही हमारे राजा की अनुमति ले प्रुत नदी पारकर हमारी करान्तीन में आकर छिप सकते थे। उन्होंने नदी पार करना शुरू किया। आख़िरकार कान्तागोनी और सफ़ियानोस तुर्कों के साथ उसी पार रह गये। किरजाली पहिले ही घायल हो चुका था, वह करांटीन में पड़ा हुआ था। सफ़ियानोस मारा गया था, कन्तागोनी के पेट में भाला धँस गया था। वह बड़ा मोटा-ताज़ा आदमी था। एक हाथ से तलवार उठाई

* देलीबाश—तुर्की सेना।—अनुवादक।

** नेक्रासोवपंथी—डाकू नेक्रासा के नेतृत्व में दोन नदी के तटों पर विद्रोह करनेवाले कसाकों का नाम। प्रथम पीतर की सेना से हारकर ये पहिले कुबान और फिर तुर्की में फैल गये।—अनुवादक।

दूसरे से दुश्मन के भाले को पकड़कर अपने पेट में और थोड़ा-सा घुसेड़ लिया। और इस प्रकार तलवार को दुश्मन तक पहुँचाने में सफल हो गया। दोनों एक साथ ही धराशायी हुए।

सब कुछ समाप्त हो चुका था। विजय तुर्कों की हुई। मोल्दाविया स्वतन्त्र हो गया। करीब छः सौ डाकू बेसारेबिया में जहाँ-तहाँ फैल गये। वे यह न जानते थे कि पेट किस प्रकार पालेंगे। फिर भी रूस ने उनकी सहायता की थी, इसके लिए वे उसके कृतज्ञ थे। वे आनन्द से मस्त हो गये। मगर अमिताचार के रास्ते पर नहीं गये। बेसारेबिया के अर्ध तुर्की इलाके के रेकाफ़ी खानों में वे हमेशा दिखाई पड़ते जहाँ वे ओठों में लम्बे पाइप दबाये, छोटे-छोटे प्यालों से काफ़ी की चुस्कियाँ लेते पाये जाते थे। उनकी रंगबिरंगी पोशाकें और नुकीले लाल नागरा जूते फटने लगे थे लेकिन अब तक वे अपनी फुँदनेवाली गोल मखमली टोपियाँ सिर पर तिरछी करके पहनते। उनके चौड़े कमरबन्दों से तलवार और पिस्तौलें लटकती नज़र आती थीं। उनके खिलाफ़ किसी ने कोई शिकायत नहीं की। इसकी कल्पना करना भी असम्भव मालूम होता कि यह शान्तिप्रिय गरीब लोग किसी समय मोल्दाविया के मशहूर डाकू और नृशंस किरजाली के शागिर्द थे और किरजाली स्वयं इन्हीं लोगों के साथ था।

यासी के शासक पाशा को इस बात का पता चलते ही शान्ति-सन्धि की शर्त्त के अनुसार रूसी अधिकारियों से मांग की कि इन डकैतों को उसके हवाले कर दिया जाये।

पुलिस ने ढूँढ़ना शुरू कर दिया। पता चला कि किरजाली सचमुच ही किशीनेव में मौजूद है। एक दिन शाम के धुँधलके में सात साथियों के साथ बैठा जब वह खाना खा रहा था, तो एक भगोड़े सन्यासी के घर में उसे गिरफ़्तार कर लिया गया।

किरजाली को हवालात में रखा गया। सत्य को छिपाने का प्रयत्न न करके उसने कबूल किया कि वही किरजाली है। वह बोला, "प्रूत नदी को पार करने के बाद से मैंने किसी का धन छुआ तक नहीं हैं, एक बंजारे पर भी हाथ नहीं उठाया है। तुर्कों, मोल्दावों और वलाखदों की दृष्टि में मैं अवश्य डाकू हूँ लेकिन रूसियों के लिए मैं अतिथि हूँ। हमारे

गोले-गोलियों के खतम हो जाने पर जब सफ़ियानोस हमारी करान्टीन के पास आया तो घायल सिपाहियों से बटन, पिन, चेन, तलवार की मूठों की कीमती चीज़ों को लेकर मैं उसे बीस बेशलिक * देकर खाली हाथ हो गया। भगवना जानता है कि मैं किरजाली दान-पुण्य करके ही अपना जीवन बिता रहा हूँ! और आज किस कारण रूसी मुझे मेरे दुश्मनों के हवाले कर रहे हैं?"—यह कहकर किरजाली चुप हो गया और शान्त तथा अडिग भाव से अपने भाग्य के फैसले की प्रतीक्षा करने लगा।

उसे अधिक देर ठहरना नहीं पड़ा। डाकुओं के जीवन के अनूठे पहलुओं को देखने के लिए अधिकारी बाध्य न थे। उन्हें विश्वास था कि पाशा की माँग वाजिब है और उन्होंने किरजाली को यासी वापिस भेजने का हुक्म दे दिया।

दिल और दिमाग़ के धनी एक तरुण अफसर ने मुझे उसके [किरजाली] वापिस जाने की कहानी जानदार भाषा में लिख भेजी थी।

जेल के फाटक के सामने एक कारूत्सा डाक गाड़ी खड़ी थी··· (आपलोग शायद नहीं जानते कि कारूत्सा किसे कहते हैं! यह बाँस की बनी नीची गाड़ी होती थी। अभी कुछ दिन पहिले भी इसमें आमतौर से छः या आठ टट्टू जोते जाते थे) भेड़ की खाल की टोपी पहने मूँछोंवाला एक मोल्दाव इन्हीं में से एक की पीठ पर बैठकर बराबर चिल्लाता और चाबुक फटकारता जाता था और टट्टू ख़ासी सरपट चाल से दौड़ते जाते थे। अगर घोड़ों से कोई पिछड़ने लगता तो तरह-तरह की भद्दी गालियाँ सुनाकर कोचवान उसे रास्ते में ही खोल देता था। घोड़े का क्या होगा, इसकी उसे ज़रा भी परवाह न थी। उसे पूरा विश्वास था कि लौटानी उसी जगह पर आराम से स्तेप में हरी घास चरता हुआ उसका घोड़ा मिल जायगा। अकसर ऐसा होता कि आठ घोड़ों के साथ एक पड़ाव से चला हुआ यात्री दूसरे पड़ाव पर केवल दो घोड़ों के साथ पहुँचता! पन्द्रह वर्ष पहले ऐसा होता था। अब तो बेसारेबिया रूस बन गया है; वहाँ रूसी साज़ और रूसी गाड़ी चालू हो गई है।)

* बेशलिक—चाँदी का तुर्की सिक्का।—अनुवादक।

सन् १८२१ के सितम्बर के आख़िरी दिनों इसी प्रकार की एक कारुत्सा गाड़ी जेल के फाटक के सामने खड़ी थी। चौड़े आस्तीनोंवाली, स्लीपर घसीटती हुई यहूदी स्त्रियाँ, फटे और रंगबिरंगे कपड़े पहने डाकू, गोद में काली आँखोंवाले बच्चे लिये गठे हुये सुन्दर शरीरोंवाली मोल्दावी स्त्रियाँ गाड़ी को घेरे खड़ी थीं। पुरुष ख़ामोश खड़े थे और स्त्रियाँ बड़ी उत्सुकता से किसी बात की अधीर प्रतीक्षा कर रही थीं!

अचानक फाटक खुला और कुछ पुलिस अफ़सर सड़क पर निकल आये। उनके पीछे दो सिपाही बेड़ियाँ पहने हुए किरजाली को ले आये।

देखने में उसकी आयु तीस की लगती थी। उसके साँवले चेहरे की रेखाएँ सीधी और कठोर थीं। उसके विशाल क़द, चौड़े कंधे, सब कुछ से एक अद्भुत शारीरिक शक्ति का आभास होता था। उसका सिर तिरछी बँधी हुई रङ्गीन पगड़ी से ढका हुआ था और पतली कमर पर चौड़ा कमरबन्द था। मोटे नीले कपड़े को घुटनों तक लटकती हुई चौड़ी कमीज़ और लाल नुकीले जूते—उसकी पोशाक को पूरा करते थे। उसकी भंगिमा गर्वदृप्त मगर शान्त थी।

सरकारी अफ़सरों में से एक लाल चेहरेवाले बूढ़े ने—जिसकी फ़ीके रङ्ग की वर्दी पर तीन बटन लटक रहे थे और जिसकी नाक के स्थान पर एक लाल घुँडी मात्र थी—अपनी घुंडीनुमा नाक पर लोहे की कमानीवाला चश्मा चढ़ाया और एक काग़ज़ खोल वह नकियाकर मोल्दावी भाषा में कुछ पढ़ने लगा। बीच-बीच में वह गुस्ताख़ की तरह बेड़ियों से जकड़े किरजाली की ओर कठोर दृष्टि से देखता जाता था। स्पष्ट था कि इस दस्तावेज़ का किरजाली से ही सम्बन्ध था। किरजाली ध्यान से उसे सुन रहा था। पढ़ना समाप्त कर अफ़सर ने काग़ज़ के पर्चे को तहियाया और डाटकर लोगों को वहाँ से हट जाने को कहा। फिर उसने कारुत्सा गाड़ी को बढ़ा लाने का हुक्म दिया। किरजाली ने उसकी ओर मुड़कर मोल्दावी भाषा में कुछ कहा। उसकी आवाज़ भर्राई हुई थी और चेहरा बिलकुल बदल गया था। रोता हुआ वह कारकुन के पैरों पर गिर पड़ा और उसकी बेड़ियाँ झनझना उठीं। पुलिस अफ़सर घबराकर पीछे हट गया! सिपाही किरजाली को उठाना चाहते ही थे कि वह स्वयं ही उठ खड़ा हुआ और बेड़ियाँ समेटकर गाड़ी

में जा बैठा और चिल्लाकर बोला—"हाँको!" उसकी बग़ल में पुलिस का एक सिपाही बैठ गया था। मोल्दावी कोचवान ने चाबुक फटकारा और गाड़ी चल पड़ी।

"किरजाली ने आपसे क्या कहा?" एक नवयुवक अफ़सर ने पुलिस अफ़सर से पूछा।

पुलिस अफ़सर ने हँसते हुये उत्तर दिया था—"जानते हैं, वह मुझसे अपनी स्त्री और बच्चों की देखभाल करने का अनुरोध कर रहा था। वे किलिया के पास ही किसी बुल्गार गाँव में रहते हैं। उसे डर है कि उसके कारण कहीं इन लोगों को भी तकलीफ़ न हो। लोग कैसे पागल होते हैं!"

नौजवान अफ़सर की कहानी से मैं बड़ा अभिभूत हुआ। बेचारे किरजाली पर मुझे बड़ा तरस आ रहा था। इसके बाद उस पर क्या बीती यह मैं बहुत अरसे तक नहीं जानता था। कुछ ही वर्ष पहिले इस तरुण अफ़सर से मेरी दुबारा मुलाकात हुई। हमलोग अतीत के बारे में बातें करने लगे।

"कहिये, आपके मित्र किरजाली का क्या समाचार है? क्या हुआ उसका कुछ जानते हैं?"

"जानूँगा क्यों नहीं?" कहकर उन्होंने शुरू किया।

"यासी लाकर किरजाली को पाशा के सामने पेश किया गया। पाशा ने फैसला कर के उसे सूली पर चढ़ा देने का हुक्म दे दिया। मौत की सज़ा का दिन किसी त्यौहार तक स्थगित कर दिया गया। इस बीच में उसे जेल में डाल दिया गया।

"क़ैदी की निगरानी के लिये सात तुर्क तैनात थे। (यह सीधे सादे लोग दिल से किरजाली की ही भाँति डाकू थे)। वे किरजाली को आदर की दृष्टि से देखते और सब पूरब के देशों के निवासियों की भाँति उसकी अद्भुत कहानियों को बड़ी लोलुपता से सुनते थे। इस तरह की लोलुपता प्राच्य जगत् के लोगों में देखी जाती है।

"बंदी और उसके पहरेदारों में एक गहरी आत्मीयता उत्पन्न हो गई थी। एकदिन किरजाली उनसे बोला—'भाइयो, मेरा अन्त करीब आ रहा है। कोई अपने भाग्य से बच नहीं सकता! थोड़े दिनों में ही मुझे तुम-

लोगों से अलग होना पड़ेगा। मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम्हारे पास यादगार के लिए कुछ छोड़ जाऊँ।"

तुर्कों ने कान खड़े किये।

"भाइयो,"— किरजाली ने कहना ज़ारी रखा "तीन वर्ष पहिले जब मैं और स्वर्गीय मिखाइलाकी डाके डाला करते थे, उस समय यासी के निकट स्तेप में हमने मुहरों से भरी एक हाँड़ी ज़मीन में गाड़ रखी है। देख रहे हो कि इस धनदौलत को मैं या वह, कोई नहीं पा रहे हैं। अब तुम्हीं लोग उसे मिलजुलकर आपस में बाँट लो।

"तुर्कों का सिर चकरा गया! वे विचार विनिमय करने लगे कि किस प्रकार उस गुप्त जगह को ढूँढ़ निकाला जाय। बहुत सोच विचार के बाद तय किया कि किरजाली खुद ही उन्हें रास्ता दिखाकर वहाँ ले चले।

"रात हुई। तुर्कों ने बंदी के पैरों की बेड़ियाँ खोल दीं और रस्सी से उसके दोनों हाथ बाँध दिये, फिर शहर के बाहर स्तेप की ओर रवाना हो गये।

"एक से दूसरे टीले पर से होता हुआ किरजाली एक ही दिशा में उन्हें राह दिखाकर ले चला। वे बड़ी देर तक चलते रहे। आख़िर एक चौड़े पत्थर के पास किरजाली रुक गया। यहाँ से दक्षिण की ओर उसने बाहर क़दम नापे और फिर पैर पटककर बोला—'यहाँ!'

"तुर्क कतार में खड़े हो गये। चार आदमी तलवार निकालकर ज़मीन खोदने में लग गये। तीन पहरे पर तैनात रहे। किरजाली एक शिला पर बैठा उनका काम देखने लगा।

"वह पूछता रहा, क्यों हो गया? इसी वक्त हो जायगा न? गढ़ा खोदना ख़तम हो गया क्या?"

"नहीं, अभी नहीं हुआ—उत्तर देकर तुर्क इस तरह काम करने लगे कि उनके बदन से पसीना छूटने लगा।

"किरजाली अधीर हो उठा। वह बोला, 'कैसे आदमी हैं! ठीक से मिट्टी खोदना भी नहीं जानते। मैं होता तो दो मिनट में सब हो जाता। बच्चे हैं! मेरे हाथ खोल दो, ज़रा तलवार तो देना।'

"तुर्क गंभीर होकर सोचने विचारने लगे।

"इसमें क्या धरा है? उन्होंने तय किया; उसके हाथों का बंधन खोलकर उसे तलवार दे दें। इसमें कौनसा नुकसान है? वह अकेला है, और हम सात हैं। तुर्कों ने उसका हाथ खोलकर उसे तलवार दे दी।

"अन्त में किरजाली मुक्त हुआ, उसे हथियार मिला। निश्चय ही उसके अन्दर किसी चीज़ की अनुभूति हुई थी। वह बड़े ज़ोर-शोर से मिट्टी खोदने लगा। पहरेदार उसकी मदद कर रहे थे…अचानक उसने उनमें से एक की छाती में अपनी तलवार घुसेड़ दी; तलवार को उसकी छाती में घुसा रख उसने उसकी कमर से दो पिस्तौलें खींच लीं।

"किरजाली को दो पिस्तौलें लिए खड़े होते देख बाकी छः भाग गये!

"किरजाली आज भी यासी के आसपास के इलाके में लूटपाट किया करता है। कुछ दिन पहिले उसने शासक को एक चिट्ठी लिखी थी। पाँच हज़ार लेव [बुलगारिया का सिक्का] की माँग की थी और रुपये मिलने में गड़बड़ी हुई तो यासी में आग लगाने और खुद शासक को गिफ़्रतार करने की धमकी दी थी। पाँच हज़ार रुपये उसके पास भेज दिये गये थे।"

किरजाली कैसा लगा?

१८३४

इसकापन की
बीबी

इस्कापन की बेगम

इस्कापन की बीबी गूढ़ अमंगल का लक्षण है।

—ज्योतिष गणना की नवीनतम पुस्तक से

घोर बादल की रात में
मित्रगण सब मस्त होते
अकसर;
और सौ पचास के
दाँव लगाया
करते थे।
जो दाँव जीतता
खड़िया से
लिख लेता था।
घोर बादल की रात में
जुये के नशे में
मस्त होते
सभी।

एक दिन घोड़सवार सेना के सिपाही नारूमोव के घर पर ताश का खेल जमा हुआ था। जाड़े की लम्बी रात अनजाने ही बीत गई; पाँच बजे सबेरे सभी रात का खाना खाने बैठे। जिन्होंने बाजी जीती थी वे छक् कर खा रहे थे, दूसरे लोग अपनी प्लेटों के सामने अन्यमनस्क बैठे हुए थे। लेकिन शैम्पेन आने पर बातचीत फिर जम गई और सभी उसमें शामिल हुए।

गृहस्वामी ने पूछा, "तुम्हारा क्या हाल रहा, सूरिन ?"

"हमेशा की तरह हार गया हूँ। मानना ही पड़ेगा कि मेरी किस्मत ख़राब है। मिरानदल * की तरह खेलता हूँ, दिमाग़ कभी गरम नहीं करता। अक्ल कदापि नहीं चकराती, फिर भी हमेशा हारता ही जा रहा हूँ !"

* मिरानदल की तरह खेलना—दाँव बिना बढ़ाये ही खेलना। (मूल संस्करण की सम्पादकीय टिप्पणी।)

"तुम क्या एक बार भी लालच में नहीं पड़े? तुमने क्या रूत * के ऊपर एकबार भी बाजी नहीं रखी?···तुम्हारा संयम देखकर मुझे अचरज होता है।

एक तरुण इन्जीनियर की ओर इशारा करके मेहमानों में एक बोल उठा, "हेरमन को देखिये! ज़िन्दगी में कभी ताश नहीं छुआ, ज़िन्दगी में कभी दूना दाँव नहीं लगाया। लेकिन पाँच बजे सबेरे तक बैठा हमारा खेल देखता है!"

हेरमन बोला, "खेल मुझे बहुत अच्छा लगता है, लेकिन अतिरिक्त कुछ पाने की आशा में ज़रूरी चीज़ से हाथ धो बैठने के लायक मेरी हालत नहीं है।"

तोमूस्की बोला, "हेरमन जर्मन है, हिसाबी है, मामला यही है! लेकिन अगर ऐसा कोई है जिसे मैं नहीं समझता तो वह मेरी दादी काउन्टेस अन्ना फेदोतोव्ना हैं।"

मेहमान चिल्ला पड़े, "क्या? यह कैसे?"

तोमूस्की बोलता गया, "मेरी समझ में यह नहीं आता कि मेरी दादी ताश क्यों नहीं खेलतीं?"

"अस्सी साल की बुढ़िया नहीं खेलती हैं तो इसमें अचरज की कौन सी बात है?" नारूमोव ने कहा।

"यानी आप उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं?"

"नहीं! सचमुच ही कुछ भी नहीं जानता!"

"अच्छा, तो सुनिये—

"साठ साल पहिले मेरी दादी पेरिस गईं। वहाँ उनको लेकर बड़ी चहल-पहल मच गई। ल विनस मास्कोवाइत [मास्को की विनस] को देखने के लिये लोग उनके पीछे दौड़ते थे। रिशिल्यू उन पर जान देता था, दादी कहती हैं कि वह उनकी निठुरता के कारण गोली मारकर आत्म-हत्या करने जा रहा था?

* रूत—जुये में अगर एक आदमी लगातार हारे और दूसरा लगातार जीते तो हारनेवाला अगर अपने दाँव को बदल कर लगातार जीतनेवाले के दाँव को अपना दाँव समझे तो उसे 'रूत' पर दाँव रखना कहते हैं।—अनुवादक

उस जमाने में भद्र महिलायें भी फारो खेलती थीं। एक दिन महल में आर्लेआँ के ड्यूक के साथ उधार खेल कर वह बहुत ज़्यादा रकम हार गईं। घर लौटकर दादी ने नकली तिलों को साफ़ कर डाला, फिज्म * भी उतार डाला, फिर दादा को अपने हारने की बात बता कर्ज़ पटा देने को कहा।

मुझे जहाँ तक याद है दिवंगत दादादादी के मुनीम जैसे थे। वे दादी से आग की तरह डरते थे। लेकिन भयंकर हार की बात सुनकर उन्होंने अपना धीरज खो दिया। हिसाब लगाकर उन्होंने दिखाया कि पिछले छ महीनों में उन्होंने करीब पाँच लाख रुपये खर्च किये हैं। उनकी मास्को या सारातोव की ज़मींदारी अब पेरिस के इर्द-गिर्द नहीं है, इसलिए उन्होंने कर्ज़ पटाने में साफ़-साफ़ आपत्ति की। दादी ने उनके गालपर एक तमाचा जड़ गुस्सा दिखा अकेली ही जाकर लेट गईं।

अगले दिन उन्होंने पति को बुला भेजा; सोचा था कि दाम्पत्य दण्ड का नतीज़ा इसी बीच हुआ है, लेकिन देखा कि वे अडिग हैं। ज़िन्दगी में यह पहली बार उन्होंने पति के सामने तर्क और कैफ़ियत पेश करने के लिये हार मानी। सोचा कि उन्हें लज्जित करेंगी, कुछ नीचा देखकर उन्हें दिखा देंगी कि देते बहुतेरे हैं मगर एक प्रिन्स और एक गाड़ीवान के देने में अवश्य ही अन्तर है। लेकिन कहाँ की बात कहाँ! दादा ने बग़ावत की है। सिर्फ़ एक ही शब्द कहते हैं—नहीं! क्या करना चाहिये, यह दादी की समझ में नहीं आया।

एक बड़े ही विचित्र आदमी से उनका थोड़ा-सा परिचय था। आपलोगों ने काउन्ट सेन-जेरमियेन की बात सुनी है? उनके बारे में विचित्र-विचित्र कहानियाँ सुनने में आती हैं। आपलोग जानते हैं, वे अपना परिचय चिरन्तन यहूदी कहकर देते थे; कहते वे अमृत के पारसपत्थर के आविष्कारक हैं, इसी तरह की न जाने और कितनी ही बातें। जुआचोर कहकर सभी उनका मज़ाक उड़ाते, लेकिन कज़ानोवा ने अपने संस्मरण में लिखा है

* फिज्म—यूरोपीय स्त्रियों के घाघरे को फुलाने के काम में आनेवाला एक तरह का ढांचा।—अनुवादक।

कि वे भेदिया थे। जो भी हो, उनकी रहस्यमयता के बावजूद उनका चेहरा संभ्रान्तों जैसा था, मजलिसों में बहुत विनयी रहते थे। आज भी दादी उन्हें जी-जान से प्यार करती हैं, उनके बारे में अगर कोई अश्रद्धा से कुछ कहता है तो नाराज़ हो जाती हैं। दादी को मालूम था कि सेन-जेरमियेन एक मुश्त काफ़ी बड़ी रकम उधार दे सकते थे। दादी ने उनकी शरण लेना तय किया। फौरन उन्हें अपने पास आने के लिए अनुरोध करके एक पत्र लिखा।

विचित्र स्वभाव का यह बूढ़ा सज्जन उसी दम आ हाज़िर हुआ, देखा, दादी दुःख से अभिभूत हो गई हैं। दादी ने घृण्यतम भाषा में दादा की वर्वरता का वर्णन कर अन्त में कहा कि उनकी मित्रता और सहृदयता का ही अब उन्हें एकमात्र भरोसा है।

सेन-जेरमियेन कुछ देर सोचकर बोले, "मैं इतनी रकम देकर आपकी सहायता कर सकता हूँ; लेकिन जबतक आप मेरे रुपये अदा नहीं कर देंगी तबतक आप को शान्ति नहीं मिलेगी। आपको नई अशान्ति में नही डालना चाहता। एक दूसरी सूरत है—आप फिर खेलकर उस रुपये को जीत सकती हैं।

दादी बोलीं, "लेकिन प्रिय काउन्ट, मैं आपको बता चुकी हूँ कि हमारे पास अब रुपये बिलकुल नहीं हैं।"

सेन-जेरमियेन बोले, "इसमें तो रुपये की ज़रूरत नहीं है, कृपाकर मेरी बातें सुनो।" तब उन्होंने उनसे एक गुप्त बात कही, ऐसी बात जिसके लिए हम बहुत कुछ दे डालते···

तरूण जुआड़ियों में दूना ध्यान दिखाई पड़ा। तोमूस्की पाइप सुलगा एक कश खींच, फिर बोलने लगा—

"उसी दिन शाम को दादी वरसाई पहुँची महारानी के ताश की मजलिस में। बैंकर थे आर्लआँ के ड्यूक। दादी ने कर्ज़ के रुपये न ला सकने की कैफ़ियत के तौर पर उसी दम एक छोटी कहानी गढ़कर सुनाई और उनके संग खेलने लगीं। दादी ने तीन ताश चुनकर बारी-बारी से खेला। तीनों चालों में उनकी जीत हुई। दादी जो कुछ हारी थीं उसे सोलहो आने वापस जीत लिया।"

एक मेहमान बोल उठे, "संयोग की बात है!"

हेरमन बोला, "गढ़ी हुई कहानी है।"

तीसरे व्यक्ति ने कहा, "शायद पत्तों पर निशान लगा दिया होगा।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता," तोमूस्की गम्भीर होकर बोला।

नारूमोव बोला, "क्या कह रहे हो! लगातार तीन सौभाग्य के ताशों को पाने का भेद जानने वाली दादी पाकर भी तुम आज तक उनसे गुप्त बात को जान नहीं सके!"

"अरे भाई, यही तो दुःख की बात है! दादी के बेटे, उनमें मेरे पिता भी एक हैं, चारो ही परले सिरे के जुआड़ी थे। लेकिन उनमें से किसी को भी उन्होंने यह भेद नहीं बताया। हालाँकि वे इस रहस्य को जान जाते तो यह उनके लिये—और मेरे लिये भी कोई ऐसी बुरी बात न होती। लेकिन सुनिये, मेरे चाचा काउन्ट इवान इलिच ने मुझे क्या कहा था। झूठ नहीं, उन्होंने अपनी इज़्ज़त की कसम खाकर कहा था कि, उन्होंने जो कुछ कहा है वह सच है। स्वर्गीय चापलित्स्की जो लाखों रुपये बर्बाद कर ग़रीबी में मरे थे, जहाँ तक मुझे याद है जवानी में वे जोरिच से तीन लाख रूबल हार गये थे। उनकी हालत पागल जैसी हो गई थी। दादी बेहिसाबी थीं, तरुणों की त्रुटियों के मामलों में बड़ी शख्त थीं। लेकिन चापलित्स्की के प्रति उन्हें दया आई। दादी ने उन्हे एक के बाद दूसरा खेलने के लिए तीन ताशों का नाम बतला दिया, लेकिन साथ ही कसम भी खिला लिया कि ज़िन्दगी में वे फिर कभी ताश नहीं खेलेंगे। तब चापलित्स्की जिससे हारे थे उसके पास आ पहुँचे। वे नये सिरे से खेलने बैठे। चापलित्स्की ने पहले ताश पर पचास हज़ार रूबल की बाजी रखी और उसी दम जीत गये। दूनी बाजी रख कर वे फिर जीते, उसे दूना किया और फिर जीते। हार के रुपये तो मिले ही बल्कि और कुछ ज़्यादा भी···

"लेकिन अब सोने का वक्त हो गया। करीब पौने तीन बज रहे हैं।" सचमुच ही इसी बीच भोर हो गया था। तरुण अपने अपने गिलासों को खतम कर एक दूसरे से बिदा हुये।

दो

—"जान पड़ता है, महाशय नौकरानियों को ही अधिक पसन्द करते हैं।"
—"क्या करूँ बताइए श्रीमती जी? वे अधिक ताजी होती हैं।"

सोसाइटी की आलोचना।

वृद्धा काउन्टेस अपने ड्रेसिंग रूम में आईने के सामने बैठी थीं। उन्हें घेर कर तीन नौकरानियाँ खड़ी थीं। एक के हाथ में अधरराग था, दूसरी के हाथ में बालों के पिनों का डिब्बा था और तीसरी आग के रंग के फ़ीतों से सजी एक ऊँची टोपी लिये हुए थी। काउन्टेस का सौन्दर्य बहुत पहले ही बिदा हो चुका था और उसका नामोनिशान भी नहीं रह गया था। लेकिन फिर भी जवानी की आदतों को उन्होंने कायम रखा था और बनने ठनने में आठवें दशाब्द के फैशन को अभी भी सोलहो आने मानकर चलती हैं। साठ वर्ष पहले जिस तरह होशियारी से बहुत देर तक बनती ठनती थीं आज भी वे वैसा ही करती हैं। खिड़की के पास कशीदाकारी का फ्रेम हाथ में लिये उन्हीं की पालिता एक तरुणी बैठी थी।

"अच्छी तरह हैं न दादी!"—कमरे में घुसते हुए एक तरुण अफसर ने कहा "नमस्कार कुमारी लिज़ा। दादी, आपसे मेरा एक निवेदन है।"

"कैसा निवेदन पाल?"

"अपने एक मित्रका आपसे परिचय करा देना चाहता हूँ। आज्ञा हो तो अगले शुक्रवार को बॉल-नाच की मजलिस में उसे आपके पास ले आऊँ।"

"उसे सीधे बॉल-नाच की मजलिस में लाकर मुझसे परिचय करा देना। क्या कल······के यहाँ गये थे?"

"हाँ! समय बड़े मज़े में बीता, नाच सबेरे पाँच बजे तक चलता रहा। मादाम येलेत्स्काइया देखने में कितनी सुन्दर है!"

"लेकिन भाई उसमें सुन्दर कौन सी चीज़ देखी? उसकी दादी प्रिन्सेस

दारिया पेत्रोवना को कहीं देखते! हाँ, अब तो प्रिन्सेस दारिया पेत्रोवना ज़रूर बहुत बूढ़ी हो गई होंगी?"

"बूढ़ी हो गई हैं, क्या कह रही हो? उनके मरे सात वर्ष हो गये!" बिना कुछ सोचे यकायक तोमूस्की बोल पड़ा।

तरुणी ने सिर उठा कर तरुण की ओर इशारा किया। उसे अब याद आया कि बृद्धा काउन्टेस से उनके हमउमरों की मौत का समाचार छिपा रखा जाता है। उसने जीभ दाँतों तले दबा ली। लेकिन काउन्टेस ने उससे नया समाचार सुन कर गहरी उदासीनता दिखाई।

"मर गईं! और मुझे पता ही नहीं चला! हम दोनों एक साम्राज्ञी की सहचरी नियुक्त हुई थीं। जब हमारा परिचय दिया गया तो साम्राज्ञी..."

इस बार को लेकर दादी ने नाती को सौवीं बार यह कहानी सुनाई।

"पाल, जरा उठने में मेरी मदद करो तो। लिज़ानका मेरी सुँघनी की डिबिया कहाँ है?" सिंगार समाप्त कर काउन्टेस लड़कियों के साथ एक पर्दे के पीछे चली गईं। तोमूस्की तरुणी के साथ बैठा रहा। लिज़ावेता इवा-नोवना ने दबी आवाज़ में पूछा, "आप किससे परिचय कराना चाहते हैं?

"नारुमोव से। आप उन्हें पहचानती हैं?"

"नहीं। वे फौज़ में हैं या सिविलियन हैं?"

"फौज़ में हैं।"

"इंजीनियरी विभाग में?

"नहीं, घोड़सवार सेना में। उन्हें आपने इन्जीनियर कैसे समझा?" तरुणी हँस पड़ी, एक भी शब्द नहीं बोली।

पर्दे के पीछे से काउन्टेस चिल्लाकर बोलीं, "पाल! मेरे लिए एक नया उपन्यास भेज देना, आजकल जो कुछ लिखा जाता है वह न हो!"

"यह कैसी बात है, दादी?"

"यानी ऐसा उपन्यास देना जिसमें नायक माँ-बाप का गला दबोच कर न मारे या पानी में डूबी लाश न हो। मैं पानी में डूबे लोगों से डरती हूँ।"

"आजकल तो ऐसे उपन्यास नहीं हैं। कोई रूसी उपन्यास क्या आप पसंद करेंगी?"

"रूसी में उपन्यास हैं क्या ?" भेज देना, बेटा, भेज देना।"

"क्षमा करें दादी, मुझे ज़रा जल्दी है···माफ़ करना लिज़ावेता इवानोव्ना, नारूमोव को आपने इन्जीनियर कैसे समझा ?"

तोमूस्की ड्राइङ्गरूम से निकल गया। लिज़ावेता इवानोव्ना अकेली रह गई—वह काम छोड़कर खिड़की से बाहर की ओर देखती रही। कुछ ही देर में रास्ते के एक ओर कोने के मकान के पीछे तरुण अफसर दिखाई पड़ा। लिज़ा के कपोल लाल हो गये। उसने काम को फिर उठा लिया और फ्रेम पर झुक गई। इसी समय वेश-भूषा समाप्त कर काउन्टेस ने कमरे में प्रवेश किया।

वे बोलीं, "लिज़ान्का, गाड़ी जोतने को कहो, घूमने जाऊँगा।"

लिज़ान्का फ्रेम रख उठ खड़ी हुई और अपनी चीज़ें सँभालने लगी।

"क्या हुआ तुम्हें, बिटिया ! गूँगी हो गई क्या ?" काउन्टेस चिल्ला पड़ीं।—"जल्दी से गाड़ी जोतने को कहो।"

तरुणी शान्त स्वर में "अभी जा रही हूँ," कह मकान के सामने की ओर दौड़ गई।

एक नौकर ने आ प्रिन्स पावेल अलेकज़ान्द्रोविच का नाम लेकर काउन्टेस को कुछ किताबें दीं।

"अच्छा ! धन्यवाद," काउन्टेस बोलीं। "लिज़ान्का, लिज़ान्का ! तुम कहाँ दौड़ी जा रही हो ?"

"कपड़े पहिनने।"

"अभी समय है बिटिया। यहाँ बैठो। यहाँ बैठो। पहले खंड को खोल कर ज़ोर से पढ़ो तो···"

तरुणी ने पुस्तक लेकर कई पंक्तियाँ पढ़ीं।

काउन्टेस बोलीं, "ज़ोर से ! तुम्हें क्या हुआ बिटिया ? गला बैठ गया है क्या ? ज़रा रुको; अपनी कुर्सी मेरे पास खींच लाओ। और भी पास...हाँ ठीक है।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने दो पृष्ठ और पढ़े। काउन्टेस ने जम्हाई ली।

वे बोलीं, "हटाओ इस किताब को। क्या बेहूदा बकवास है ! वापिस कर देना, प्रिन्स पावेल को धन्यवाद कहला देना···अच्छा, गाड़ी का क्या हुआ ?"

सड़क की ओर झाँक कर लिज़ावेता इवानोव्ना बोलीं, "गाड़ी तयार है।"

"तुमने अबतक कपड़े क्यों नहीं पहने? हमेशा तुम्हारे लिये इन्तज़ार करना पड़ता है। यह तो बिटिया बिलकुल असह्य है।"

लिज़ा कमरे की ओर दौड़ी। दो मिनट भी नहीं बीते थे कि काउन्टेस जी-जान से घंटी बजाने लगीं। तीनों लड़कियाँ दौड़ती हुई एक दरवाज़े से घुसीं और दरबान दूसरे से।

"जब बुलाया जाता है तो तुम लोग आते क्यों नहीं?" काउन्टेस बोलीं। "लिज़ावेता इवानोव्ना से जाकर कहो कि मैं उसके लिये बैठी हुई हूँ।"

बदन पर कापोत [सीना कटा गाऊन] और सिर पर हैट पहिने लिज़ावेता इवानोव्ना ने कमरे में प्रवेश किया।

"तो आख़िरकार आ गई बिटिया? यह बनाव-सिंगार किसलिये! किसी का मन रखना चाहती हो क्या? मौसम कैसा है? लगता है हवा उठेगी।"

नौकर बोला," नहीं माँजी! मौसम बहुत शान्त है।"

"तुमलोग हमेशा बिना सोचे समझे बोला करते हो। खिड़की खोलो। कहा जो था—

ठंडी हवा चल रही है। गाड़ी खोल डालो। लिज़ान्स्का हम घूमने नहीं जायेंगी; तुम्हारा बनना-सँवरना किसी काम में नहीं आया।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने मन ही मन सोचा, "यही है मेरा जीवन!"

वास्तव में लिज़ावेता इवानोव्ना का जीवन बड़े ही दुःख का था। दान्ते ने कहा है, पराये का अन्न कड़ुआ और पराये घर की सीढ़ियों पर चढ़ना कठिन होता है। नामी वृद्धा की अभागी पालिता कन्या ही अगर परमुखापेक्षिता के दुःख को नहीं समझेगी तो कौन समझेगा। हाँ, काउन्टेस,··· का अन्तःकरण नीच नहीं था। लेकिन वे उन नारियों की ही तरह तरह थीं जिन्हें अभिजात समाज ने बिगाड़ दिया है, जो लोभी होती हैं, जो स्नेह प्रेमहीन अहम् में डूबी हुई हैं और बुढ़ापे में और लोगों की ही तरह जिनकी प्यार करने की शक्ति समाप्त हो गई है और जो वर्तमान को समझने में सर्वथा असमर्थ हैं।

अभिजात समाज की उमंगपूर्ण चपलताओं में वे भाग लेती थीं। बॉल-नाच की मजलिस में आ हाज़िर होतीं, उस नाचघर के असुन्दर मगर आवश्यक सजावट की तरह रूज़ लगा लाल बन पुराने फैशन के कपड़े पहने एक कोने में जाकर बैठी रहतीं। प्रचलित रीति के अनुसार हर मेहमान को काफ़ी सिर नवाकर उन्हें नमस्कार करना पड़ता था, लेकिन फिर कोई उनकी ओर ध्यान नहीं देता था। वे अपने घर पर सारे शहर को निमन्त्रण देती थीं और व्यक्तिगत रूप से किसी को नहीं पहिचानती थीं, लेकिन फिर भी अदब क़ायदा मान कर चलती थीं। पुरुषों और स्त्रियों में बैठे-बैठे उनकी अनगिनत नौकर नौकरानियाँ मोटी हुई हैं, बाल सफ़ेद किये हैं, बुढ़िया की चीज़ कौन कितनी लूट सकता है इसको लेकर आपस में होड़ लगाये रहती हैं। लिज़ा-वेता इवानोव्ना की हालत इस घर में एक शहीद की सी थी। वह चाय बनाती और अधिक चीनी खर्च करने के लिए फटकार भी पाती। वह ज़ोर ज़ोर से उपन्यास पढ़कर सुनाती और लेखक की सारी ग़लतियों के लिए अप-राधी बनती। काउन्टेस के साथ रोज़ उसे सैर करने जाना पड़ता और आब-हवा और सड़क की खराबी के लिए उसे दोषी ठहराया जाता था। उसकी माहवार तलब बाँध दी गई थी, लेकिन उसे वह कभी पूरी नहीं मिली। फिर भी उससे आशा की जाती थी कि वह औरों की ही तरह यानी थोड़े से लोगों की तरह बनठन कर रहे। समाज में उसकी स्थिति बड़ी करुणाजनक थी। उसे सभी पहिचानते थे, लेकिन कोई भी उसकी तरफ ध्यान नहीं देता था। संगिनी की कमी होने पर ही वह बॉल-नाच में नाचने पाती थी। भद्र महिलाओं को कपड़ा वगैरह ठीक करने के लिए ड्रेसिंग रूम में जाना होता तो वे उसकी बाँह पकड़कर हरबार साथ ले जातीं। उसमें स्वाभिमान था, अपनी असहायता को वह भलीभाँति समझती थी, उद्धारक के लिए अधीर प्रतीक्षा में वह चारों ओर देखती थी। निरंकुश विलासिता में भी तरुण हिसाबी थे, इसलिए वे उसकी ओर ध्यान देकर सम्मान नहीं दिखाते थे। यद्यपि जिन दाम्भिक और उदासीन कुमारियों के चारों ओर वे चक्कर काटते थे लिज़ावेता इवानोव्ना उनसे सौ गुना मधुर थी। कितनी ही बार वह विरक्तिकर मगर रौनक ड्राइङ्गरूम को छोड़ अपने सीधे-सादे कमरे में आँसू बहाने के लिये चली आती। उस कमरे में पर्दा लटकता, दीवारें काग़ज़ से ढँकी थीं,

उसमें एक सन्दूक थी, एक छोटा आईना था, एक रंगा हुआ पलंग था और एक ताँबे के दीवट पर धीमी रोशनीवाला दिया जला करता।

इस कहानी के प्रारंभ में ही जिस शाम की बात कही गई है उसके करीब दो दिन बाद और जिस दृश्य पर आकर हम रुके हैं, उसके एक हफ्ता पहिले लिज़ावेता इवानोव्ना ने एक दिन खिड़की के किनारे कशीदाकारी का फ्रेम लेकर बैठ अचानक एकबार रास्ते की ओर देखते ही एक तरुण इञ्जीनियर को देखा, वह अडिग खड़ा लिज़ावेता की खिड़की की ओर देख रहा था। लिज़ावेता ने मुँह हटा कर अपना काम शुरू किया। पाँच मिनट के बाद उसने एक बार फिर देखा—तरुण अफसर उसी जगह खड़ा हुआ है। राही अफसर से प्रेम का अभिनय करने की आदत न होने के कारण वह रास्ते की ओर देखना बन्द कर करीब दो घन्टे तक सीने का काम करती रही, सिर ऊपर नहीं उठाया। खाना परोसा गया। उसने उठकर कशीदाकारी का सामान इकट्ठा कर अचानक फिर सड़क की ओर देखा तो तरुण अफसर को उसी जगह खड़ा पाया। यह घटना उसे बड़ी विचित्र मालूम हुई। भोजन के बाद वह बेचैनी लिए खिड़की के किनारे गई। लेकिन अब अफसर वहाँ नहीं था। वह उसकी बात भूल गई···दो दिन बाद लिज़ा काउन्टेस के संग निकल गाड़ी में बैठने जा रही थी तो उसे फिर देखा। वह 'बीभर' के कालर से मुँह ढाँके फाटक के पास खड़ा था। टोपी के नीचे उसकी काली आँखे चमक रही थीं। लिज़ावेता इवानोव्ना डर गई, लेकिन क्यों डरी यह उसकी समझ में नहीं आया और गाड़ी में बैठने के समय उसका शरीर काँप उठा। लेकिन इस काँप उठने के कारण को समझाकर नहीं बताया जा सकता।

घर लौट वह दौड़ कर खिड़की के पास पहुँची। अफसर एक ही जगह उसकी ओर देखता खड़ा था। वह हट गई, उसके मन में घोर कौतूहल पैदा हुआ और साथ ही साथ एक उत्तेजित अनुभूति जाग उठी जिसका परिचय उसने कभी नहीं पाया था।

उस दिन से एक भी दिन ऐसा नहीं गुज़रा जब वह तरुण सज्जन निश्चित समय पर उनके मकान के पास खिड़की के नीचे हाज़िर न होता। इस तरुण और तरुणी में अपने आप एक सम्पर्क स्थापित हो गया।

अपनी जगह काम करती हुई तरुणी को मालूम हो जाता कि तरुण आ गया है। सिर उठाकर वह उसकी ओर देखती। जैसे-जैसे दिन बीतते गये वह उसकी ओर अधिक देर तक देखती रहती। लगता था, तरुण सज्जन इसके लिये उसके प्रति कृतज्ञ था। जवानी की पैनी निगाहों से तरुणी ने देखा था कि जब कभी उनकी चार आँखें होतीं तभी क्षण भर में ही तरुण के पीले गाल लाल हो जाते। एक हफ्ते में ही तरुणी तरुण की ओर देखकर हँसी···

जब तोमूस्की ने काउन्टेस से अपने मित्र का परिचय कराने की अनुमति माँगी तो अभागी लड़की का कलेजा काँपने लगा। लेकिन जब उसे पता चला कि नारूमोव इन्जीनियर नहीं बल्कि रिसाले का सिपाही है तो उसे खेद हुआ कि यह अशिष्ट प्रश्न करके उसने अपने भेद को तोमूस्की जैसे चंचल प्रकृति के व्यक्ति के सामने प्रकट कर दिया है।

हेरमन रूसी बन गये एक जर्मन का लड़का था। पिता पुत्र के लिये कुछ रुपये छोड़ गया था। उसका दृढ़ विश्वास था कि अपनी स्वतंत्रता को और भी निश्चित करने की आवश्यकता है, इसलिये पिता के रुपयों के सूद तक को वह नहीं छूता था, अपनी तलब से हो गुज़र करता था। वह तनिक भी विलासिता नहीं करता था। वह गम्भीर स्वभाव का था और उसके दिल में बड़ा बनने की आकांक्षा थी। उसके मित्रों को उसकी अत्यधिक मितव्ययिता की हँसी उड़ाने का मौका नहीं मिलता था। उसका भावावेग और अनुभूति तीव्र थी, उसकी कल्पना उद्दाम थी, लेकिन जवानी की स्वाभाविक भूलचूक से दृढ़ता ने ही उसे बचाया था। जैसे मन ही मन जुआड़ी होने पर भी उसने कभी हाथ से ताश नहीं छूआ था, क्योंकि उसने हिसाब लगाकर देखा था कि, (उसकी भाषा में) अधिक पाने की आशा में आवश्यक को खोने लायक हालत उसकी नहीं है। लेकिन वह फिर भी एक के बाद दूसरी रात जुये की मेज़ के किनारे बैठा रहता और घोर उत्तेजना से काँपते हुए खेल के उतार चढ़ाव के भिन्न-भिन्न स्तरों को देखता जाता।

तीन ताश की कहानी ने उसकी कल्पना पर गहरा प्रभाव डाला था। और यह विचार सारी रात उसके दिमाग़ से नहीं गया। अगले दिन शाम को पितर्सबुर्ग की सड़कों पर टहलते हुये सोचा: "अगर···अगर काउन्टेस अपना

गुप्त रहस्य मुझे बता दें तो कैसा रहे? या मेरे हाथों में इन तीन विश्वस्त ताशों को दें तो मैं एक बार अपने भाग्य की परीक्षा क्यों न कर देखूँ··· उनसे परिचित होना होगा, उनकी कृपा प्राप्त करनी होगी, हो सकता है कि उनका प्रेमी भी बनना पड़े, लेकिन इसके लिये समय की ज़रूरत है। मगर उनकी उम्र सत्तासी की है—एक हफ्ते में ही उनकी मृत्यु हो सकती है, दो दिन के बाद ही उनकी मृत्यु हो सकता है! लेकिन यह कहानी? क्या इस कहानी पर विश्वास किया जा सकता है? ...नहीं! मितव्ययिता, संयम, और श्रमप्रियता—यही मेरे तीन विश्वासी ताश हैं; यही मेरी पूँजी को तिगुना, सतगुना कर देंगे, मेरे लिये शान्ति और स्वतन्त्रता ला देंगे।"

इन बातों को सोचते हुए उसने देखा कि वह पितर्सबुर्ग की एक मशहूर सड़क पर एक पुराने किस्म के मकान के सामने आ पहुँचा है। सड़क गाड़ियों से भरी थी, एक के बाद दूसरी गाड़ी लुढ़कती हुई मकान के आलोकित फाटक की ओर चली जा रही थी। हरक्षण गाड़ियों से कभी सुन्दरी तरुणी के पेलव पदयुगल, कभी मचमचानेवाले फौजी बूट, कभी धारीदार मोजे और डिप्लोमैटिक जूते निकल रहे थे। एक रोबीले दरबान की बग़ल से फर के कोटों और ओवरकोटों की झलक दिखाई पड़ रही थी। हेरमन खड़ा हो गया।

"यह किसका मकान है?"—उसने कोने में खड़े हुए एक सिपाही से पूछा।

सिपाही ने उत्तर दियाः "काउन्टेस...का।"

हेरमन काँप उठा। वह अद्भुत कहानी फिर उसकी कल्पना में प्रत्यक्ष दिखाई पड़ी। गृहस्वामिनी और उनकी विचित्र शक्ति की बात सोचता हुआ वह घर के पास टहलने लगा। बहुत रात बीते वह अपनी छोटी गली में लौट आया, बहुत देर तक उसे नींद नहीं आई। आखिर जब नींद आई तो उसने सपने में ताश, नीली मेज, बैंक नोटों के ढेर और दस रूबल के नोटों के पुलिन्दे देखे। वह एक के बाद दूसरा ताश खींचता जा रहा था, ताश के टूटे कोने को सीधा करता जा रहा था और बराबर उसकी जीत होती जा रही थी। सोने के सिक्कों को वह अपनी ओर खींचता और नोटों को जेब में रखता जा रहा था। काफ़ी दिन चढ़ आने पर उसकी नींद टूटी।

और इस काल्पनिक सम्पदा के खो जाने पर वह एक लम्बी साँस ले फिर शहर में टहलने लगा और टहलते टहलते फिर काउन्टेस... के मकान के सामने आ हाज़िर हुआ। जान पड़ता था कि कोई अज्ञात शक्ति उसे इस मकान के पास खींच लाई है। रुककर वह खिड़कियों की ओर देखने लगा। एक खिड़की में उसे काले बालों से ढँका सिर दिखाई पड़ा। जो निश्चय ही किताब पर या किसी काम पर झुका हुआ था। सिर सीधा हुआ। हेरमन ने एक युवा चेहरा और दो काली आँखें देखीं। इसी क्षण उसके भाग्य का फैसला हो गया।

तीन

"प्रिये, आप चार पृष्ठ लम्बा पत्र इतनी जल्दी लिखते हैं कि मैं उसे पढ़ नहीं पाता हूँ।"

—एक पत्र से

लिज़ावेता इवानोव्ना ने अभी-अभी अपनी पोशाक उतारी थी कि इसी समय काउन्टेस ने उसे बुला भेजा और गाड़ी जोतने का हुक्म दिया। वे गाड़ी में बैठने चलीं। जब दो नौकर वृद्धा को पकड़कर गाड़ी में चढ़ा रहे थे, ठीक उसी समय लिज़ावेता इवानोव्ना ने गाड़ी के पहिये के पास अपने इञ्जीनियर को देखा। उसने लिज़ा का हाथ पकड़कर दबाया, लिज़ा डर गई, लेकिन भय दूर होने के पहिले ही तरुण चला गया। लिज़ा के हाथ में एक चिट्ठी थी। लिज़ा ने चिट्ठी को दस्ताने में छिपा लिया, लेकिन रास्ते भर उसके कानों में कोई बात नहीं गई, आँखों से उसने कुछ भी नहीं देखा। काउन्टेस की आदत थी गाड़ी पर चढ़कर क्षण-क्षण पर पूछना : "जिससे मुलाक़ात हुई वह कौन था? इस पुल का नाम क्या है? उस साइनबोर्ड पर क्या लिखा है?" आज लिज़ावेता इवानोव्ना ऐसे अस्पष्ट और बेमानी उत्तर देने लगी कि काउन्टेस को क्रोध आ गया।

"आज तुम्हें क्या हो गया है बिटिया? अक्ल मारी गई क्या? तुम

मेरी बात सुन नहीं रही हो या मेरी बातें समझ नहीं पा रही हो?...ईश्वर की कृपा से मेरी बोली अभी अस्पष्ट नहीं हुई है और होश-हवास कायम है?"

किन्तु उनकी बातें लिज़ावेता इवानोव्ना के कानों में नहीं पहुँच रही थीं। घर लौट कर वह अपने कमरे की ओर दौड़ी और वहाँ पहुँच कर दस्ताने से चिट्ठी निकाली। लिफ़ाफ़ा बन्द नहीं था। लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसे पढ़ डाला। पत्र में प्रेम का निदर्शन था: पत्र मधुर, श्रद्धा से भरपूर था, शब्द हूबहू एक जर्मन उपन्यास से लिये गये थे। लेकिन लिज़ावेता इवानोव्ना जर्मन नहीं जानती थी, इसलिए इस पत्र को पाकर वह प्रसन्न ही हुई।

परन्तु इस चिट्ठी से उसे कुछ चिन्ता भी हुई। यह पहली बार उसका किसी नवयुवक के साथ गुप्त और गहरा सम्बन्ध स्थापित हुआ है। तरुण का दुस्साहस देखकर वह डर गई। असावधानी के लिये उसने अपने आप को धिक्कारा, लेकिन क्या करे, यह उसकी समझ में नहीं आया। वह क्या खिड़की के पास बैठना बन्द कर दे? तरुण अफसर की आगे बढ़ने की इच्छा को अवहेलना और उदासीनता से रोक दे? अथवा पत्र उसे वापिस कर दे? या रूखा 'नहीं' कहकर उसे उत्तर दे दे? सलाह करने के लिये उसका कोई नहीं था—न कोई बान्धवी थी, न कोई उपदेश देनेवाला। लिज़ावेता इवानोव्ना ने उत्तर देना ही तय किया।

लिखने की छोटी टेबिल के पास बैठ काग़ज़ कलम ले वह सोचने लगी। कई बार चिट्ठी लिखना शुरू करके उसे फाड़ डाला। कभी लगा शब्द मुलायम होते जा रहे हैं, कभी लगा बहुत कड़े होते जा रहे हैं। आख़िरकार उसने मन के लायक कुछ पंक्तियाँ लिख डालीं। उसने लिखा: "मेरा पक्का विश्वास है कि आपका इरादा नेक है और किसी हठीले आचरण से आपने मेरा अपमान नहीं करना चाहा है, लेकिन हमारा परिचय इस प्रकार से आरम्भ नहीं होना चाहिए। आपका पत्र आपको वापस भेज रही हूँ। आशा है भविष्य में ख़ामख़ा अपमान के लिये मुझे शिकायत करने का मौका नहीं मिलेगा।"

अगले दिन तरुण अफसर को जाते देख लिज़ावेता इवानोव्ना कशीदाकारी का फ्रेम रख उठकर हाल के भीतर आई और खिड़की खोलकर तरुण

अफसर की सावधानी पर भरोसा कर पत्र को रास्ते पर फेंक दिया। हेरमन दौड़कर चिट्ठी को उठा एक मिठाई की दूकान में जा घुसा। लिफ़ाफ़ की मुहर तोड़ने पर उसे अपनी चिट्ठी और लिज़ावेता इवानोव्ना का उत्तर मिला। वह इसी की उम्मीद में था, अपने इरादे को बात सोचता हुआ वह घर लौटा।

इसके तीन दिन बाद टोपी की दूकान से चतुर चितवनवाली एक तरूणी लिज़ावेता इवानोव्ना के पास एक चिट्ठी ले आई। पावने का तगादा समझकर लिज़ावेता इवानोव्ना ने बेचैनी से चिट्ठी खोली। अचानक उसने हेरमन की लिखावट पहचान ली।

वह बोली, "आप ग़लती कर रही हैं, बहन, यह चिट्ठी मेरी नहीं है"

"नहीं, ज़रूर आपकी है।" "चतुर मुस्कराहट को छिपाये बगैर ही प्रगल्भ लड़की बोली। "कृपा कर पढ़ देखिये।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने चिट्ठी पढ़ी। हेरमन ने मुलाक़ात करनी चाही थी।

"नहीं, यह हो ही नहीं सकता।" इतनी जल्दी मुलाक़ात करना चाहने और जिस ढंग से यह अनुरोध किया गया है उससे लिज़ावेता इवानोव्ना डर गई।—"निश्चय ही यह चिट्ठी मेरे लिये नहीं लिखी गई है।" उसने चिट्ठी को टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

लड़की बोली, "चिट्ठी अगर आपकी नहीं है तो आपने फाड़ क्यों डाली? जिसने इसे भेजा है उसे वापस कर देती।"

लड़की को बातों से गुस्सा होकर लिज़ावेता इवानोव्ना बोली, "दोहाई बहन, आइन्दा मेरे पास चिट्ठी मत लाइयेगा। आपको जिन्होंने भेजा है उन्हें इस काम के लिए लज्जित होना चाहिये…"

लेकिन हेरमन हिम्मत नहीं हारा। जैसे भी हो लीज़ावेता इवानोव्ना रोज़ ही उसकी चिट्ठी पाने लगी, चिट्ठियाँ अब जर्मन से अनुवाद नहीं होती थीं। भावावेग की अनुभूति से उद्दीपित होकर ही वह इन चिट्ठियों को लिखता था और अपनी स्वाभाविक भाषा में ही: इन चिट्ठियों में उसकी आकांक्षा की एकाग्रता और बिखरी कल्पनाओं की लापरवाह उद्दामता निखर उठती थी। चिट्ठियों को वापस करने की बात लिज़ावेता इवानोव्ना अब नहीं सोचती।

चिट्ठी पढ़कर वह विह्वल हो उठी थी, अब उसने चिट्ठियों का उत्तर देना शुरू किया था। दिन पर दिन उसकी चिट्ठियाँ अधिक से अधिक लम्बी और मधुर से मधुरतर होती जा रही थीं। अन्त में एक दिन लिज़ावेता ने हेरमन के लिये इस चिट्ठी को खिड़की से फेंक दिया :

"आज···दूतावास में बॉलनाच की मजलिस है। काउन्टेस वहाँ जायँगी। हम दो बजे तक रहेंगी! निराले में मुझसे मिलने का आपके लिये यही मौका है। काउन्टेस के निकल जाने के साथ ही शायद उनके नौकर-चाकर भी अपनी मर्ज़ी से चल देंगे, दरबान हाल में रहता है, लेकिन वह आमतौर से अपनी कोठरी में चला जाता है। साढ़े ग्यारह बजे आइयेगा। सीधे ज़ीने से चढ़ आइयेगा। हाल में अगर किसी से मुलाक़ात हो जाय तो पूछियेगा काउन्टेस घर पर हैं या नहीं। वे आपसे कहेंगे "घर पर नहीं हैं।" इसलिये आपके लिये लौट जाने के सिवा और कोई चारा नहीं होगा। लेकिन आपसे किसी की मुलाक़ात न होने की संभावना ही अधिक है। नौकरानियाँ अपने कमरे में होंगी और उनके लिये एक ही कमरा है। हाल से बायीं ओर जाइयेगा, काउन्टेस के सोने के कमरे तक सीधे जाइयेगा। सोने के कमरे के पर्दे के पीछे दो छोटे दरवाज़े दिखाई देंगे : दाहिनी ओर के दरवाज़े से पढ़ने के कमरे में जाया जा सकता है, काउन्टेस वहाँ कभी नहीं जातीं। बायीं ओरवाले से बरामदे में जाया जा सकता है, वहाँ एक सँकरी चक्करदार सीढ़ी है। यह सीढ़ी मेरे कमरे में आई है।"

निश्चित समय की प्रतीक्षा में हेरमन शेर की तरह थर-थर काँपने लगा। रात के दस बजते ही वह काउन्टेस के मकान के सामने आ खड़ा हुआ। मौसम बहुत खराब था। हवा गरज रही थी, मुलायम बर्फ के झकोरे चल रहे थे। बत्तियों की रोशनी मद्धिम दीख रही थी, सड़कें जनशून्य थीं। देर के यात्री की तलाश में कोई कोचवान मरियल घोड़ों से खींची जानेवाली 'वानूका' गाड़ी हाँके जा रहा था। हेरमन के बदन पर सिर्फ़ एक कोट था, लेकिन हवा या बर्फ किसी की अनुभूति उसे न थी। आख़िरकार काउन्टेस की गाड़ी आई। हेरमन ने देखा कि 'साबूल' कोट से लिपटी एक झुकी बुढ़िया को नौकर सहारा देकर ले आये और उन्हींके पीछे-पीछे जाड़े की बरसाती पहने, बालों में ताज़ा फूल लगाये वृद्धा की

पालिता आई। आवाज़ के साथ दरवाज़ा बन्द हुआ। गाड़ी धीरे-धीरे मुला-यम बर्फ के ऊपर चलने लगी। दरवान ने मकान का दरवाज़ा बन्द किया। खिड़कियाँ अँधेरी हो गईं। हेरमन सुनसान मकान के सामने चहलक़दमी करने लगा: उसने रोशनी के सामने जाकर घड़ी देखी—ग्यारह बीस। घड़ी की सुई की ओर देखते हुये बाकी वक्त काट देने की आशा में रोशनी के नीचे खड़ा रहा। ठीक साढ़े ग्यारह बजे हेरमन ने काउन्टेस के मकान की ड्योढ़ी में घुस तेज़ रोशनी से जगमगाते बरामदे में पैर रखा। दरबान वहाँ नहीं था। हेरमन ने फुर्ती से सीढ़ियाँ चढ़ हाल का दरवाज़ा खोला, देखा कि रोशनी के नीचे एक पुरानी गंदी आरामकुर्सी पर एक नौकर सो रहा है। हलके, दृढ़ पगों से हेरमन उसे पारकर गया। बॉलनाच के कमरे और ड्राइंगरूम में अँधेरा था। हाल की रोशनी उस जगह धीमी रोशनी कर रही थी। हेरमन सोने के कमरे में घुसा। प्राचीन मूर्त्तियों से भरी एक वेदी के सामने सोने का एक प्रदीप जल रहा था। कुछ टूटी रंग-उड़े रेशम से ढकी कुर्सियाँ और सुनहरी कशीदाकारी किये हुये मुलायम नरम गद्दीवाले सोफे चीनी काग़ज़ से ढकी दीवार के पास करुणाई से अपने को खपाये पड़े हैं। पेरिस की मादाम लेब्रान* के बनाये दो चित्र दीवार पर लटकाये हुये थे। एक चित्र एक पुरुष का था: उम्र चालीस की होगी, लाल गोलगाल चेहरा, हलके हरे रंग की पोशाक, सीने पर एक तारा था। दूसरा चित्र एक तरुणी का था: बंशी जैसी नाक, पीछे की ओर सँवारे पाउडर युक्त बालों में एक गुलाबी फूल लगा हुआ था। कमरे के चारों ओर चीनी मिट्टी की गड़ेरिनों की मूर्त्ति, विख्यात 'लेरयेर' की बनाई मेज़-घड़ी, छोटे-छोटे बक्स, रूलेट, पंखे और पिछली शताब्दी के अंतिम हिस्से में मंगोलफियेर का बेलून और मेसमेर के चुम्बकतत्त्व के समय बने नाना प्रकार के लकड़ियों के खिलौने बिखरे हुये थे। हेरमन पर्दे के पीछे गया। उसके पीछे लोहे की एक खाट थी। दाहिनी ओर पढ़ने के कमरे में जाने का दरवाज़ा था, बाईं ओर बरामदे में आने का एक दूसरा दरवाज़ा था। हेरमन ने इस दरवाज़े को खोलकर एक सँकरी चक्करदार सीढ़ी देखी। सीढ़ी दुखिया

* लेब्रान—एलिज़ाबेथा विजे-लेब्रान (१७५५-१८४२) शौकीन फ्राँसीसी महिला चित्रकार थीं।

पालिता लड़की के कमरे में गई थी···लेकिन वह घूम कर खड़ा हो पढ़ने के अँधेरे कमरे में जा घुसा।

धीरे-धीरे समय बीतता जा रहा था। सब कुछ निस्तब्ध था। ड्राइंग-रूम की घड़ी में बारह बजे। हर कमरे में एक-एक करके घड़ी में बारह बजे। फिर सन्नाटा। ठंडी अँगीठी की ओर झुककर हेरमन खड़ा हुआ। वह शान्त था; उसका हृदय नियमित रूप से धड़क रहा था, जैसे उन लोगों का धड़कता है जिन्होंने भयंकर मगर अनिवार्य काम करने का निश्चय कर लिया हो। रात के एक बजे—दो बजे, दूर गाड़ी की आवाज़ सुनाई पड़ी। अपने आप वह उत्तेजना से अभिभूत हो गया। गाड़ी निकट आकर रुकी। उसने गाड़ी की सीढ़ी उतारने की आवाज़ सुनी। घर में आलोड़न सुनाई पड़ा। नौकर दौड़-धूप कर रहे थे, उनकी चिल्लाहट सुनाई पड़ रही थी, घर की सभी बत्तियाँ जल उठीं। तीन बूढ़ी नौकरानियाँ दौड़कर सोने के कमरे में घुसीं, अधमरी काउन्टेस कमरे में घुसकर एक वोलतेयर आरामकुर्सी पर धम से बैठ गईं। हेरमन ने किवाड़ की दरार से देखा: लिज़ावेता इवानोव्ना उसके पास से चली गई। हेरमन ने उसके तेज़ी से ऊपर चढ़ने का शब्द सुना। उसके हृदय में पश्चाताप की सी एक हूक उठी, लेकिन वह फिर तुरन्त शान्त हो गई। वह पत्थर की तरह अडिग खड़ा रहा।

आईने के सामने काउन्टेस कपड़े उतारने लगीं। गुलाब के फूलों से सजी टोपी खोल डाली गई, उनके छोटे-छोटे छँटे सफ़ेद बालों पर से पाउडर लगा नक़ली बालों का 'विग' उतारा गया। बालों के काँटे बारिस की तरह उनके चारों ओर बिखर गये। रूपहली कशीदाकारीवाला पीला गाऊन उनके सूजे पैरों के पास आ गिरा। हेरमन काउन्टेस के बनाव-सिंगार की घिनौनी गोपनता का साक्षी बना। अन्त में काउन्टेस ने सोने के कपड़े और रात की टोपी पहनी: अपने बुढ़ापे के लिए अधिक अनुकूल इस पोशाक में वे कम विकट और सुन्दर लग रही थीं।

साधारणतः और बूढ़े-बूढ़ियों की तरह ही काउन्टेस को भी अनिद्रा की शिक़ायत थी। कपड़े बदल वे खिड़की के किनारे वोलतेयर आरामकुर्सी पर बैठीं और नौकरानियों को चले जाने को कह दिया। रोशनी हटा ली गई, कमरे में फिर एक दीया जलने लगा। काउन्टेस पीली दीखने लगीं, उनके

लटकते हुए दोनों होठ काँपने लगे, शरीर कभी बाए कभी दाहिने हिलने लगा उनकी भावहीन आँखों के सामने पूर्ण शून्यता थी। देखकर लगता था मानों यह वीभत्स वृद्धा का हिलना डुलना इच्छाकृत नहीं है, किसी गुप्त बिजली से चलनेवाले यन्त्र का काम है।

सहसा यह प्राणहीन चेहरा इस तरह बदल गया कि उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है। होठों का काँपना बन्द हो गया, आँखें बड़ी-बड़ी हो गईं। काउन्टेस के सामने एक अपरिचित व्यक्ति खड़ा था।

मृदु मगर स्पष्ट आवाज़ में वह बोला, "डरिये मत, ईश्वर के लिए मत डरिये! आपको हानि पहुँचाने की मुझे इच्छा नहीं है। आपसे एक कृपा भिक्षा माँगने आया हूँ।"

वृद्धा चुपचाप उसकी ओर देखती रहीं। प्रतीत होता था मानो उसकी बातें उनके कानों में नहीं गईं। हेरमन ने सोचा, बुढ़िया बहरी है, इसलिये उनके कान की ओर झुककर उसने अपनी उन्हीं बातों को दोहराया। वृद्धा पहिले ही की भाँति चुप्पी साधे रहीं।

हेरमन बोलता गया, "आप मेरे जीवन के सुख को निश्चित बना सकती हैं, और आपको कोई नुकसान नहीं होगा। मैं जानता हूँ कि आप लगा-तार ताश के तीन पत्तों के नाम बता सकती हैं···

हेरमन रुक गया। लगा मानो उनसे क्या माँगा जा रहा है इसे काउन्टेस समझ गई हैं। लगा वे उत्तर देने के लिए शब्द ढूँढ़ रही हैं।

अन्त में वे बोलीं, "वह तो हँसी की बात है, आपसे सौगन्ध खाकर कहती हूँ, हँसी की बात है।"

हेरमन क्रुद्ध स्वर में बोल उठा, "इसमें हँसी की कोई बात नहीं है। चापलित्स्की की बात याद कीजिए तो, हारी हुई रकम जीतने में आपने उसकी मदद की थी।"

लगा काउन्टेस असमंजस में पड़ गई हैं। उनके मन में ज़बर्दस्त उथल-पुथल शुरू हुई है इसका पता उनके चेहरे से चलता था। लेकिन थोड़ी ही देर में भावशून्यता में डूब गईं।

हेरमन बोलने लगा, "इन तीन विश्वस्त ताशों का नाम मुझे बता दीजिए न!"

काउन्टेस मौन थीं। हेरमन बोलता गया—

"आप किसके लिए यह रहस्य छिपाकर रख रही हैं? पोते-पोतियों के लिए? वे तो इसके बिना ही धनी हैं, वे पैसे की कीमत नहीं जानते हैं। आपके तीनों ताश फ़िज़ूलख़र्च लोगों के काम नहीं आएँगे। जो पैतृक सम्पत्ति की रक्षा नहीं कर सकता है, अलौकिक शक्ति के बावजूद उसे दरिद्रता में मरना होगा। मैं फ़िज़ूलख़र्च नहीं हूँ, मैं धन की कीमत समझता हूँ। आपके तीन ताश मेरे लिए व्यर्थ नहीं होंगे। क्या कहती हैं!…"

हेरमन रुककर काँपता हुआ उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन काउन्टेस मौन रहीं, हेरमन घुटने टेककर बोला—

"आपके हृदय को अगर कभी प्रेमानुभूति का स्पर्श प्राप्त हुआ हो, प्रेम की मस्ती की बात अगर आपको याद हो, नवजातक के क्रन्दन से अगर कम से कम एकबार भी आप हँसी हों तो, मानवी किसी भी वस्तु ने कभी आपके हृदय में उथल-पुथल मचायी हो तो; पत्नी, प्रेयसी और माता के-माता के जीवन में जो कुछ भी पवित्र है—सबकी भावनाओं को लेकर आप से अनुरोध कर रहा हूँ, मेरे निवेदन को ठुकरा न दें। अपना गुप्त रहस्य मुझे बतलाइए! इससे आपका क्या बिगड़ता है!…शायद आपके पाप, चिरनरकवास और शैतानी साज़िश से इस गोपनता का सम्बन्ध है। लेकिन सोच देखिए-आप वृद्धा हैं, आप अब अधिक दिनों तक ज़िन्दा नहीं रहेंगी। आपका पाप मैं लेने के लिए तैयार हूँ। बस अपना गुप्त रहस्य मुझे बतलाइये। सोच देखिए, एक आदमी की सुख-शान्ति आप पर निर्भर करती है। केवल मैं ही नहीं, मेरे पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र आपकी स्मृति को श्रद्धांजलियाँ अर्पित करेंगे, पवित्र समझ कर पूजा करेंगे…।"

उत्तर में वृद्धा एक भी शब्द नहीं बोलीं।

हेरमन उठ खड़ा हुआ।

"डाइन बुढ़िया!"—वह दाँत किटकिटा कर बोला, "तो मैं तुम्हें बतलाने के लिए वाध्य करूँगा…" इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाली। पिस्तौल देखकर काउन्टेस दूसरी बार भीषण उत्तेजित दिखाई पड़ीं। उन्होंने सिर हिलाकर हाथ उठाया, मानो गोली से अपने को बचाना चाहती हैं…फिर पीछे की ओर लुढ़क गईं…. और बिलकुल निस्पन्द हो गईं।

हेरमन उनका हाथ पकड़ कर बोला, "नादानी छोड़िए, अन्तिम बार आप से प्रश्न करता हूँ, मुझे तीनों ताश आप बतलाना चाहती हैं या नहीं? हाँ या नहीं?"

काउन्टेस निरुत्तर थीं। हेरमन ने देखा, वे मर गई हैं।

चार

७ मई, १८...

"—नीतिहीन और धर्महीन?"

—पत्रावली

तब भी बॉलनाच की पोशाक पहिने ही गहरी चिन्तामग्न हालत में लिज़ावेता इवानोव्ना अपने कमरे में बैठी हुई थी। घर लौटते ही उसने उनींदी परिचारिका को छुट्टी दे दी, इस लड़की ने अनिच्छा के बावजूद उसकी सहायता करनी चाही थी। लिज़ावेता ने कहा कि वह खुद कपड़े बदलेगी और काँपती हुई अपने कमरे में चली गई। उसे आशा थी कि वहाँ हेरमन दिखाई पड़ेगा मगर इच्छा थी कि उसे देखना न पड़े। एक ही नज़र में वह जान गई कि हेरमन वहाँ नहीं है और जो बाधा उन दोनों के मिलने में रुकावट बनी थी उसके लिए भगवान को धन्यवाद दिया। बिना कपड़े बदले ही वह बैठी रही और जो घटनाएँ इतने थोड़े समय में इतनी दूर खींच लाई हैं उन्हीं घटनाओं की बात सोचने लगी। खिड़की से पहली बार देखे अभी तीन हफ्ते भी नहीं हुए और इसी बीच लिज़ा ने उससे पत्र-व्यवहार किया है और इसी बीच हेरमन ने उससे रात में मिलने की माँग हासिल की है। लिज़ा उसका नाम जानती थी क्योंकि कई पत्रों के नीचे उसका नाम था, आज शाम तक लिज़ा ने कभी उससे बातें नहीं की थीं, कभी उसकी बातें कानों से नहीं सुनी थीं, उसके बारे में भी कभी नहीं सुना था...आश्चर्य की बात है! उसी दिन शाम को बॉलनाच की मजलिस में युवती प्रिन्सेस पालिना से नाराज़ होकर तोमूस्की ने उदासीनता

का मान करके बदला लेने की ठानी थी, क्योंकि पालिना और दिनों की तरह उसे छोड़कर दूसरे आदमी से प्रेमाभिनय कर रही थी। तोमस्की लिज़ावेता इवानोव्ना को बुलाकर उसके संग 'माज़ूरका' नाच नाचने लगा। नाच के वक्त वह हमेशा इञ्जीनियर अफसरों के प्रति लिज़ा के आकर्षण को लेकर मज़ाक करता रहा। उसने बता देना चाहा कि लिज़ा जितना जानने का संदेह कर सकती है, वह उससे अधिक जानता है, और उसके कुछ मज़ाक ऐसे निशाने पर बैठे थे कि लिज़ावेता इवानोव्ना को लगा कि उसकी गुप्त बातें वह जानता है।

हँसते हुए लिज़ा ने प्रश्न किया, "ये बातें किसने सुनी?"

"आपके परिचित व्यक्ति के मित्र से, वह बड़ा अच्छा आदमी है।"

"यह भला आदमी कौन है?"

"उसका नाम हेरमन है।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन उसके हाथ-पैर बरफ की तरह ठंडे पड़ गये...

तोमस्की कहता गया, "यह हेरमन सचमुच ही रोमान्टिक प्रकृति का आदमी है। बग़ल से देखने से उसका चेहरा नेपोलियन जैसा लगता है और उसका दिल शैतान जैसा है। मुझे लगता है कि उसके विवेक में कम से कम तीन पाप अंकित हैं। आपका चेहरा इतना पीला क्यों पड़ गया है?"

मेरे सिर में दर्द है। आपको—हाँ क्या उसका नाम है—हेरमन ने क्या कहा है?"

"हेरमन अपने मित्रा से बहुत नाराज़ है। वह कहता है कि, उसकी जगह पर वह होता तो बिलकुल दूसरी तरह से चलता...लेकिन मुझे लगता है कि स्वयं हेरमन की आप पर नज़र है क्योंकि वह अपने मित्र के प्रेमोद्गारों को बड़े ध्यान से सुनता है।"

"मगर उन्होंने मुझे देखा कहाँ?"

"शायद गिरजे में या टहलते समय। भगवान जाने कहाँ! शायद आपके कमरे ही में जब आप सो रहे थे। वह न कर सके ऐसी..."

"विस्मृति या खेद * !" इस प्रश्न को ज़बान पर लिये तीन महिलाओं के आगे बढ़ आने से बातचीत—जिसने अब लिज़ावेता इवानोव्ना को बेचैन मगर कौतूहलमय बना दिया था—यहीं रुक गयी।

तोमूस्की ने जिस महिला को चुना वह स्वयं प्रिन्सेस पालीन थीं। उसने नाच के चक्करों और उसकी कुर्सी के सामने से होकर अतिरिक्त वृत्ताकार में घूमकर जाते समय तोमूस्की से समझौता कर लिया था। अपनी जगह लौट आने पर तोमूस्की को हेरमन या लिज़ावेता इवानोव्ना की याद नहीं आई। लिज़ावेता इवानोव्ना की बड़ी इच्छा थी कि बातचीत के सिलसिले को नये सिरे से शुरू करे, लेकिन 'माज़ुरका' समाप्त हो गया और थोड़ी ही देर में काउन्टेस ने बॉलनाच की मजलिस से विदा ली।

तोमूस्की की बातें 'माज़ुरका' नाच के प्रलाप के सिवा और कुछ नहीं हैं, लेकिन वे तरुणी स्वप्नचारिणी के हृदय में घर कर गईं। तोमूस्की द्वारा वर्णित मनुष्य से लिज़ावेता की मानसमूर्ति का सादृश्य बहुत अधिक था और बिलकुल हाल के उपन्यासों की बदौलत इस चरित्र से उसका पहिले ही परिचय हुआ है। इसीलिये इस चरित्र ने उसे शंकित और उसकी कल्पना को आच्छन्न कर लिया। खुले हाथों को एक दूसरे पर रख, फूल से सजाये सिर को खुली छाती पर झुकाये बैठी रही... अचानक दरवाज़ा खुल गया, हेरमन ने प्रवेश किया। लिज़ावेता काँप उठी।

"आप कहाँ थे?"—डरी हुई दबी ज़बान में लिज़ावेता ने पूछा।

"वृद्धा काउन्टेस के कमरे में, मैं अभी वहीं से आ रहा हूँ। काउन्टेस की मृत्यु हो गई है।"

"हैं! आप कह क्या रहे हैं?"

"लगता है, मैं ही उनकी मृत्यु का कारण हूँ।"—हेरमन बोला।

लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी ओर देखा, तोमूस्की की बातें उसके हृदय में झंकृत हो उठीं :

* "विस्मृति या खेद!"—कद्रिल नाच के समय पुरुष को नाच में हिस्सा लेनेवाली महिलाओं में से अपनी संगिनी चुन लेनी पड़ती है। संगिनी चुनने का काम इशारों से होता है। "विस्मृति या खेद" भी उसी तरह की सांकेतिक भाषा है।—सम्पादक

"इस आदमी के दिल में कम से कम तीन शैतानियाँ हैं।" खिड़की पर उसके पास बैठ हेरमन ने सारी बातें कह सुनाईं।

आतंक से अभिभूत होकर लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी सारी बातें सुनीं। तो यह भाव विह्वल पत्र, यह साग्रह अनुरोध, यह दुस्साहस भरा अटल अध्यवसाय, यह सब तो प्रेम नहीं है! तो उसे हृदय से केवल धन की ही चाह रही है! लिज़ावेता इवानोव्ना हेरमन की कामना को सार्थक नहीं कर सकी, उसे सुखी नहीं कर सकी? तो अभागी पालिता कन्या अपनी हितैषिनी के हत्यारे डाकू की अँधा मददगार के सिवा कुछ नहीं है! विलम्बित पश्चाताप की घोर पीड़ा से लिज़ावेता फूट फूट कर रोने लगी। हेरमन चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। उसका हृदय भी व्यथित हुआ था, लेकिन अभागी के आँसू, उसकी पीड़ा का अपूर्व सौन्दर्य किसी भी बात ने हेरमन के निष्ठुर हृदय में आलोड़न पैदा नहीं किया। मृत वृद्धा की बात सोचकर भी उसने विवेक के दंशन का अनुभव नहीं किया। उसे सिर्फ़ एक ही बात का दुख था कि जिससे उसने धनी होने की सोची थी वह गुप्त रहस्य सदा के लिए खो गया।

"आप राक्षस हैं।" अन्त में लिज़ावेता इवानोव्ना बोल उठी।

"मैंने उनकी मृत्यु नहीं चाही थी। मेरी पिस्तौल में गोली नहीं थी।"

दोनों चुप रहे।

पौ फट रही थी। मोमबत्ती ख़तम हो चली थी, लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसे बुझा दिया। फीकी रोशनी कमरे में फैल गई। दोनों गीली आँखों को पोंछकर उसने हेरमन की ओर देखा, हेरमन दोनों हाथों को सीने पर बाँधे भौंहें तरेरे खिड़की पर बैठा हुआ था। इस हालत में उसे देखकर नेपोलियन की तस्वीर याद आ रही थी। इस सादृश्य ने लिज़ावेता इवानोव्ना को भी विस्मित कर दिया।

"आप घर से कैसे निकलेंगे?"—अन्त में लिज़ावेता इवानोव्ना ने प्रश्न किया। मैंने आपको गुप्त ज़ीने से ले जाने की बात सोची थी लेकिन इसमें सोने के कमरे के बग़ल से होकर जाना पड़ता है। मुझे डर लगता है।"

"यह गुप्त ज़ीना कैसे मिलेगा बता दीजिये, मैं खुद ही चला जाऊँगा।"

लिज़ावेता इवानोव्ना उठ खड़ी हुई। दराज़ से एक चाभी निकाल हेरमन के हाथ में देकर उसे रास्ता अच्छी तरह समझा दिया। हेरमन लिज़ावेता के बर्फ जैसे ठंडे सुन्न हाथ को दबा उसके झुके हुए सिर को चूमकर बाहर चला गया।

चक्करदार ज़ीने से नीचे उतरकर वह फिर काउन्टेस के सोने के कमरे में घुसा। मरी वृद्धा कठुआई हुई बैठी थीं, उनके चेहरे पर गहरी शान्ति थी। हेरमन उनके सामने खड़ा बहुत देर तक देखता रहा, मानो इस भीषण घटना की सच्चाई के बारे में निश्चिन्त होना चाहता है। अंत में पढ़ने के कमरे में घुस दीवाल पकड़ कर दरवाज़ा ढूँढ़ निकाला और एक विचित्र अनुभूति की उत्तेजना से अँधेरे ज़ीने से उतरने लगा। उसे लगा, शायद साठ साल पहिले ज़री का काम किया हुआ 'काफतान' पहिने बगुले की तरह * बाल सँवारे, तिकोनी टोपी छाती से दबाये ठीक इसी समय इस ज़ीने से इसी सोने के कमरे में कोई तरुण प्रेमिक घुसा था; उसके कब्र में गये बहुत दिन हो गये। आज उसकी वृद्धा प्रेयसी के हृदय की धड़कन बन्द हो गई है···

ज़ीने के नीचे हेरमन को एक दरवाज़ा दिखाई पड़ा। उसी चाभी से दरवाज़ा खोलकर वह एक लम्बे बरामदे में आ पहुँचा। वह बरामदा उसे सड़क पर ले आया।

* a. l. oiseau royal (फ्रांसीसी) बगुले की तरह। —सम्पादक

पाँच

> उसी रात को मरी वृद्धा बरोनेस फन व...
> मेरे सामने आविर्भूत हुईं। उनका आपाद-
> मस्तक सफ़ेद पोशाक से ढका था वे मुझसे
> बोलीं, "नमस्कार, उपदेशक महोदय।"
>
> —स्वेदनबर्ग

उस सत्यानाशी रात के तीन दिन बाद सवेरे नौ बजे जिस···गिरजे के प्रांगण में दिवंगत काउन्टेस का शव दफ़नाया जानेवाला था, हेरमन वहाँ हाज़िर हुआ। पश्चाताप न होने पर भी विवेक के कंठस्वर को वह दबा कर नहीं रख सका। विवेक बुलंदी के साथ उसके कानों में कहने लगा, "तुम्हीं वृद्धा के हत्यारे हो।" सच्ची धर्मनिष्ठा न होने पर भी उसमें अंध-विश्वास बहुत था। उसे लगा था कि मृत काउन्टेस उसके जीवन पर अशुभ प्रभाव डाल सकती हैं। इसलिये काउन्टेस से क्षमा माँगने के वास्ते उसने उनके श्राद्ध के समय उपस्थित रहने का निश्चय किया था।

गिरजा लोगों से भरा हुआ था। हेरमन ज़बर्दस्ती भीड़ ठेलकर आगे बढ़ा। मखमल के चंदोआ के नीचे कीमती काटाफल्क* पर शवाधार रखा हुआ था। शवाधार में शायित शव के दोनों हाथ वक्षस्थल पर एक दूसरे पर रखे हुए थे, सिर पर जाली की टोपी, बदन पर साटिन का गाऊन पहिने थीं। चारों ओर उनके घर के लोग घेरकर खड़े थे। काला काफतान पहिने कंधे पर चपरास रखे हाथ में मोमबत्तियाँ लिए नौकर और सम्बन्धी—नाती-नतिनियाँ और उनके लड़के-लड़कियाँ गंभीर शोक में डूबे खड़े थे। कोई भी रो नहीं रहा था। आँखों के आँसू दिखावटी** होते काउन्टेस इतनी वृद्धा हो गई थीं कि उनकी मृत्यु से कोई अभिभूत नहीं हुआ,

* काटाफल्क—शवाधार रखने का मंच। सं०

** une affectation - (फ्रांसीसी)-दिखावटी। - सं०

क्योंकि सम्बन्धी समझते थे कि मौत का समय हो जाने पर भी वे ज़िंदा थीं। तरुण आर्च-विशप ने श्राद्ध के उपलक्ष में प्रवचन किया। सरल मार्मिक भाषा में सत्यवादिनी की शान्त मृत्यु, ईसाई सुलभ जीवन के अवसान के लिए अपनी लम्बी आयु भर शांतिपूर्वक तैयारी की तपस्या का वर्णन किया। वे बोले : "धर्मचिन्ता और आधी रात को परम प्रियतम † के आगमन की प्रतीक्षा में जागती हुई इस नारी को मृत्युदूत आकर ले गये हैं।" शोक गम्भीर वातावरण में अन्तिम संस्कार समाप्त हुआ। सबसे पहले नातेदार शव से अन्तिम विदा लेने गये। इसके बाद काउन्टेस लम्बे अरसे तक जिनके कलरवमय आनन्द उत्सवों में हिस्सा लेती आई थीं, वे अनगिनत मेहमान उन्हें प्रणाम करने गये। इसके बाद नौकर-चाकर गये। सबसे आखिर में एक बड़ी उम्रवाली दासी बढ़ गई। उम्र में काउन्टेस के समवयस्क थी। दो तरुणियाँ उसका हाथ पकड़ कर ले आई। धरती पर सिर टिकाने की शक्ति उसमें नहीं थी, मालकिन काउन्टेस के बर्फ जैसे ठंडे हाथ को चूमकर उसने कुछ आँसू बहाये। इस वृद्धा के बाद ही हेरमन ने शवाधार के पास जाने का निश्चय किया। धरती पर सिर नवा कुछ मिनटों तक वह चीड़ की टहनियाँ बिछी ठंडी फर्श पर लेटा रहा। अन्त में वह उठा, उसका चेहरा शव के चेहरे की तरह ही पीला हो गया था। शवाधार की सीढ़ी पर चढ़कर उसने सिर नवाया...इसी समय उसे लगा जैसे मरी बुढ़िया एक आँख सिकोड़ कर व्यंगसे उसकी ओर देख रही है। हेरमन जल्दी में पीछे हटा तो फिसलकर धरती पर गिर पड़ा। लोगों ने उसे उठाया। ठीक इसी समय लिज़ावेता इवानोव्ना को बेहोशी की हालत में पकड़ कर बरामदे में ले जाया गया। इस घटना से कई मिनटों के लिये अन्तिम संस्कार के विषादमय कार्यक्रम में बाधा पड़ गई। आगन्तुकों में दबी काना-फूसी की आवाज़ सुनाई पड़ी, मृत वृद्धा के एक निकट सम्बन्धी दुबले-पतले कामेर्गेर †† ने बग़ल के एक अँगरेज सज्जन के कान में कहा कि तरुण अफसर काउन्टेस का वर्णसंकर है। इस बात को सुनकर अँगरेज सज्जन ने रुखाई से कहा : "अच्छा !"

† ईसा मसीह।

†† कामेर्गेर—सेना का एक छोटा अफसर।—सं०

हेरमन ने सारा दिन एक अस्वाभाविक मानसिक अवस्था में बिताया। एक सुनसान होटल में दिन का खाना खाकर मानसिक उत्तेजना को दबाने की आशा में अपना नियम तोड़कर खूब शराब पी। लेकिन शराब ने उसकी कल्पना को और भी प्रबल कर दिया। घर लौट कपड़े उतारे बिना ही वह बिस्तर पर लेट गहरी नींद में सो गया।

जब नींद टूटी तो रात हो गई थी। चाँदनी ने उसके कमरे को आलोकित कर दिया था। उसने घड़ी की ओर देखा, रात के पौने तीन बजे थे। उसे फिर नींद नहीं आई। बिस्तर पर बैठ वह वृद्धा काउन्टेस को दफ़नाने की बातें सोचने लगा।

इसी समय किसी ने सड़क की ओर से खिड़की में झाँका और फिर उसी क्षण हट गया। हेरमन ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। मिनट भर बाद उसने बाहर के कमरे के खुलने की आवाज़ सुनी। हेरमन ने सोचा उसका नौकर सदा की भाँति मतवाला होकर रात को टहलकर लौटा है। लेकिन उसके कानों में अपरिचित पैरों की आवाज़ पड़ी, जैसे कोई धीरे-धीरे चप्पल चटकाता हुआ आ रहा है। दरवाज़ा खुल गया, सफ़ेद पोशाक से ढकी एक महिला कमरे में आ घुसीं। हेरमन ने उन्हें वृद्धा धाय समझकर अचरज से सोचा कि इस समय वे यहाँ क्यों आयेंगी? लेकिन श्वेतवसना नारी फुर्ती से आगे बढ़ अचानक उसके सामने खड़ी हो गयी। हेरमन ने देखा, काउन्टेस हैं!

"मैं अपनी इच्छा के प्रतिकूल तुम्हारे यहाँ आई हूँ,"—दृढ़ स्वर में काउन्टेस बोलीं।—"तुम्हारी प्रार्थना पूरी करने का मुझे आदेश मिला है। तिग्गी, सत्ता और एक्का एक-एक करके तुम्हें जिता देंगे, लेकिन चौबीस घंटे के अन्दर एक से ज़्यादा ताश पर बाजी नहीं लगा सकोगे और इसके बाद ज़िन्दगी भर ताश नहीं खेलोगे। अगर तुम मेरी पालिता लिज़ावेता इवानोव्ना से ब्याह करो तो अपनी मृत्यु के लिए तुम्हें क्षमा कर सकती हूँ···"इतना कह धीरे-धीरे मुड़कर चप्पल चटकाती हुई दरवाज़े की ओर जाकर गायब हो गयी, हेरमन के कानों में दरवाज़ा बन्द करने की आवाज़ पड़ी। उसने देखा, मानो किसी ने फिर उसकी खिड़की में झाँका।

बहुत देर के बाद हेरमन को होश आया। वह और एक कमरे

में गया। उसका नौकर फ़र्श पर पड़ा सो रहा था, हेरमन ने बड़ी मुश्किल से उसे जगाया। सदा की तरह नौकर मतवाला था, उससे कुछ मालूम करना असम्भव था। बाहर का दरवाज़ा बन्द था। हेरमन अपने कमरे में लौट आया।

बत्ती जलाकर उसने जो कुछ देखा था लिख डाला।

छः

"ठहर!"

"आपको मुझे 'ठहर' कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

"मान्यवर, मैंने कहा है, 'ठहरिये'!"

इस प्रकार भौतिक जगत में दो वस्तुएँ एक जगह नहीं रह सकती हैं, भाव जगत में भी उसी प्रकार दो स्थिर विचार एक ही साथ नहीं रह सकते। थोड़े ही समय में हेरमन की कल्पना से वृद्धा की मूर्ति मिट गई और सिर्फ़ तीन ताश रह गये—तिग्गी, सत्ता, एक्का।

तिग्गी, सत्ता, और एक्का उसकी कल्पना से किसी तरह दूर नहीं हुए, हमेशा उसके होठों पर बने रहे। वह किसी तरुणी के देखने पर कहता: "कैसा सुन्दर बदन है···ठीक मानो पान की तिग्गी है।" उससे अगर कोई पूछता, "कितने बजे?" वह उत्तर देता, "सात बजकर पाँच।" किसी मोटे आदमी को देखते ही उसे एक्के की याद आ जाती। सपने में भी तिग्गी सत्ता और एक्का उसका साथ न छोड़ते, नाना प्रकार के रूप धरकर उसके सामने आते। तिग्गी ग्रान्डीफ्लोरा की शकल में उसके सामने खिल जाती, सत्ता गथिक फाटक की भाँति उसके सामने आ खड़ा होता और एक्का विशाल मकड़े का रूप लेकर आता। उसके सारे विचार इकट्ठा होकर एक विचार बन गये थे: जिस गुप्त रहस्य को इतना मूल्य देकर प्राप्त किया है उसे काम में लाना होगा। नौकरी छोड़कर वह देशाटन की बात सोचने लगा। एकबार इच्छा हुई, कि पेरिस के खुले फड़ में मोहिनी भाग्य-लक्ष्मी से ज़बर्दस्ती धन-दौलत प्राप्त करेगा। लेकिन एक घटना ने उसे इन गड़बड़ियों से बचा लिया।

मास्को में विख्यात चेकालिन्स्की के नेतृत्व में धनी जुआड़ियों का एक फड़ संगठित हो गया था, उन्होंने अपना सारा जीवन ताश खेलने में बिता दिया था। दाँव जीतने पर हुंडी ले लेते थे और हारने पर नकद रुपये देते थे, इस तरह एक समय उन्होंने लाखों रुपये कमाये थे। लम्बे अनुभव के कारण उन्होंने मित्रों का विश्वास प्राप्त किया था। उनके घर का सब के लिए खुला द्वार, नामी बावर्ची, आदर-सत्कार की व्यवस्था, आनन्द के वातावरण आदि की जनता ने प्रशंसा की है।

चेकालिन्स्की पितर्सबुर्ग आये। ताश के आकर्षण से तरुण बॉलनाच की बात भूल गये, प्रेमाभिनय से फाँरावो के प्रलोभन को ऊँचा आसन देकर तरुण उनके यहाँ इकट्ठा होने लगे। नारूमोव उनके पास हेरमन को ले आया।

वे कई सजे-सजाये कमरे पार हुये। हर कमरे में अनुगत खानसामों का झुण्ड था। कुछ जेनरल और प्रिवी कौंसिलर बैठे ह्विस्ट खेल रहे थे, तरुण बैठे हुए थे, मखमल के दीवान पर लोट पोट रहे थे, आइसक्रीम खा और पाइप पी रहे थे। ड्राइंगरूम में एक लम्बी मेज़ के किनारे कोई बोस जुआड़ी भीड़ किये हुये थे, गृहस्वामी बैंकर बने मेज़ पर बैठे हुये थे। उनकी अवस्था करीब साठ की होगी, चेहरा संभ्रान्त था। रूपहले सफ़ेद बालों से सिर भरा था; भरे हुये ज़िन्दादिल चेहरे से मुस्कराहट टपक रही थी। दोनों आँखें रोशनी बिखेर रही थीं और वे आँखें निरन्तर स्मितहास्य से चंचल हो रही थीं। नारुमोव ने हेरमन का उनसे परिचय करा दिया। चेकालिन्स्की ने मित्र की तरह उनसे हाथ मिलाकर अनुरोध किया कि वह उन्हें पराया समझकर तक़ल्लुफ़ न करें। इसके बाद वे फिर अपने काम में लग गये।

दाँव बहुत देर तक चलता रहा। टेबिल के ऊपर तीस से भी ज़्यादा ताश थे। एक-एक चाल के बाद खिलाड़ियों को समेटने का कुछ मौका देने के लिये चेकालिन्स्की थोड़ा रुककर हारने का हिसाब लिख लेते थे, वे कितना चाहते हैं विनीतभाव से उसे सुनते थे, किसी असतर्क हाथ में पड़कर ताश के कोन मुड़ जाने पर और भी विनीतभाव से उसे ठीक कर देते थे। अंत में दाँव खतम हुआ। चेकालिन्स्की ताश फेंटकर और एक बाजी के लिए तैयार हुये।

जो मोटे सज्जन पहलेवाला दाँव हार गये थे उनके पीछे से हाथ बढ़ा-कर हेरमन ने पूछाः "क्या एक दाँव लगा सकता हूँ,"

चेकालिन्स्की ने चुपचाप ज़रा मुस्करा विनयपूर्वक सम्मति सूचक सिर हिलाया। बहुत दिनों का संयम तोड़ने जा रहा था इसलिये नारूमोव ने हँस-कर हेरमन को अभिनन्दित किया और सार्थक श्रीगणेश करने के लिये शुभेच्छा प्रकट की।

खड़िया से ताश की पीठ पर एक बड़ी रकम लिखकर हेरमन बोला: "यह लगाया!"

"कितना?"-भौंहें सिकोड़ कर बैंकर ने प्रश्न किया,-"माफ़ कीजियेगा, मैं आँखों से अच्छा नहीं देखता हूँ।"

"सैंतालीस हज़ार"—हेरमन बोला।

इस बात को सुनकर सभी सिर क्षणभर के लिये इधर मुड़े, सभी आँखें हेरमन पर टिक गईं। नारूमोव ने सोचा: "वह पागल हो गया है।"

पहिले ही की तरह हँसकर चेकालिन्स्की बोले: "माफ़ कीजियेगा, आप से अर्ज़ कर दूँ कि आपका दाँव बहुत बड़ा है, यहाँ किसी ने एक दाँव में दो सौ पचहत्तर रूबल से अधिक नहीं लगाया है।"

रूखे स्वर में हेरमन बोला, "इसका मतलब? आप मेरे इस ताश को खेलेंगे या नहीं?"

चेकालिन्स्की ने पहिले ही की तरह विनीतभाव से सम्मतिसूचक सिर हिलाया। वे बोले:

"मैं आपसे केवल कह देना चाहता हूँ कि, मित्रों का विश्वासपात्र होने के कारण नक़द रुपये के बग़ैर मैं दाँव नहीं खेल सकता। लेकिन आपकी बात ही मेरे लिये काफी है, मगर खेल के नियम का पालन करने और हिसाब-किताब के लिये आपसे रुपये निकाल कर ताश पर रखने का अनुरोध करता हूँ।"

हेरमन ने जेब से एक बैंक नोट निकाल कर चेकालिन्स्की के हाथों में दिया। चेकालिन्स्की ने उसे एक बार देखकर ताश पर रख दिया।

उन्होंने ताश बाँटना शुरू कर दिया। दाहिनी ओर गिरा नहला और बाईं ओर तिग्गी।

"मेरा ताश जीत गया!"—अपना ताश दिखाकर हेरमन बोल उठा।

जुआड़ियों में खलबली दिखाई पड़ी। चेकालिन्स्की ने भौंहें सिकोड़ीं, लेकिन उसी क्षण उनके चेहरे पर हँसी लौट आई। उन्होंने हेरमन से पूछा:

"आप क्या रुपये इसी वक्त लेंगे?"

"अगर कृपा कर दें।"

चेकालिन्स्की ने जेब से कुछ बैंक नोट निकाल कर उसी दम गिन दिये। हेरमन अपने रुपये उठा मेज़ छोड़कर चला गया। नारूमोव मामले को ठीक ठीक समझ नहीं सका। हेरमन एक गिलास लेमनेड पीकर घर चला गया।

अगले दिन शाम को वह फिर चेकालिन्स्की के यहाँ आया। गृह-स्वामी ने खेल शुरू किया। हेरमन मेज़ की ओर बढ़ गया। जुआड़ियों ने फौरन उसके लिये जगह दे दी। चेकालिन्स्की ने आदरपूर्वक नमस्कार किया।

हेरमन ने अगली बाजी की प्रतीक्षा की और इस दाँव पर बाजी लगा जेब से सैंतालीस हज़ार रुपये निकाल पहिले दिन के जीते रुपये मिलाकर ताश पर रख दिये।

चेकालिन्स्की ने खेल शुरू किया। दाहिनी ओर गुलाम गिरा और बायीं ओर सत्ता। हेरमन ने अपना सत्ता दिखाया।

सभी में एक हल्की गुनगुनाहट सुनाई पड़ी। चेकालिन्स्की स्पष्ट ही विचलित हो गये थे। उन्होंने चौरानबे हजार रुपये गिनकर हेरमन को दिये। हेरमन धीर शान्ति से रुपये उठा उसी क्षण वहाँ से चला गया।

अगली शाम को हेरमन फिर मेज़ पर हाज़िर हुआ। सभी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जेनरल और प्रिवी कौंसिलर लोगों ने इस अस्वाभाविक खेल को देखने के लिये अपना ह्विस्ट का खेल बन्द रखा था। तरुण अफसर दीवान से उछल पड़े। सभी खानसामे ड्राइङ्गरूम में जमा हो गये। सभी हेरमन को घेरकर खड़े हो गये। दूसरे जुआड़ियों ने अपनी बाजी बन्द रखी थी। बाजी किस तरह समाप्त होती है इसे देखने के लिये सभी बेचैन थे। अकेले चेकालिन्स्की के साथ खेलने के लिये हेरमन मेज़ की बग़ल में खड़ा तैयार हो रहा था। चेकालिन्स्की का चेहरा मुरझा गया था फिर भी उस पर मुस्कान थी। दोनों ने ताश की दो गड्डियाँ खोलीं। चेकालिन्स्की ने

फेंटा। हेरमन ने अपना ताश उठा मेज़ पर रख बैंक नोटों के ढेर से उसे ढक दिया। यह मानों द्वन्द्व युद्ध था। चारों ओर गहरी खामोशी थी।

चेकालिनूस्की ने खेल शुरू किया। उनका हाथ काँप रहा था। दाहिनी ओर बीबी बायीं ओर एक्का।

अपना ताश दिखाकर हेरमन बोला: "एक्का जीता।"

मधुर स्वर में चेकालिनूस्की बोले: "आपकी बेगम हार गयी है।"

हेरमन थरथर काँप उठा। सचमुच ही एक्के के बदले उसके हाथ में हुकुम की बेगम थी। अपनी आँखों पर उसे विश्वास नहीं हुआ। इस ताश को उसने कैसे उठाया, यह उसकी समझ में नहीं आया।

उसी क्षण उसे लगा मानो हुकुम की बेगम आँखें सिकोड़ कर हँस पड़ी। अस्वाभाविक सादृश्य से वह हैरान रह गया...डर से चिल्ला उठा—

"बुढ़िया !"

जीती रकम को चेकालिनूस्की ने अपनी ओर समेट लिया। हेरमन सुन्न खड़ा रहा। अन्त में जब वह चला गया तो सभी ऊँची आवाज़ में बातें करने लगे। जुआड़ी बोले: "क्या खूब चाल चली।" चेकालिनूस्की ने फिर ताश फेंटा, सदा की भाँति फिर खेल शुरू हुआ।

उपसंहार

हेरमन पागल हो गया है। वह ओबूखोब अस्पताल के १७ नं० कमरे में रहता है। किसी बात का जवाब नहीं देता। बड़ी तेज़ी से बड़बड़ाता है: "तिग्गी, सत्ता, एक्का।"

एक अति मधुर स्वभाव के तरुण सज्जन से लिज़ावेता इवानोव्ना का ब्याह हो गया है। वह कहीं नौकरी करते हैं। हालत काफ़ी अच्छी है। वे वृद्धा काउन्टेस के पुराने दीवान के पुत्र हैं। अब लिज़ावेता इवानोव्ना एक सम्बन्धी की लड़की को पाल रही है।

तोमूस्की रिसाला पल्टन में कप्तान के पद पर है। ज़ल्द ही प्रिंसेस पालिन से उसका ब्याह होनेवाला है।